

नाम : सुजीत कुमार झा

पिता : श्री सुखेन्द्र झा

माता : जयमंगला देवी

जन्म : वि. सं. २०३३ बैशाख ११
लोहना बभनगामा–२, धनुषा

स्थायी ठेगाना : सरस्वती नगर जनकपुरधाम–४

Email : sujitjha100.80@gmail.com

अध्ययन : एमए (मैथिली)
(समाजशास्त्र दोसर वर्ष)

संलग्नता : समाचार प्रमुख, रेडियो मिथिला १००.८ मेगाहर्ज
सम्पादक, मिथिला डटकम दैनिक
समाचारदाता, एभिन्यूज टेलिभिजन काठमाण्डू

पूर्व संलग्नता : च्यानल नेपाल टिभी,स्पेशटाइम दैनिक,राष्ट्रिय समाचार समिति, नेपाल समाचारपत्र दैनिक, लोकपत्र दैनिक, जनकपुर टुडे दैनिक, विश्वदीप साप्ताहिक ।

आवद्धता : केन्द्रीय पार्षद, नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषा

सम्मान पदक : एभिन्यूज इमान्दारिता सम्मान (२०६६)
रेडियो मिथिला सम्मान (२०६५)

अप्रकाशित कृति : खजुरी बाली(कथा संग्रह)
रिर्पोटर डायरी (संस्मरण संग्रह)
जनकपुरक ५१ सफल व्यक्ति (व्यक्तित्व परिचय)
भगवती राजदेवी : एक खोज (शोध)

ISBN : 976-9937-2-3488-7

सुजीत कुमार झा

चिड़ै

(मैथिली कथा संग्रह)

चिड़ै

(कथा संग्रह)



सुजीत कुमार झा

चिड़ै

(कथा संग्रह)

प्रकाशक

श्री रामानन्द युवा क्लव

जनकपुरधाम

चड़ै
(मैथिली कथा संग्रह)

लेखक : सुजीत कुमार झा

संस्करण : पहिल
बिक्रम संवत : २०६८
प्रति : १०००

मोल : साधारण २००।– टका
: संस्थागत ३००।- टका
प्रकाशक : श्री रामानन्द युवा क्लव,जनकपुरधाम
आवरण सज्जा : कैलास दास

क्ष्क्नल ऱ ढठडा़ढढघठा़द्दा़घद्धडडा़ठ

मुद्रक :

ऋग़ जक्ष्म्ब्क्ष
फतयचष्भक अयर्ीभिअतष्यल
दथ क्ष्बवभभव एकवच व्जव

समर्पण

हमरा जन्म देनिहार माय

जयमंगला देवी

आ पिता सुखेन्द्र झाकेँ

चरण कमलमे ।

सुजीत कुमार झा

प्रकाशकीय

रामानन्द युवा क्लबक साहित्य प्रकाशन यात्रा रुकल नहि अछि। बीचमे एक वर्ष क्लब सँ पुस्तक प्रकाशन नहि भेल। अहिबातक दुख हमरोसभकेँ अछि। हमसभ पुस्तक प्रकाशन दिस इच्छुक नहि छलहुँ से नहि मुदा बढियाँ पुस्तकक प्रस्ताव नहि आबि रहल छल, ओना हमसभ प्रतिक्षारत छलहुँ से विश्वास दियाबय चाहैत छी। एकर उदाहरण ई पुस्तक अछि।

जखने सुजीत कुमार झा 'चिडै' कथा संग्रहक प्रकाशनक विषयमे कहलन्हि हमरा बड निक लागल आ हमसभ एकरा प्रकाशित करबाक निर्णय कऽ लेलहुँ। युवा पत्रकार सुजीत जी सेहो कथाक क्षेत्रमे कलम चलबैत आएल छथि से बुझल छल। हुनक ई कथा संग्रह देखलाक बाद लागल कि ओ लिखबे नहि करैत छथि , निक लिखैत छथि । ई संग्रह अपनहुँ सभकेँ बहुत निक लागत। अहि संग्रहक किछु कथा अहि सँ पूर्वे बेश चर्चित भऽ चुकल अछि।

ओहो चर्चा हमरा ई पुस्तक निकालयकेँ लेल प्रेरणा देलक ।

ई संग्रह प्रकाशनक लेल युवा पत्रकार सुजीत कुमार झा हमरा सभकेँ अवसर देलन्हि ताहिकेँ लेल हुनको प्रति आभार व्यक्त करैत छी ।

क्लब मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति आ खेलकुदक विकासक लेल निरन्तर काज करैत रहत ।

अन्तमे फेर सँ ई बचनबद्धता प्रकट करय चाहैत छी जे 'चिडै' पुस्तक हमरा सभक अन्तिम पुस्तक नहि अछि। हमसभ निरन्तर बढिया किताब सभ अपनेसभक आगा परसैत रहब ।

दिपेन्द्र ठाकुर
अध्यक्ष

श्री रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम

रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै'

चन्द्रेश

सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'चिड़ै' पढ़लहुँ। जुआनीक उन्मादमे भावुक रोमानीपनक गन्ध नेने कतिपय कथा आएल अछि। अल्हड़ जुआनी आ प्रेमक उन्मादमे लिखल गेल कथा अवस्से युवा मोनकें गुदगुदी लगबैत छुवैत अछि, तन-मनकें झंकृत करैत अछि। सहज सहानुभूतिमे उपजैत हृदयक टीस मोनमे उभरि अवैत अछि। एक दिस व्यथा-कथाक उपजामे टीसैत करुणा अछि तँ दोसर दिस पीड़ित ताप। खौंझाइत मोनक बौद्धिक चेतना जाग्रतावस्थामे अपन दम-खम रखैत अछि। मानवीय मूल्य बोधक प्रति कथाकार सतर्क, सचेढ ओ सम्वेदनशील छथि। निस्सन्देह कथाक दुआरि पर सुजीतकुमार झा क 'चिड़ै' कथा-संग्रहक स्वागत अछि।

स्वागत एहि द्वारे नहि जे ओ भावुक मोनक कथाकार छथि। ओ अवस्से भावुक मोनक कथाकार छथि। भावुकतामे प्रवहित होइत हिनक कथा आवेशी स्वर नेने अछि। मुदा, जतेक दूर धरि ओ भाव प्रवणतामे संवेदनशील मोनक संवेदनाकें छुवैत छथि से हमरा नीक लगैत अछि। संगहि, सरलता ओ सहजतामे वैचारिक भाव-भूमि पर उतरैत स्त्री-पुरुष दूनू वर्गक संकुचित दृष्टिकोणकें बेरबैत छथि से विशेष कऽ आह्लादित करैत अछि। भनहि हिनक अजोह मोनमे भोगवादी दृष्टिकोणक प्रति आक्रोशक ज्वारि किएक नें बेसिए छिटकैत होअय।

ओ लिखैत छथि सिखबाक चाही। अहिमे परिपक्वता चाहवे करी। जेना जेना लेखन-संसारमे ओ कलम चलओताह तेना-तेना शिल्प आ कथ्यमे तालमेल होयबे करत, ठोस वैचारिकतामे सूक्ष्मताक संगे नव दृष्टि प्रदान करबे करत। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा. धीरेन्द्र सँ प्रभावित भऽ नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य अवश्य भरखार भऽ रहल अछि। अहिमे निर्विवाद रुपे कथाक क्षेत्रमे सर्वश्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', डा. रेवती रमण लाल, डा. राजेन्द्र प्रसाद 'बिमल', अयोध्यानाथ चौधरी, भुवनेश्वर पाथेय आदि अपन औकादि देखा चुकल छथि। इ हम गछि ली जे डा. धीरेन्द्रक दू कोटिक रचना अछि। उत्तमकोटी आ निम्न कोटीक। ओ जँ निम्नकोटीक रचना करबो कएलन्हि तँ ओहनो रचना आइ रचनाकारक हेतु चुनौती थिक। डा धीरेन्द्रक रचना संसारकें कखनो अवडेरल नहि जा सकैत अछि। जेकी सुजीत कुमार झाक कथाकार विशेषतः प्रेम ओ काम वासना विषयक कथावस्तुकें आधार बनौलन्हि अछि से हिनक डा. धीरेन्द्र ओ हुनक परवर्ती कथाकार भ्रमर, विमल आ थोड़ अंशमे रेवती रमण लालक परम्परामे लऽ अवैत अछि। ओना सुजीत कुमार झा सँ पूर्वक पीढ़ीक कथाकार यथा सुरेन्द्र लाभ, श्यामसुन्दर कामति 'शशि' रमेश रञ्जन आदिक रचनात्मक धारा निर्विवाद रुपे डा. धीरेन्द्रक परम्परा सँ प्रभावित होइतो अछिए किछु हटि कऽ अपन विषय वस्तुकें प्रतिपादित करैत अछि जे भरिसक भुवनेश्वर पाथेयक परम्परामे कहि सकैत छी जे अनैत अछि। जेकी सुजीत कुमार झा संघर्षरत कथाकार छथि। तएँ हिनक ठोस आ सूक्ष्म दृष्टिक प्रतीक्षा अछि जे कोन धार लऽ

भविष्यमे अपनाकें प्रतिष्ठापित करताह। ओना परम्परा सँ उद्धृत भऽ आधुनिकताक संग नव दिशा दृष्टि सँ कऽ आयब अवश्य स्वागत योग्य थिक।

इ सत्य थिक जे मनुक्खक बाह्य रुप स्थूल होइत अछि। मात्र बाह्य चित्रण करब कोनो तेहन अर्थ नहि रखैत अछि। जखन बाह्य आ आन्तरिक दुनू मूलभूत तथ्य-सत्य मिज्झर होइत अछि वा मिझराइत तेना कऽ घुल-मिलि जाइत अछि अथवा एक दोसर सँ टकराइत अछि तँ दुनू स्थितिमे संघर्षजन्य उत्पन्न नव अर्थ फलित होयब रचनाकारक दक्षता ओ विशेषता बनैत अछि। तएँ स्थूल पक्षक संग आन्तरिकताक सम्मिश्रण होयब अनिवार्य थिक। आजुक मनुक्खक जीवन ततेक संश्लिष्ट भऽ आएल अछि जे जीवनक जटिलतामे ऊहा-पोह संघर्षक स्थिति बनले रहैत अछि। ई तिक्खपना समय ओ परिस्थितिगत दबावमे मानवीय चेतनाकें झंकृत कऽ युग परिवर्तनक अभास करबैत अछि। एहन डेराओन परिवेशमे रचनाक सृजना होएब अवस्ये चुनौती थिक।

पूँजीवादी आ समाजवादी व्यवस्थामे संघर्ष अदौसँ होइते आयल अछि। जेकी पूँजीवादी शोषक अपन नव-नव रुप ओ व्यवस्था लऽ नीजि स्वरुपमे क्रमिक परिवर्तन करैत आएल अछि तएँ शोषित वर्ग सेहो प्रतिरोधक मुद्दा अपनौने ओहि नव-नव कुचालिकें वा रचल गेल षडयन्त्रकें भण्डाफोड कऽ नष्ट-भ्रष्ट करबाक हेतु अपन तैयारी करिते रहैत अछि। इ सभटा मूल्यबोधक चुनौती थिक। जखन-कखनो कोनो प्रकार मुल्यबोधक ह्रास होयत तँ स्वभाविक थिक जे रचनात्मक कलम अपन औकादि देखयबे करत।

आजुक युगमे कथा बेस पढल जाइत अछि। कथा लिखब ततेक सहज ओ सरल नहि अछि। आर किछु नहि तँ कथाकारकें एतेक ध्यान रखैये पडैत अछि जे कथा मूल्यबोध बनय। मुदा, देखबाक थिक जे मूल्य सोझे कथ्य पर ने हावी भऽ जाय। तएँ परिवेश ओ वातावरणक माध्यमे कालगत चेतनाक संग जँ मूल्यबोध कथ्यमे रचि-पचि कऽ आबय तँ निश्चिते कथाक चमक किछु खास होयत अछि। एकर अर्थ ईहो नहि लेबाक अछि जे परिवेश ओ वातावरणक थोन्हि लगा कऽ तेनाकऽ बोझिल बनाओल जाय जे ओहि तरमे कथ्य दबि कऽ रहि जाय अर्थात खुजि ने पावय।

प्रेम जीवनक अहम हिस्सा थिक जकरा नकारब सरासर बेइमानी होयत। प्रेमक दंश ततेक मारुक होयत अछि जे आत्महत्या धरि करबाक लेल लोक उद्यत भऽ जाइत अछि, करितो अछि। अर्थात अहि दंशमे पीड़ित लोककें एको घोंट जलो पीबक सुअवसर नहि भेटैत अछि। कतिपय प्रेम परक कथा उदाहरण परक थिक। तएँ प्रेम अमर थिक। प्रेमक अनुभूति स्वतः होइत अछि। प्रेम ओ बासना दुनू दू वस्तु थिक, एक दोसर सँ अलगहे फराक। एहि बातकें सुजीत कुमार झाक कथाकार नीक जकाँ जनैत-बुझैत अछि। ओ 'चिडै' कथामे प्रेमक सार्थक अनुभूति करबैत अछि। एहिमे त्रिशंकु बनल 'मनोज' क चित्रण कऽ प्रेमक रुपकें बासना सँ फुटकाओल अछि। मोनकें बहटारबाक हेतु मोन मिलानी करब फरक बात थिक तएँ सिद्धान्तकें व्यावहारिकतामे उतारब दोसर बात। कारण, सामाजिक मर्यादा ओ व्यवस्थाक अंकुश लगले रहैत अछि। तएँ तऽ उषाक कामुकताकें अनदेख कऽ 'नलिनी' क मर्यादित छविमे अपनाकें समंजस्य स्थापित कऽ मनोजक व्यवहारिक वृद्धि जे अपन असली छवि प्रकट कयलक अछि से अवस्से उषा सन नारीक लेल सबक थिक। 'प्रियंका' मे दैहिक भोग आ नाम ओ यशक लेल 'प्रियंका'क मृग मरीचिकामे बौआइत - भटकैत रहब अवस्से नारीक चरित्रगत सामाजिक पतन थिक। 'बरखीक भोज' मे माधुरीक अपन पिता सदृश बुढकें खुआयब से पिताक बरखी पर आत्मतृप्ति मूलक थिक। 'बाबाजी' मे अपन माय-बापक जीवैतमे तिरस्कार आ मृत्योपरान्त बेटा-पुतहुक नोर चुआवय आम बात थिक। एकरे कथाकार आधार बना कऽ 'रुबी' अर्थात पोतीक सूक्ष्म दृष्टि ओ बुद्धिक माध्यमे अपन बातकें आगा रखलन्हि अछि। रुबी सभ किछु जनै बुझैत अछि तएँ बजैत अछि जे 'बेकारमे सभ गोटे अपन नोर बरवाद कऽ रहल अछि'। 'वंश' मे बेटीक महत्ता पर जोर

दऽ चरित्रगत संस्कार पर विशेष बल देलगेल अछि। एहिमे कथाकार ओहि बनल-बनाओल धारणाकेँ तोड़ल अछि जे आजुक समाजमे जतय बेटी आभिशाप बनल अछि से बात शत-प्रतिशत असत्य थिक। नारीक चेतनापरक कथाकेँ उभारल गेल अछि। 'बनैत-बिगरैत' मे शिक्षक 'महेन्द्र बाबु' क माध्यमे हिनक स्थिति-परिस्थितिगत चित्रण कऽ मानसिक ऊहा पोहकेँ उभारल गेल अछि। हिनक दून् पुत्र 'नागेश्वर' आ 'सुरेश्वर'क बीचक भैयारीगत मनोमालिन्यकेँ उभारैत बीचक सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। जेठ पुत्र 'नागेश्वर' केँ महत्वकाँक्षा कहैत छैक तँ सुरेश्वरक व्यवहारिक बुद्धि फलित होइत छैक तकर चित्रण भेल अछि।

नागेश्वरक स्त्री 'हिरा' केँ तीक्ष्ण बुद्धि ओ चातुरीक कुशलताक संग चित्रित कऽ कथाकार कोनो परिवारमे सामंजस्य राखबामे नारीक बुद्धि ओ कौशलक महता प्रतिपादित कयल अछि। 'ढोल' मे तएँ नारी व्यथाक चिक्कन-चुनमुन चित्रण भेल अछि। इज्जतिक खातिर ढलीक स्थानपर 'प्रतिमा' कनियाँ बनलि ओहि कर्नलक जे जीवन भरि पतिक गारि-मारि सहैत रहलि। नारीक विवशताकेँ उदघाटिक कऽ ओकर औनाइत-छटपटाइत मोनक भावकेँ प्रकट कएल अछि। 'शुन्यताक प्रवेश' मे आत्मग्लानिबोध देखाओल गेल अछि। 'भौजी' मे नारी मोनक पीडा उभरि कऽ ओकर मोनक सार्थक परिणिति देखाओल गेल अछि। 'धधकैत आगि : फुटैत कनोजरि' मे बलात्कारक रंगीन सपना देखब-देखयबाक माध्ययमे सपनाक सत्यता पर प्रश्न चिन्ह लगबैत सपनाकेँ फूसि मानल गेल अछि। 'एकटा अधिकार' मे प्रेमक महता देखा कऽ ओहि अनुभूतिक आँच सँ जीवन आ संघर्षकेँ देखाओल गेल अछि। खास कऽ अन्तिम परिणतिमे देहक रोइया भुटका की दैत अछि जे स्वभाव, बुद्धि आ ऐन्द्रिकताक संगम धरि पहुँचा कऽ अमिट प्रभाव छोडि जाइत अछि। जँ कथाकार कनेक साकांक्ष रहितथि आ साधल कलम सँ लिखल जाइत तँ निश्चिते इ कथा रोमानीयपन चेतनाक उदाहरण बनि अपन स्वरुप महत्तम उँचाइ धरि अनबामे सफल होइतय जकर बीज तत्व अहिमे सन्निहित अछि। तैयो ई कथा अवस्से अपन दम-खमक बुत्ता पर फराक स्थान ठमिअबैत अछि। इहो कहि सकैत छी जे हमरा जनैत संग्रहक ई नीक कथा थिक जे नेपालीय मैथिली कथा-साहित्यमे अपन भूमिका निसन्देह निमाहत ।

आइ जखन की नेपालमे राजनीतिक उथल-पाथल मचल अछि, हिंसा ओ जनक्रान्तिक इतिहास रचल गेल अछि ताहि संकटापन्न विषम परिस्थितिमे सुजीत कुमार झाक कथाकार जे प्रेम ओ सिनेहकेँ जोगा कऽ रखबाक प्रयास भेल अछि से प्रशंसनीय थिक। कारण स्थिति-परिस्थिगत विषम दुःस्थितिमे एहि परिवेशाक साहित्यकार क्रान्ति विशेष कऽ रचनामे तल्लीन भऽ एकरे मुख्य धाराक विषय बनयबामे सक्रिय छथि ततय हिनक कथाकार मानवीय प्रेमकेँ बचयबाक प्रयासमे समानान्तर धारा रचबामे तल्लीन भऽ 'चिडै' कथा संग्रह सृजित कयल अछि।

युगकेँ अकानि कऽ युगानुकूल सृजन करब कोनो रचनाकारक रचनात्मक कसौटी थिक। तएँ अखबारी समाचार-विचार सँ हटि कऽ बैचारिक प्रौढतामे नव सृजनाक सनेष बिलहब धर्म ओ कर्म दून् थिक। शिल्पक स्तर पर कसाओ रहबेक थिक, नहि तँ भटकला सँ कथ्य सम्प्रेषित होयबामे बाधा उत्पन्न होइत अछि। अर्न्तद्वन्दक चित्रण मनोविश्लेषणात्मक ढंङ्गे होयबाक थिक जे पात्रक चरित्र खूजि कऽ कथ्यकेँ महत्तम उँचाइ पर आसीन कऽ मूल्यबोधक सार्थक परिणति होअय । मात्र आशा नहि विश्वास अछि जे सुजीत कुमार झा नेपालक आधुनिक मौथिली साहित्यक एकटा एहन युवा हस्ताक्षर छथि जे समयक संग अनुभवक परिपक्वतामे निश्चिते जटिल यथार्थकेँ आरो गतिशील बना कऽ पाठकक सोझामे प्रस्तुत करताह। निश्चिते भविष्य हिनक छन्हि आ कथाक कुन्जी हाथहिमे छन्हि ।

कोनो रचनाकारकेँ सदैव इ ध्यान राखबेक थिक जे हड़बड़ीमे वा छपाबयकेँ लोभे रचना नहि करथि । हमर स्पष्ट मान्यता अछि जे ढेर- ढाकी रचना लिखाथि अछि, लेखक बनबाक लौलमे कतिपय लिखल जाइत अछि जे कूडा-कर्कटक ढेरीमे फेका कऽ वा तँ सडि-गलि जाइत अछि। अथवा फगुआ पूर्वक सम्मतमे

जरि क' खकसियाह भ' जाइत अछि। तएँ कोनो भाव आ निको विचार किएक ने आवय, ओहि ऊहा-पोह स्थितिकें गम्भीरतामे ल' अनुभवक आँचमे सिद्ध क' पाठकक सोझाँ तेना क' परोसबाक चाही जे पाठकीय अनुभूतिमे नव स्वाद चिखबैत सोझे अर्न्तरात्मामे पसि जाय आ ओकर अनुगूँज सदैव प्रतिध्वनित होयत रहय।

हमरा तँ सुजीत कुमार झाक कथाकार पर खौंझी उठैत अछि जे 'एकटा अधिकार' सन कथा लिख क' कनेक हडबडी किएक केलन्हि ? एहन कथा कहियो काल लिखाइत अछि जे नेपालीय मैथिली कथा साहित्यमे प्रेम जगतक निम्मन उदाहरण बनितय आ बनिते अछि। हमरा जनैत एही एक कथाक बुता पर सुजीत कुमार झा कथाकारक रुपमे जानल -पहचानल जयताह। जखन की हिनकामे जे ऊर्जा छन्हि से आरो कथा लिखबाक उत्स जोगाओले छन्हि।

जें की सुजीत कुमार झा हमर पियरगर अ आप्त छथि तएँ हम जानि-बुझि क' कनेक बेसिए खौंझी हिनक कथा पर उतारल अछि। मुदा ताहि सँ की ? हिनकामे जे ऊर्जा अछि, कथा कहबाक ओ लिखबाक त्वरित आवेग अछि से के रोकि सकत ? आलोचक तँ एहिना कोनो रचनाकें अपन दृष्टिएँ समग्रतामे मूल्याङ्कन करिते अछि आ चाहैत अछि जे नीक सँ नीक, आर से नीक बस्तुक आस्वादन होइत रहे। दुष्ट प्रवृतिक आलोचकक खेरहा सेहो कोनो नुकायल नहि अछि।

तैयो जाहिया कहियो वा जखन कखनो नेपाली मैथिली कथा साहित्यक चर्चा होयत, कथा जगतक विमर्श होयत, हठात् सुजीत कुमार झाक कथा कोनो ने कोनो रुपमे चर्चाक केन्द्र विन्दु बनवे करत। ओ अपन संगतुरिया कथाकारक रुपमे तँ सहजहि जे अग्रिम पीढीक कथाकारक रुपमे भनहि आइ अचर्चित छथि से अहि पोथी 'चिडै' कें ल' क' अपन सार्थक भूमिका निमाहवे करताह। अहि आशा ओ विश्वासक संग हम एतेक अवश्य कहवन्हि जे सीमित अनुभव क्षेत्रकें विस्तृत बना क' युगक आहटिमे बेस परिपक्वता ओ सन्तुलित ढङ्गे कथा-सृजन करथि। कथा लिखायत, चर्च होयवे करत आ दोसर पोथी नीक, आरो नीक भ' प्रकाशित होयत। एखन तँ जीरा खसवे कएल अछि, हिलकोर उठवे कएल अछि आ विस्तृत आकाशकें हिलोरित करवाक अछिए तँ किएक ने जटिल यथार्थक युगमे नव सनेष लेने सत्यताक दस्तावेज प्रस्तुत क' कथा साहित्यक दस्तावेजी साक्ष्य बनी ? यैह बनवाक जे सम्भावना एहि संग्रहमे आएल अछि तएँ हमरा विशेष आह्लादित करैत अछि।

मनमीत कुटीर/राजपुत कलौंनी/मौलागंज
दरभंगा-८४६००४ (विहार)

सम्मति

प्रारम्भिफावस्तामे फोनो नेना अपन पिता फिम्वा अभिभावफफ व्यक्तित्व सँ जानल-पहचानल जाइत अछि। पश्चात ओहि व्यक्तिफ फर्मठता निष्ठा आ उज्जवल चरित्र सँ पिता अथवा अभिभावफफँ प्रतिष्ठा बढैत छन्हि। सुजीतफुमार भाजी मुलत. फथाफार छथि । पत्रफारिता हिनफ व्यसन आ वृति छन्हि ।
सुजीत जी जाहि फाजफ प्रति डेग उठवैत छथि तफरा निष्ठापूर्वफ निर्वहन फरैत छथि। हिनफ फथासभ विभिन्न पत्रपत्रिफामे प्रफाशित भऽ चुफल अछि। अहि मेसँ फिछु बिछु-बेराफ पुस्तफफ रुपमे फथा संग्रह प्रफाशित फएलन्हि अछि, जे अत्यन्त हर्षफ बात।
हम फोनो समालोचफ नहि फियफ तऽ अहि ठाम समालोचन फरब हमर धर्म-फर्म नहि थिफ। एहिमे भावुफताफ स्थान गौण रहैत छैफ। फथामे फाल, स्थान, पात्र आ परिस्थितिफ विशेष फऽ महत्व रहैत अछि। एहि तत्वफ सम्यफ् अभावमे समिक्षा वृति सुतलेमे सपनायल थिफ।
सुजीत जीफ 'पिडै' फथा संग्रह मैथिली फाव्य जगतमे पहिल पुष्पफ रुपमे आएल अछि। हिनफ फथाफ विशेषता रहल अछि जे फथा पाठफफ मर्म फँ छुवैत अछि, सम्वेदनाफँ जगवैत अछि आ वस्तु स्थितिफ सम्यफ् ज्ञान फरवैत अछि जे हमरा निफ लगैत अछि।
सुजीत जीफ संग हमर संवन्ध हुनफ बाल्यफालहिसँ रहल अछि। इ बात नेपाल मैथिली साहित्यफ विद्वान लोफनिँ प्राय. जनैत छथि । इ फोनो फाज लक्ष्यफँ संधानि फऽ फरैत छथि तएँ सफलता संग दैत छन्हि ।
मैथिली साहित्यफ विद्वान समिक्षाफ लोफनि भाषा सम्वन्धमे प्रश्न अवश्य उठा सफैत छथि । मुदा जिनफा नेपालफ मैथिली साहित्यफ अवलोफन फरवाफ अवसर प्राप्त भेल होइतनि, हुनफा बुझल छन्हि जे इ अहि क्षेत्रफ सुगन्धि थिफ। ओना सुजीत जी अहि सन्दर्भमे बहुत सचेत छथि, तएँ इ पुस्तफ सम्पूर्ण मैथिली सहित्य जगतमे सम्मान पाओत इ हमर विश्वास अछि। अन्तत. हम येह फहब -
सरस्वतीफ सेवा फरी, तनमन खुब लगाइ।
विन्नारत्न संसारमे, जिवन फेर दवाइ॥
आर फिछु नहि, फथाफारफ रुपमे सुजीत जीफँ असीम बधाइ।

चैती नवरात्र — प्रो चन्द्र मोहन झा 'पड़वा'
पहिल २०६७ — मैथिली विभाग
४-४-२०११ ई. — महराज महेश ठाकुर मिथिला महाविद्यालय,
दरभंगा

कथामे समाजक व्यथा

समाज एखन खण्ड-खण्डमे विभक्त भऽ रहल अछि। एखनुक समय दिनानुदिन बजारवादी भेल जा रहल अछि यैह कारण छैक जे सम्वेदना दिन प्रति दिन लोकमे कम भऽ रहल अछि । एहनमे कोनो साकांक्षा आ जागरुक श्रष्टाकेँ कलम मौन कोना भऽ सकैय । जँ कि कलम मौन नहि भऽ सकैए तएँ ने कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा बाबाजी हमरा लोकनिकेँ सोचयकेँ लेल बाध्य करैछ। बाबाक आङुर पकरि कऽ जे चलय सिखलक, बाजय सिखलक, सिनेह सँ सिञ्चित भऽ आगा बढल उएह बाबाक अवस्था घटलापर ओहि घरमे उपेक्षा होइत रहलैक, काहि कटैत रहल बाबा शारीरिक लाचारीक कारणे, मुदा केओ ओकरा आवश्यक सेवा-रेखदेख नहि कएलकै, बलाए बुझाइत रहल बाबा, मुदा मुइलाक बाद मगरमच्छक नोर चुआ कऽ लोकक सहानभूति लेवाक प्रयत्न करैत परिवारक सदस्यक चित्रण एखनुक समाजमे व्याप्त सम्वेदन हिनता दिस इशारा करैत अछि।

सुजीत कुमार झा जे समाजमे पत्रकारिताक लेल सुप्रसिद्ध नाम अछि, अपन समाचार लेखनि सँ समाजमे मैथिली भाषा साहित्य, कला संस्कृतिकेँ जन-जनधरि पहुँचवैत रहला अछि आ एखन कथाक माध्ययम सँ हमरा लोकनिकेँ समयमे सचेत हएवाक लेल आगाह कऽ रहला अछि, जे बेसी महत्वकांक्षा सँ पश्चातापक शिकार होवय पडैत छैक से हुनक प्रियंका शिर्षकक कथामे सहजहि देखल जा सकैय ।

अपन परारक अन्तर दुखक समयमे होइत छैक से चिडै कथामे सुजीतजी खूब नीक चित्रण कएलन्हि अछि। देहाग्नि सेरएवाक लेल सौन्दर्य चित्रण केओ कतबो करए चाहे जानि कऽ वा अन्जानमे मुदा पर पुरुष वा पर स्त्रीक सम्बन्ध अन्तोगत्वा पीडा मात्र दैत छैक तएँ अहि सँ बँचवाक लेल बड नीक तनावाना बूनल अछि अहि कथा संग्रहमे ।

स्त्री आ पुरुषमे भेद जन्मक आधारपर नहि कर्मक आधार पर होयवाक चाही, बंशक नामपर समाजमे स्त्रीक संग भऽ रहल भेदभाव आ आत्याचार निरर्थक अछि। सन्तान बेटा वा बेटी दूनु बरावर होइछ। कूकर्मी बेटा सँ नीक सुकर्मी बेटी तकर स्पष्ट चित्रण कथा बंशमे भेटैत अछि।

समसामयिक विषय बस्तुकेँ जाहि तरहेँ सुजीत जी अपन कथाक माध्ययम सँ हमरा सभक बीच उपस्थित भेलाह अछि ताहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली कथा संसारक एकटा आओर सशक्त युवा कथाकार भेटल अछि। हमरा विश्वास अछि मैथिली कथाक पाठक बीच सुजीत कुमार झाजीक कथा सम्मान पाओत । हम कामना करैत छी जे सुजीत जीक कलम अनवरत चलैत रहए आ मैथिली कथामे नीत नवीन कथाक बृद्धि होइत रहैक । सुजीत जी अपन कथा लेखनिसँ मैथिलीकेँ आओर आगा बढाओताह ताहि विश्वासक संग एहि कथा संग्रहकेँ सफलताक लेल शुभकामना ।

जीवनाथ चौधरी

पूर्व अध्यक्ष

श्री रामानन्द युवा क्लव, जनकपुर-८

उमसमे सिहकी:सुजीतक चिड़ै

साँझुका सुरुजक लाल किरिनियाँ
रातिक नहि ई निशानी छै
छिटने छल जे भोर पिरितिया
तकरे मधुर कहानी छै

नेपालीय मिथिला क्षेत्रक सक्रिय सञ्चारकर्मी सुजीत कुमार झाक कथासङ्ग्रह 'चिड़ै' क सन्दर्भमे किछु लिखबाक लेल पहिल सिढ़ी बनौलहुँ हम अपनहि गीतक दू पाँतिकेँ। हँ, हमरा एना लगैत अछि जेना नेपालमे आधुनिक मैथिली साहित्यक सूर्य मध्याह्नक उत्कर्षपर पहुँचबासँ पहिनहिँ अपराह्नदिस बढ़ि गेल हो। हमरा ई बूझल अछि जे ई स्वाभाविक गति वा अवस्था नहि भऽ मात्र एहन गति वा अवस्थाक आभास छियैक, जे कि भ्रम सेहो भऽ सकैत अछि। भऽ सकैछ जे परिस्थितिक मेघसँ हमरासभक सृजनाक सूर्य झँपाएल रहलाक कारणे आकाश ललाओन लगैत होअए। मुदा महत्वपूर्ण छै : सूर्यक उपस्थिति। ओही उपस्थितिक कारण नेपालीमे एहन कहबी छैक जे केहनो कारी मेघक चारू कात चमकैत चानीक पाढ़ि तँ लगले रहैत छैक। इएह उपस्थिति हमरासभकेँ गुजगुज अन्हारमे सेहो उत्साहक सञ्चार कएने रहैत अछि जे काल्हि फेर सोन मढ़ल भोर होएबे करतैक।

सुजीतक ई कथासङ्ग्रह तेहन समयमे आएल अछि जखन नेपालमे मैथिली साहित्यक आकाश बेस मेघाओनजकाँ बुझा रहल छैक। ओना तँ मात्र भाषा-प्रयोगक दृष्टिएँ देखल जाए तँ नेपालक मिथिला क्षेत्र वर्तमानमे मैथिलीमय अछि। मुदा केहनो प्रतिकूल अवस्थामे भाषा-संस्कृतिक हुकहुकी बचाकऽ रखनिहार साहित्यिक गतिविधि वर्तमानमे अत्यन्त न्यून छैक, से कहबामे हमरा कनेको द्विविधा नहि भऽ रहल अछि। एहि अवस्थाकेँ अनठियासभ वा अनठाकऽ बैसलसभ साँझ सेहो कहि सकैत अछि। मुदा यथार्थमे ई सृजन-सूर्यक ओहि मधुर कहानीक अभिव्यक्ति सेहो छियैक जे भोरहिसँ ओ प्रेमक प्रकाश छिटने रहए। जँ मिथिलाक माटि एतेक उर्वर नहि रहितए आ यथेष्ट रत्न उपार्जन कऽ पथार नहि लगा देने रहितए तँ आजुक अवस्थाकेँ हमसभ किन्नहु आशा करबा योग्य नहि मानि सकैत छलहुँ।

नेपालक मैथिली साहित्य सम्प्रति साहित्यक लेल सभसँ अनुकूल अवस्थामे सेहो छहाँएल अछि। एकरा पाछाँ बहुत रासे कारणसभ छैक। तथापि जतबा गतिविधि भऽ रहल छैक, ताहूमे नाक तँ सोन नहि आ सोन तँ नाक नहि बला अवस्था छैक। कतेको जगहपर नव उत्साह आ विशिष्ट ऊर्जा छैक, मुदा ओहिठाम समुचित वातावरणक अभाव छैक। किछु जगहपर यथेष्ट अनुकूल वातावरण छैक, मुदा ऊर्जा आ उत्साह मृगतृष्णामे खर्चा भऽ रहल छैक। एहिसभ कारणे मैथिलीक खास कऽ युवा तुर जे निर्माण होएबाक चाहैत छलैक से अपेक्षित रूपेँ नहि भऽ पाबि रहल छैक। एहन अवस्थामे सुजीत जे कथासङ्ग्रह 'चिड़ै' लऽकऽ प्रस्तुत भेलाह अछि, ताहिसँ नेपालक मैथिली साहित्यक आकाशमे एकटा तरङ्ग अवश्य आएल अछि। एकटा एहन तरङ्ग जे गुमसल दुपहरियामे जेना पिपरक पातकेँ नहुएँ सिहरा देने होइक।

सुजीतक परिचय सम्प्रति एकटा ऊर्जावान एवं सक्रिय सञ्चारकर्मीक रूपमे बनैत छनि । ई नेपालमे छापासँ लऽ श्रव्य आ दृश्य-सञ्चारपर्यन्तमे अपन उल्लेख्य आ हस्तक्षेपकारी भूमिका दर्ज करबा चुकल छथि । हँ, पत्रकारितामे अखबारसँ लऽकऽ रेडियो आ टेलिभिजनमे पर्यन्त एकसङ्ग क्रियाशील रहैत आएल व्यक्तित्व छथि सुजीत । जँ वर्तमानक बात कएल जाए तैयो ई 'मिथिला डट कम' नामक जनकपुरधामसँ बहराएबला दैनिक मैथिली पत्रिकाक सम्पादक छथि, जनकपुरहिक 'रेडियो मिथिला'क समाचार-प्रमुख छथि आ नेपालक एकटा चर्चित टेलिभिजन 'एभिन्यूज' क जनकपुर रिपोर्टरक रूपमे शानदार पहिचान बनौने छथि ।

नेपालक मिथिला क्षेत्रमे जँ देखल जाए तँ पत्रकारिता मैथिल युवासभकेँ रोजगारीक अवसर तँ अवश्य देलकैक अछि, मुदा सृजन-बीज समटिकऽ कलम चलौनिहार युवा वर्गकेँ साहित्यसँ विमुख करबाक प्रमुख कारक सेहो इएह बनल छैक । जहियासँ नेपालमे पत्रपत्रिकासभ बेसी छपाए लगलैक, मिडियाक विकास होइत गेलैक, युवा तुरक साहित्यमे संलग्नता कमैत गेल छैक । पहिने लोक साहित्यक माध्यमसँ अपन परिचय बनबैत छल, तकरा बाद पत्रकारिताजन्य क्षेत्रमे अपन कौशलक उपयोग करैत छल । धर्मेन्द्र झा, श्यामसुन्दर शशि, रमेश रञ्जन, हिमांशु चौधरी, रामनारायण देव आदि एहने मैथिल हस्तीसभ छथि । मुदा आब जाबत क्यो टो-टा कऽ कविता लिखबा योग्य होइत अछि ताबत पत्रकारितामे स्थापित भऽ नाम-दाम दून् कमाए लगैत अछि। एहिसँ स्वाभाविक रूपेँ पत्रकारिताक आकर्षण बेसी छैक ।

सुजीतक लेखन-यात्रा सेहो साहित्येसँ शुरू भेल छलनि । हमसभ जहिया साहित्यमे बेस सक्रिय युवा पीढ़ी मानल जाइत रही तहिया सुजीत बहुत आशा जगौनिहार नवयुवा सर्जकक रूपमे देखार होबऽ लागल छलथि । बादमे पत्रकारितामे ततेक ने डूबि गेलाह जे हमसभ आश मारिए देने रही । मुदा सृजनक आगि जे होइत छैक से कतबो छाउर तर झँपाएल किएक ने रहए, जखने कने खड़ाएल मौसम आ किछु खढ़पात पबैत अछि कि लहकि उठैत अछि । हमरा लगैत अछि-सुजीतक ई कथासङ्ग्रह तेहने सुखद संयोगक परिणति थिक ।

सामाजिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमिक दर्जनभरि कथासभक सङ्ग्रह अछि- 'चिड़ै' । एहि कथासभक सरसरी अध्ययन कएलापर इएह कहल जा सकैत अछि जे सुजीतक कथा सहज होइत छनि । हिनक कथा पढ़बाक आ बुझबाक लेल तथा ओहिसँ आनन्दित होएबाक लेल पाठक वा भावककेँ बेसी दिमागी कसरत नहि करऽ पड़तनि । शैलीगत रूपमे सेहो पाठक/भावक बेसी भटकैत रहबासँ मुक्त रहि सकैत छथि । एहिसँ प्राय: सामान्य मैथिल जनजीवनक रङाएल कथासभक आनन्द सामान्यसँ सामान्य व्यक्ति सेहो लऽ सकैत छथि । कथासभमे मानवीय संवेदनासँ बेसी जीवनक यथार्थसभकेँ स्पष्ट ढङ्गसँ अभिव्यक्ति दैत देखल गेल छथि सुजीत । एहि हिसाबेँ कहल जा सकैत अछि जे कथासभमे सुजीतक पत्रकार व्यक्तित्व मुखर अछि जे बेसी घुरीघाँटीमे नहि ओझराकऽ मोनमे लागल बात सोझ ढङ्गसँ कहि जाइत अछि ।

कथाक गहिराइ, गाम्भीर्य आ गुणवत्ता जे-जते छैक, तकर आकलन मूल रूपमे पाठके करैत छथि । तेँ ओहि मादे बेसी कहैत रहब हम आवश्यक नहि बुझैत छी । एहि पोथीक सभसँ महत्वपूर्ण पक्ष छैक : विविध प्रदूषणक कारणे निर्जनसन होइत मैथिलीक आकाशमे चिड़ियाक विचरण । हमरा सभसँ बेसी इएह बात सोहाओन लागि रहल अछि । सुजीतक चिड़ैक पाँखि फड़फड़एलासँ मैथिली साहित्यमे स्नेहक बसात तँ बहबे करत, ई बसात पत्रकारितामे मात्र सीमित रहि मूल सृजनशीलताकेँ जाँतिकऽ बैसल नवतुरियासभकेँ सेहो एही मार्गपर चलबाक लेल प्रेरित करतैक से हमर विश्वास अछि । हम शुभकामना दैत छी जे सुजीतक चिड़ै

लोकक मनमनमे उड़ान भरैत मैथिली साहित्यमे सुजीतक ख्यातिकेँ सेहो खूब दूर-दूरधरि उड़बैत चलि जाइक ।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि
साहित्य-सङ्गीत-सञ्चारकर्मी
२०६८/०२/१५
नेपालक चारिम गणतन्त्र दिवस

किछ हमरो

सुजीत कुमार झा

एकटा साहित्यकारक रुपमे अपनाकें ठाढ करयकें हमर सोंच कहियो नहि रहल। पत्रिकामे नाम छपावयके धुनि एकटा कथा लिखा देलक आ एकरवाद कहियो-कहियो मोनमे फुराइत रहल आ हम कथा लिखैत रहलहुँ। हमर पहिल कथा संयोगे सँ लिखागेल छल। हम आ मित्र निमिष जी संगे-संगे प्राय: रहैत छलहुँ। निमिष जीक लेख सभ विभिन्न पत्र- पत्रिकामे अवैत छल। मुदा हमरा पठेलोकें वाद ओ पत्रिका सभमे नहि छपाइत छल। हमरो इच्छा रहे जे पत्रिका सभमे हमरो नाम आवय। हमरो रचना छपाय।

अहि क्रममे दरभंगाक साहित्यकार चन्द्रमोहन झा पड़वा जे हमर पिसा छथि, एक दिन जनकपुर आएल रहथि। हुनका सँग अहि वातक सेयर कएलहुँ। ओ जनकपुरमे मिथिला नाट्यकला परिषद कथा गोष्ठी कऽ रहल अछि तोँ ओहिमे कथा लिख कऽ वाचन कर, पत्रिका सभमे कथो छपा देवउक आ ओहि कार्यक्रममे वाचन करवे तऽ बहुतरास पत्रिका सभमे नामो एतहुँ कहलन्हि। इहे वात प्रेरणाक काज कएलक आ हम कथा लिखय लगलहुँ।

ओ कथा गोष्ठीमे हम कथा पढव की नहि तकर छनौट आदरणीय गुरु महेन्द्र मलंगिया आ एमाले नेता रामचन्द्र झा कएने रहथि। हुनका दूनुके आभार व्यक्त कएने हमर इ किताव पूरा नहि भऽ सकैत अछि। जे उद्देश्य सँ हम कथा गोष्ठीमे कथा वाचन कएलहुँ दू महिनाधरि पत्रिका सभमे नाम नहि आएल छल बहुत गोटे कथा पढने रहथि तएँ पत्रकार वरिष्ठ सभकें मात्र नाम छपने छल। मिनापक मिथिलावाणीक नयाँ अंक प्रकाशित भेल, तकर वादे हमर नाम आएल छल।

कथा संग्रह निकालयकें सोच हमरा कएवेर वनल आ कएवेर टुटल। एकवेर तऽ एकटा संग्रहमे राखय जोगर १४ टा कथा टाइप आ ओकर प्रुफ फाइनल तक कऽ लेने छलहुँ। ओ प्रकाशित नहि भऽ सकल। ओ कम्प्यूटरमे प्राविधिक त्रुटिक कारण सभ कथा समाप्त भऽ गेल। दुखक वात ओ कथा आजुक दिनमे हमरा लग अछियो नहि। ओहि समयमे आदरणीय अशोक दत्त बहुत मेहनत लगा कऽ भाषा सम्पादन सँ लऽ बहुत काज कऽ देने रहथि। ओ किताव नहि आवि सकल। ताहि वातक हमरा दूनु गोटेके दुख अछि।

खैर अहिवेर निकलिए गेल, की कहु निकालिए कऽ छोड़लहुँ। एकर श्रेय हमर दश प्रतिशत तऽ भाइ संजीवकुमार झा, अतिश मिश्र , विनोद कुमार महतो , जितेन्द झा, सुधिरचन्द्र आचार्य, रामअशिष यादव, राजेश कर्ण आ विजय दत्तकें नब्बे प्रतिशत देत छी। इ सभ कथा लिखवावय सँ लऽ कऽ बजारमे आनय तक कें कार्यमे महत्वपूर्ण योगदान देलन्हि।

किताबकें भूमिका लिख वहुत सहयोग कएनिहार आदरणीय चन्द्रेश जी , चन्द्रमोहन झा पड़वा, धीरेन्द प्रेमर्षि आ जिवनाथ चौधरीकें हृदय सँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी।

एकर अतरिक्त श्रद्धेय रामभरोष कापड़ि 'भ्रमर', धर्मेन्द्र विह्वल आ वीएम खनालक योगदानकें सेहो नहि विसरि सकैत छी। ओसभ पहिलवेर अपन-अपन पत्रिकामे हमरा स्थान देने रहथि। मित्र अनिल विश्वबन्धु आ निमिष झाकें सेहो योगदान नहि विसरल जा सकैत अछि।

तहिना डा. राजेन्द्र विमल, डा. रेवती रमण लाल, वैद्यनाथ चौधरी 'वैजु बाबु'(दरभंगा), महेन्द्र मलंगिया, अनुराग गिरी , डा. विजयकुमार सिंह, डा. गंगा प्रसाद अकेला, अयोध्यानाथ चौधरी, वृजकुमार यादव , श्याम सुन्दर शशी , रमेश रञ्जन , हिमांशु चौधरी, हरि प्रसाद मण्डल , सुनिल मल्लिक , इश्वरचन्द्र झा , रोशनकुमार झा , घनश्याम मिश्र ,अमरकान्त अमर, सीमा ठाकुर , खुश्बु झा, नविन मिश्र , शत्रुघ्न प्रसाद साह , रुपेश सिंह , प्रकाश 'प्रेमी', चन्द्र किशोर झा, अमरचन्द्र अनिल, राजेन्द्र कुशवाहा, उमेश साह,

प्रमोद चौधरी, जगदीश महासेठ, शम्भु ठाकुर, मनोज झा मुक्ति, नित्यानन्द मण्डल , रोशन जनकपुरी , उपेन्द्र भगत नागवंशी , परमेश्वर कापडि, अवधेश पोखरेल, ध्रुव झा, अनिल मिश्र, दुर्गानन्द दुर्गेश , राकेश महतो ,मोहन झा , मिश्रीलाल मधुकर , रोशन कुमार , देवकुमार यादव , नविन कुमार मिश्र (गायक) रामनारायण विश्वास, संजय मिश्र , धीरेन्द्र राय , कमलेश मण्डल , धीरेन्द्र राय यादव , रबि सिंह, अवधेश कामति, हमर छोट भाय रंजीत कुमार झा आदिक सहयोग सेहो हमरा निरन्तर रचनाशील रहवामे सहयोग कएलक अछि।

हमर ससुर विनय कान्त ठाकुर सेहो किताबकें प्रकाशित करवाक सम्बन्धमे सोध खवरि लैत रहला। हुनको हृदय सँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी। हम दू गोटेकें योगदानकें सेहो नहि विसरि सकैत छी ओ छथि रेडियो मिथिलाक प्रवन्ध निर्देशक गोपाल झा आ स्टेशन म्यानेजर राकेश कुमार सिंह। ओहो समय-समय पर सल्लाह सुझाव दैत रहला अछि। ओना जँ रामानन्द युवा क्लवक अध्यक्ष दीपेन्द्र कुमार ठाकुर प्रकाशनक लेल तैयार नहि भेल रहितथि तऽ आइ इ पुस्तक बजारमे नहि आवि सकैत। अहिकें लेल हुनका आ क्लव परिवारकें सेहो धन्यवाद देने बिना नहि रहल जा सकैत अछि।

इ कथा संग्रह हमर पहिल पुस्तक अछि। तएँ अहिमे वहुत रास त्रुटी सभ भऽ सकैत अछि। ओ त्रुटीकें देखा कऽ समालोचना करव तेकर अपेक्षा रखैत छी।

जय मिथिला ! जय मैथिली !!

एकटा अधिकार

बहुत भयंकर हृदय छल्ली करयवला हवाई दुर्घटना छल। विराटनगर सँ काठमाण्डू आबयवला हवाइ जहाजमे लैंड करय काल अचानक आगि लागि गेल आ जहाज रनवे शुरु होवय सँ पूर्व एकटा आगिक गोला बनि जमिन पर छिटा गेल छल।

वारुणयन्त्रकेँ पहुँचय तक भीमकाय विमान जरि कऽ छाउर भऽ गेल छल। समाचार मिलिते वारुण यन्त्रक अतिरिक्त पुलिस, एयरलाइन्स आ एयरपोर्टक अधिकारीक संग-संग अपन प्रियजनकेँ लेबय एयरपोर्ट आएल लोक सेहो दुर्घटनास्थल पहुँच गेल छल।

जतय हवाई जहाज खसल छल ओतयकेँ दृश्य तऽ बहुत वीभत्स छल। चारु दिस जरल जहाजक टुकरा, मानवशरीरक अधजरु अंग, बैग लगायतक समानसभ ओहिना पड़ल छल। माउस आ रबरकेँ जरयकेँ मिलल जुलल गन्ध सँ वातावरण पुरा भरल छल। नाक पर रुमाल बन्हने रेस्क्यू टीमक लोक गरम ढेरमे तत्परता सँ लाश खोजि रहल छल।

अहूँसँ बेसी कठिन आ संवेदनशील काज ओही अधिकारीकेँ छल जे यात्रीक परिवारकेँ पूछताछक जवाव दऽ रहल छल। नम्रता आ शालीनता बनावय राखयकेँ अथक प्रयासक बावजूद हुनक सभक व्यवहारमे खिसियाब झलकि रहल छल।

विक्षिप्त सन लागि रहल एक युवककेँ लागातार हिचिकय सँ ओतयकेँ वातावरण आओर विह्वल भऽ रहल छल।

आखिर युवककेँ पालो आएल तऽ कहलक, 'हमरा जकर खोजी अछि ओ हरियर रङ्गक सारी पहिरने छल।'

'एखनधरि जतेक शव भेटल अछि सभ क्षतविक्षत अछि। हरियर साड़ीवाला कोनो व्यक्ति नहि भेटल अछि।'

मृतक सभक गहना, पेन, मोबाइल, घडी लगायतकेँ समान अलग कऽ कऽ राखल जा रहल छल। यात्रीकेँ निकाललाक बाद जे समान भेटत ओ यात्रीकेँ करकुटुम्बकेँ देखाओल जाएत।

'मुदा हम हुनकर सम्बन्धि नहि छी।' युवक सिसकल, 'हम ओ साड़ीकेँ माध्यम सँ मात्र हुनकर अन्तिम झलक देखय चाहैत छी। शायद ओहो हमर हिस्सामे नहि अछि........।'

'धैर्य राखु' अधिकारी कोमल स्वरमे बाजल, 'जे शव निकलैत अछि ओकरा सभ देख सकत अपने जतय शव उठा कऽ राखल जायत अछि ओतय जाऽ कऽ आओर शव आवयकेँ प्रतिक्षा करु।'

युवक थाकल जकाँ चलैत लाइन सँ बाहर निकलि गेल। दोसर युवक सेहो यात्री सूची देखलाक बाद आँखि पोछैत लाइन सँ बाहर आएल। पहिल युवककेँ असमंजसक स्थितिमे एक दिस ठाढ़ देख ओ हुनका लग गेल। हुनका नहि जानि किए ओ नितांत अपरिचित व्यक्ति सँ सहानुभुति भऽ रहल छल।

'एतय कखन धरि ठाड़ रहब ? ओम्हर चलु चबुतरा पर बैसि शव आवयकेँ प्रतिक्षा करी।'

'ककरो अपनकेँ शव कहब केहन लगैत अछि' पहिल दोसरकेँ संग चलैत पुछलक।

'प्राण लेवयवला, मुदा आओर की कहूँ ? हवाई जहाजकेँ हालत देखैत ककरो बचयकेँ उम्मीद नहि अछि। ओना हमर कनियाँ सुरक्षा जाँचमे जाय सँ पूर्व हमरा फोन कएने छल, मुदा हम तइयो ई निर्मूल आस सँ की भऽ सकैत अछि अन्तिम समयमे ओ अपन निर्णय बदलि लेने होइ, यात्री सूची देखय गेल छलहुँ। लिस्टमे दोसर नाम हुनकेँ छल। आब तऽ बस, हुनकर शवकेँ प्रतिक्षा, अन्तिम संस्कार आ फेर जीवनभरि हुनका स्मरण करयकेँ अतिरिक्त किछु नहि बँचल हमर जीवनमे।'

'तइयो अन्तिम संस्कार तऽ कऽ सकब, हम तऽ शायद अन्तिम दर्शन सेहो नहि कऽ सकी ? ककरो आओरकेँ देखय सँ पहिनहि हुनकर घरवला गिद्ध जकाँ लपकि कऽ शव लऽ जेता।'

'ओ एतय आएल छथि !'

'जे लोक सभ सँ आगु ठाढ़ छथि, अवश्य ओइमे सँ एक हेता।'

'हुनका चिन्हैत नहि छियन्हि !'

'नहि ओना हुनकर पर्समे हरेक समय तस्वीर रहैत छल, मुदा हमरा देखयकेँ कहियो इच्छा नहि भेल। '

'किया !'

'हुनका सँ लगातार ई सुनि कऽ हुनको की पसिन छन्हि ओ आइ भोरमे की कहने छलाह कोन चुटकुल्ला सुनौलथि। बोर भऽ जाइत छलहुँ। तस्वीर देख लैतहुँ तऽ शायद ओ एलवमे लायव शुरु कऽ दैतैथ देखावयकेँ लेल।'

'जखन हुनकर घरवालासँ एतेक लगाव छलन्हि तऽ ओ अपने संग कोना दोस्ती बना लेली, एकतरफा प्रेम छल अपने के !'

'शायद हम हुनका सँ एतेक नहि कऽ पबितहुँ जतेक प्रेम ओ हमरा सँ करैत छली, बहुत बेसी।'

'आ अपन घरवला सँ ! '

'पागलपनक हद धरि। तखनने हमरासँ एतेक लगाव भेलाक बादो ओ हुनका छोड़यकेँ लेल तैयार नहि छली।'

'बच्चाक इच्छा छलन्हि हैत।'

'बच्चा तऽ छलन्हि नहि। हुनकर घरवला हुनका किनको संग बाँटयकेँ लेल तैयार नहि छल। ही वाज भेरी पोजेटिभ, टू द' लिमिट अफ सफोकेशन पर हैप्स।'

'तखन ने शायद ओ अपने सँ प्रेम करय लागल छली। '

'यदि बशमे होइत तऽ कहियोने कैरती। हुनका घरवलाकेँ पोजेटिव होवयकेँ कोनो शिकायत नहि छल। मुदा प्रेम ओ चिज अछि बिना इच्छोकेँ भऽ जाइत अछि वा बहुत इच्छा भेलाक बादो नहि होइत अछि।'

'मुदा प्रेम भेल कोना ! हमर मतलब अछि, भेटघाट वा प्रारम्भ कोना भेल !'

'हवाई जहाजमे। बड़ा संयोग अछि ने, जे प्रेम कहानी हवाई यात्रामे शुरु भेल छल आ हवाइ यात्रामे समाप्त भऽ गेल। जे हुए हम दुनु टुर पर पोखरा जा रहल छलहुँ। बराबरक सीट पर बैसल छलहुँ। अहि दुआरे बातचितक शुरुवात भऽ गेल। संयोग सँ हमरा दुनुकेँ बराही होटलमे रुकयकेँ छल। अही दुआरे एके टैक्सीमे होटल गेलहुँ आ फेर साँझखन होटलक लौबीमे दोबारा भेट भऽ गेल। हम हुनका होटलमे डिनरक निमन्त्रण देलहुँ, ओ मानि गेली। 'खाना खाइत पत्ता चलि गेल काल्हि भिने ओ रारा ताल देखय जेती फेर हमहुँ ओतय जायकेँ कार्यक्रम बनेलहुँ।'

'मुदा ओ तऽ प्रात भिने काठमाण्डू फिर्ता चलि एली, हमरा काम छल तएँ एक दू दिन रुकय परल। नहि ओ अपन फोन नम्बर देली आ ने हमर लेली। मात्र एतेक बुझल छल काम कतय करैत छथि।'

'एतय फिर्ता भेलाक बाद एक दिन हुनक अफिस गेलहुँ। ओ बहुत खुशी भेलथि, लागल जेना हुनको हमर प्रतिक्षा छल। बस अही प्रकारे भेटक क्रम बढ़ैत गेल आ सम्बन्ध सेहो।'

'हुनक विवाह भऽ गेल छल ई कहिया पता चलल !'

'पहिले भेटमे, अपन परिचय संगहि ओ अपन घरवालाक जन्मपत्री सुना देली। हुनक चर्चा कएने विना तऽ कोनो गप्पे पुरा नहि होइत छल। '

'आ फेर अहाँ हुनका सँ प्रेम करय लगलहुँ !'

'कहलहुँ ने प्रेम कएल नहि जाइत अछि, भऽ जाइत अछि।'

'मुदा रोकल तऽ जा सकैया।'

'रोकयकेँ बहुत प्रयास कएलहुँ मित्र, ओ सेहो आ हम सेहो। अनेक बेर नहि भेटयकेँ प्रण कएलहुँ मुदा तइयो हम जेना कोनो बशीकरणमे बन्हल जकाँ स्थान पर चलि जाइत छलहुँ आ ओ सेहो प्रतिक्षा करैत रहैत भेट जाइत छली। हारि कऽ हम नहि भेटयकेँ व्यर्थ कोशिस करब छोड़ि देलहुँ।'

'हुनक घरवलाकें पता नहि चलैत छल की अपने सँ भेटय अबैत छथि !'

ओना तऽ ओ हुनका आबय सँ पहिने घर पहुँच जाइत छली, कहियो अबेर भेला पर अफिसक पार्टी, बहुत काजक बहाना बना दैत छली ।'

'मुदा तइयो मुँहक हाव भाव, उद्विग्नता सँ पत्ता चलिए जाति अछि। हमर कहयकें अर्थ प्रेम छिपाएब आसान नहि होइत अछि।'

'हँ मुदा ओ हुनकर प्रेममे अहि प्रकारे डुबल छलाह जे हुनक चिन्ता, हुनक अकुलाहट सभ अपने लेल सम्भैत छलाह ।'

'जखन हुनक घरवला हुनका सँ एतेक प्रेम करैत छल तखन कोनो अन्य सँ प्रेम करयकें की आवश्यकता छल ! '

'कोशिस कऽ कऽ या सोचि समभि कऽ प्रेम विवाहक बाद कएल जाइत अछि। सहीमे प्रेम तऽ वैह होइत अछि, जे अनजानमे नहि चाहैत भऽ जाइत अछि।'

'लगैत अछि अपने कहियो किन्कोसँ प्रेम नहि केलहुँ अछि !'

'केलहुँ तऽ अछि मुदा मात्र अपन कनियाँ सँ, विवाहक बाद, मुदा सोचिसमभि वा नापितौल कऽ नहि। विवाह सँ पहिने पढाइ आ फेर काममे एतेक व्यस्त छलहुँ की केकरो देखयकें फुरसत नहि छल, आ विवाहक बाद तऽ हुनक अतिरिक्त केकरो दिस ताकयकें अवसरे नहि भेटल वा कहीं मने नहि भेल। पूर्ण सन्तुष्ट छलहुँ हुनक प्रेममे। भऽ सकैत अछि अपनेक प्रेमिका अपन घरवलाक प्रेमसँ सन्तुष्ट नहि हुए।'

'एहन बात नहि छल। ओ हुनका सँ सर्वथा सन्तुष्ट छलथि । बहुत पसिन करैत छली ओ हुनका।'

'फेर एतेक प्रेम करयबला घरवलाकें एतेक धोका कोना दैत छली !'

ओ एकरा धोका नहि मानैत छली, किए की जखन ओ हुनका संग होइत छली तऽ पूर्णतया हुनका प्रति समर्पित होइत छली आ हुनका घर फिर्ता होवय सँ पूर्व घर पहुँच जाति छली। यानी हुनक समय ओ कहियो हमरा लेल नहि दैत छली। हुनक कहब छलन्हि की अइसँ हमरा घरवलाक कोनो नोक्शान नहि होइत अछि। हँ, हमरा संग न्याय नहि कऽ पबैत छली, अहिकें लेल हरेक समय ग्लानि आ, पश्चातापक आगिमे सुलगैत रहैत छली बेचारी।'

'अपने कें तरस नहि अबैत छल हुनका पर !'

'बहुत अबैत छल, मुदा की करितहुँ दिलक हाथ मजबुर छलहुँ। छोडि नहि सकैत छलहुँ हुनका।'

'अपनेकें स्वयं पर यानी अपन पुरुषत्व पर तामस नहि अबैत छल। बहुत स्मार्ट छी, जिवनमे सेहो लगैत अछि, सुव्यवस्थित हैब, लडकीसभ सेहो अपने पर अवश्य मरैत हैत। फेर अपने किए एकटा विवाहित महिलाक संग जुडल छलहुँ, जिनका संग अपने इच्छा अनुसार समय सेहो नहि बिता सकैत छी ! '

कनी काल इम्हर ओम्हर तकैत ओ कहला, 'प्रेम एकरे नाम छैक, मुदा.....'

'हमरा तऽ कहब छुटि गेल दू नाव पर एकसंग सवार होवयकें यन्त्रणा सँ।'

मुदा ओ एकरा यन्त्रणा नहि, गुलाबक संग उगल काँट कहैत छली। गुलाबक रङ्ग आ अकर्षण दूर सँ देखल जा' सकैत छल मुदा गमक सुंघयकें लेल तऽ ओकरा छुवहे परतै आ काँटक चुभन सेहो भेलहे परतै।

'यानी हुनका चुभन पसिन छल ! '

'हुनका प्रेम पसिन छल आ ओइसँ जुडल हरेक चिज सेहो।'

'यानी ओ हालत सँ प्रसन्न छली !'

'हमरा लग सँ जाय काल ओ दुखित भऽ जाइत छली मुदा हरेक समय प्रसन्न रहैत छली। हँसैत छली, गुनगुनगुनाइत छली ! '

ताकि ओ हुनकर गममे बताह भऽ जाए ! ओ नहि हुनक विना जी सकैत छली आ ने हमरा। हमर समस्या एहन छल, मित्र, जेकर कोनो समाधान नहि छल। हमरा हुनका संग जीवयकें छल आ जिवियो रहल

छलहुँ। आब हुनका गेलासँ हमरा जिवनमे जे अभाव भऽ गेल अछि ओ कहियो नहि भरत। नहि जनैत छी, जीवियो सकैत छी वा नहि हुनका विना !'

'आ हुनक घरवला !'

'हुनको लेल तऽ आसान नहिए हैत.... ओम्हर देखु, ओइ गाड़ी सँ किछु आओर शव निकालल जा रहल छैक।'

'चलु देखैत छी।'

आ दूनु जतय शव आनि राखल जाइत छलैक ओतय चलि गेला। अहिबेर निकालल जायवला शव शायद ओ व्यक्तिकेँ छल जे ढेरमे दवि कऽ मरि गेल छल आ पुरे जकाँ जरय सँ बचल यानी पहचानल जा सकैत छल। एक स्ट्रेचर सँ राखल हरियर साड़ीकेँ किछु भाग देहपर रहल व्यक्ति सेहो छल। ओना शरीर पुरे झुलसि गेल छल मुदा झुलसल मुँहकेँ पहचानल जा सकैत छल। पहिल युवक शवकेँ देख कऽ खसि पड़ल। दोसर हुनका उठेलन्हि। ओ तोक भरोष देलन्हि।

'अपने हुनकर अन्तिम संस्कार करय चाहैत छी ने, अपनेक घरक लोक करय देत।'

'घरक लोक एतय नहि अछि। हम असगरे रहैत छी, मुदा अइ सँ की फर्क पड़तै ? हम कोन अधिकार सँ हुनकर बाँडी क्लेम कऽ सकैत छी।'

प्रेमक अधिकार सँ। हुनका घर लऽ जा सकैत छी, हुनका मनभरि कऽ छू सकैत छी, हुनका जतेक चाही पकड़ि कऽ कानि सकैत छी ......'

'एना हमरा केँ करय देत ? '

'हम करय देव.......'

'अपने..... कोन अधिकार सँ ?'

'हुनकर घरवला होवयकेँ अधिकार सँ

'अए......जेना कोनो करेन्ट लागि गेल होइ। फेर अपनाकेँ संयमित करैत हुनकादिस तकलथि आ फेर ओ तकैत रहि गेलथि ओ महापुरुषकेँ।'

धधकैत आगि : फुटैत कनोजरि

अन्हरिया राति सुनसान जंगल। बीच पक्की सड़क पर रातुक निरवताकें चिरैत ट्रकक अवाज गूँजि रहल छल। ड्राइवर ओहि सुनसान सड़क पर तीव्र गति सँ ट्रक आगा दौड़ा रहल छल।

ड्राइवरक बगलमे बैसल खलासीकें दूर सँ ओहि सुनसान निर्वाध जंगलमे कोनो परछाँही ट्रक दिस अबैत बुझएलै। खलासी भयसँ कम्पित स्वरमे बाजल, 'गुरुजी...................... देखियौ आगाँ सँ कियो आबि रहल अछि।'

ड्राइवर ट्रकक प्रकाशमे दूर स्पष्ट होइत महिला आकृतिक ध्यान सँ देखय लगैत अछि।

'गुरुजी, एहि सुनसान जंगलमे एतेक रातिमे महिला ?' खलासी घबराइत बाजल।

ड्राइवर गम्भीर भऽ गेल। क्षण–क्षण समीप अबैत आकृति पर नजरि स्थिर कएलक। टांग ओकर ब्रेक दिस बढ़ल।

'गुरु.............. रुकू नहि, अवश्य कोनो गड़बड़ अछि ....गति बढ़ा कऽ बढ़ि जाउ।'

ड्राइवर सोचमे पड़ि गेल। राजमार्ग ...... कोसो तक कोनो घर नहि ....चारु दिस बड़का–बड़का गाछ आ बोन–भांखुर। एम्हर तँ केओ दिनोमे नहि पयरे निकलैत अछि। एहनमे ई युवती........ । सलवार समीज सँ करोड़ी सेहो नहि लगैत अछि। लगपासक करोड़ी सेहो रातिमे जंगली जानवरक डर सँ असगर नहि निकलैत अछि। तहन ई अछि के ? एतऽ एतेक रातिमे कोना ? कतऽ सँ आयल आ कतय जा रहल अछि ? कोन समस्यामे अछि ?

ई सभ सोचिते–सोचिते ड्राइवर ट्रकक गति कम कऽ देलक।

ओम्हर खलासीक डर आओर बढ़ि गेल छल। ओ डर सँ कापय लागल छल। आ आतंकित स्वरमे पुन: ड्राइवर सँ कहलक जे, 'नहि रुकू , भागि चलु।'

मुदा ड्राइवर खलासीक गप्प पर ध्यान नहि दऽ ई निश्चय कएलक जे एहि युवतीक मदत करब। अत: ओ एकदम युवतीक लग आबि ट्रक रोकलक। किछु क्षण युवतीकें गौर सँ देखलक। युवती कम उमेरक छल। कम्पित स्वरमे युवती सँ पुछलक, 'तों के छें आ कतय जाए चाहैत छें ?'

युवती किछु सोचय लागल की, ओ कोना आबि गेल एहि सुनसान जंगलमे...................... अमावश्यामे.............ओकर कण्ठ अवरुद्ध भऽ गेलै। ओकरा बुझएलै अवश्य ई सपना अछि। आ कोना एतय आबि सकैत अछि, एते रातिमे.............अहि स्थानमे ....अवश्य ई सपने अछि। आ ई विचार अबिते ओकरा भीतर अदभूत रोमाञ्च भरि गेलै।

कहियो काल एना होइत छैक। सुतैत–सुतैत सपनाक अवस्थामे अचानक व्यक्ति एतेक जागरुक भऽ जाइत अछि की ओकरा ज्ञान भऽ जाइत छैक की ओ जखन चाहय, आँखी खोलि दुखद स्थिति सँ दूर जा सकैत अछि। आ जखन ओकरा विश्वास भऽ जाइत छैक, आँखि खोलब आ दुखक स्थिति सँ दूर हएब ओकरा अपना हाथमे छैक, तखन ओकरा अपना शक्तिक अभास होइत छैक जे हम जे चाही कऽ सकैत छी।

जखनकी अवस्था एकरा अधीनमे छैक तखन ओ किए नहि मनमानी करए ? अपन ईच्छाक पूर्ति करय। ककरो की बिगड़तै ? ककरो पतो नहि चलतै, ई सपने तऽ छैक।

तहन किएक नहि अपन उत्सुकता शान्त कऽ लिए ? एहि सँ बढ़ियाँ अवसर आब कहिया भेटत ? बाबुजी हरेक समय कहैत छथि जे हमर बुद्धि बड़ तेज अछि। हमरा चिकित्सक बनएबाक इच्छा छन्हि हुनक। एखने सँ एकर घरमे तैयारी भऽ रहल अछि । घरमे माय नहि अछि तऽ की बाबूजी आ भैया तऽ छथि। घरमे पुस्तकालय अछि। सिनेमा देखबाक, उपन्यास पढ़यक छूट नहि अछि। टीभी कार्यक्रम सेहो गिनल–चुनल देखबाक अवसर भेटैत अछि।

आगाँ बढ़क अछि तऽ एकाग्रचित भऽ उद्देश्य पूर्तिक हेतु लागबाक अछि। हुनका सभकें अहि सँ बेसी अपेक्षा नहि अछि। ओ अपनामे मस्त किताब सँ सटल रहैत अछि।

किछु दिन सँ एकटा शब्द बेर-बेर ओकर मस्तिष्कमे हथौड़ी जकाँ बजैर रहल अछि, 'की होइत छैक बलात्कार !' किए बलात्कारक बाद लड़कीकें आत्महत्या करय पड़ैत छैक, परिवार जन मुह नुकबैत रहैत अछि। एतेक सोचि ओकर बुद्धि हारि जाइत अछि। शब्दकोष छानि मारलहुँ मुदा अर्थ नहि भेटल ,एहन कोन जबरदस्ती एहन कोन बल–प्रयोग ? किछु बुझबामे नहि आबि रहल छल। ई की छैक। ओकर उत्सुकताक अन्त नहि छलैक। किए नहि आई सपना पूरा कऽ लिय ? ज्ञानो भेटि जाएत आ आत्महत्या सेहो नहि करय पड़त।

तीन वर्ष पूर्व पड़ोसक रितु आन्टी ओकरा अपना घर लऽ गेल छल आ बहुत वैज्ञानिक ढंग सँ ओ ओकरा 'फैक्ट टच लाईफ' के विषयमे बतौने छलैक। अचानक ओकरा सभकिछु नब लागि रहल छल जेना ओ जागि गेल हो। ओकरा किछु बेसी देखाई देबय लागल हो, किछु आवाज सुनाय लागल छल। किछु स्पष्ट बुझयमे आबय लागल छल। मुदा बलात्कार शब्द मात्र एक रहस्य बनल रहल। से एकरा जानय–बुझयकें एहि सँ बढ़िया अवसर अओर की भऽ सकैत अछि ?

ड्राइवर उत्साह बढ़बैत पुछलक, 'कतय जायकें अछि बेटी ? आउ, बैसि जाउ। आगा शहरमे छोड़ि देब। एतय कोसो तक कियो लोक नहि रहैत छैक।'

बहुत मुश्किल सँ जयन्ती किछु हिम्मत जुटा पौलक। ओ सोचय लागल किछु बाजय पड़त तऽ झूठ किए नहि ....। से बाजल, 'बाट भुतिया गेल छी लिफ्ट दऽ दीअ !'

'मुदा अहाँ एलहुँ कतय सँ !'

'घर सँ भागि कऽ एलहुँ अछि।' बिना किछु सोचने उत्तर देलक।

फेर देखलक दुनु व्यक्तिक उत्सुकता किछु शान्त भऽ गेल छल। से आगाँ बाजल, 'दिनभरि एहि सड़कपर चलैत रहल छलहुँ, जखन थाकि गेलहुँ तऽ एकटा गाछक जाड़िमे सुति रहलहुँ, एखन निन्न टुटल... बहुत डर... लागि रहल अछि।'

'से तऽ ठीक अछि मुदा जएबाक कतय अछि ?' ड्राइवर पुछलक।

एकर उत्तर ओकरा लग नहि छल। ओ चुप्प रहल।

'ठिक छै चलू , बैसू। शहर तक छोड़ि देब।'

ओ सोचय लागल की दुनु बीचमे बैसायत .... बाटभरि ओ सभ हमरा सँ मजाक करत..... बलात्कार करत आ हमरा बलात्कार कोना होइत छैक की होइत छैक, तकर जानकारी भेटि जाएत, मुदा से भेल नहि। दुनु सकुचि गेल आ ओकरा खिड़की लग बैसा देलक जयन्तीक डर भगाबय के लेल ड्राइवर एकटा अभिभावक जकाँ ओकरा उपदेश देबय लागल। शहर पहुँचला पर पुलिस चौकी लग उतारैत ओकरा माथ पर हाथ फेरैत कहलक, 'घर चलि जाएब.... बेह अहाँक अपन अछि.... अहाँकें नीक देखय वाला वेह सभ छथि..... ' कहि ट्रकमे सवार भऽ चलि गेल।

पुलिसक विषयमे जयन्ती सेहो बहुत किछु सुनने आ पढ़ने छल। ओ सोचय लागल की एखनो किछु नहि बिगड़ल। एखनो एतय काम बनि सकैत अछि। मुदा दूटा पुलिसकें देखि ओकर करेजक धक-धक्की बढ़ि गेल, हाथ पाएर ठण्ढा होबय लागल।

'के छैं... की काम छौं !'

'हम बाटे बिसरि गेलहुँ हएँ... एतऽ बैसि जाउ !'

दुनु पुलिस एक दोसर दिस देखय लागल।

जयन्तीक हृदय धक–धक करय लागल

की शायद आब ओकर उत्कण्ठाक अन्त होबय लागल अछि। ओ भय सँ काँपय लागल।

'की नाम छौ तोहर !'

'रुना' बुद्धि एतेक सजग छलैक की ओ अपन सही नाम तक नहि बतौलक।

बापकें नाम की छौ ? कतय रहैत छें ? की सोचै छें ? ओ ई सोचि कऽ एक के बाद दोसर फूसि बजैत गेल की पता ई सपना नहि होअय...... सत्य मिलत ? ओ अपन प्रियजनक लेल कतेक लज्जाक कारण बनि जाएत। नहि–नहि स्वयं मरि जाएत, मुदा अपन परिवारजन्यकें कोनो हालतमे बेइज्जति नहि होबए देत।

'लगैत अछि कोनो अपराधी अछि', एकटा पुलिस बाजल।

एखने बन्द कऽ दू डण्डा पड़तै तऽ, सत्य अपने उगिल देत।

'नहि–नहि' डरे जयन्तीक कण्ठ अवरुद्ध भऽ गेलैक। किछु क्षण अपनाकें नियन्त्रित करैत बाजल, 'अपराधी होइतहुँ तऽ स्वयं एतय अबितहुँ ? ९ कक्षाक विद्यार्थी छी। काका वकील छथि। हड़बड़ाहटमे एतेक सत्य ओकरा सँ बजा गेल छलै।

'लगैत अछि घर सँ भागि कऽ आएल अछि।'

दोसर पुलिस बाजल, 'नवालिग अछि एतय बैसय देब ठीक नहि अछि। बिना बातक बतंगड़ भऽ सकैत अछि।'

जयन्ती थकमकाइत नहुँए सँ बाजल,'हम घर नहि जायब' , कहऽ चाहि रहल छल हमरा सँग जे चाहैत छें से कऽ ले..... बलात्कार कऽ ले, मुदा नहि जानि ओकरा कोन संस्कार आबि कऽ ओकर मुह बन्न कऽ देलक।

'राति कऽ हम तोरा एतय बिना महिला पुलिसके नहि राखि सकैत छियौ। या तऽ तोरा चौकी जाए पड़तौक वा फेर नजदीकक धर्मशालामे, बाँकी काल्हि देखबै। आगाँ की करबाक छैक' , एक पुलिस बाजल।

जयन्ती चुपचाप धर्मशालामे आबि गेल। दोसर दिन कोनो तरहे जयन्ती धर्मशाला सँ निकलि आएल। जयन्ती आब एक साइकिल लग ठाढ़ तीन युवक सँग गप्प कऽ रहल छल। तीनू ओकरा ललायित नजरि सँ घुरि रहल छल।

जयन्ती सोझे प्रस्ताव रखलक, 'हमरा अहाँ सिनेमा देखाएब!' ओ सभ किछु सोचैत एक दोसर दिस देखऽ लागल। 'कि वस्तु छैक!'

'बिलाड़िक भागे सीक टूटल' दोसर हँसल।

'ककरा सँग देखब' तेसर पुछलक।

'अहाँ तीनू के सँग' ओकर उत्तर छल।

'आउ हमरा साइकल पर बैसि रहुँ , ओहिमे सँ एक गोटे बाजल

जयन्ती कने झिझकैत संकोच सँ बाजल, 'जी नहि हम पयरे चलब, आ ओ सभ सिनेमा हॉल दिस बढ़ि गेल।'

जखन तक सिनेमा शुरु नई भेल ताबत धरि शान्ति रहल। सिनेमा शुरु होइते मानू बिहारि आबि गेल। छीना झपटी शुरु भऽ गेल। ओ क्रमशः घबराहटिमे कखनो एकर तऽ कखनो ओकर हाथ हटबैत रहल। मुदा, अवस्था ओकर नियन्त्रण सँ बाहर होइत जा रहल छल। जखन एक हाथ ओकर सलवार दिस आ दोसर छाती दिस सरकय लागल तऽ झट सँ ठाढ़ भऽ गेल। फेर ट्वाइलेट जएबाक अछि कहि, जल्दी सँ बाहर निकलि आएल। दूटा युवक सेहो पाछु लागि गेल। किछु देरक बाद बाहर निकलल, आगाँ दूनु युवककें ठाढ़ देखलक। झट सँ फेर ट्वाइलेटमे घुसि गेल।

आ सिनेमा समाप्त होएबाक प्रतिक्षा करय लागल। सिनेमा समाप्त होइते भीड़क लाभ उठा कोनो तरहे ओतय सँ भागि गेल। आब ओ घर घुमैत भीड़मे सँ एक छल। ओकरा पता छलै, कियो ओकरा ताकि रहल छैक। भीड़मे अपनाकें नुकबैत अनजाने बाटमे ओ आगाँ बढ़ैत रहल। एखन तक ओ एकटा विचित्र भय सँ काँपि रहल छल, जेना कोनो चोरी कएने हो वा कोनो बड़का अपराध।

सपना शायद सत्य भऽ गेल छल। ओ पूर्णरुपमे सत्यकें झेलि रहल छल। स्वप्नक सुरक्षा नहि जानि कतय हेरा गेल छल। देखलक समीप मन्दिरमे आरती भऽ रहल छै। मन्दिरमे प्रवेश कएलक ओतय भीड़

छलै। ओहिमे ओ सम्मिलित भऽ गेल। भय सँ शरीर सुन्न भेल जाइत रहैक तएँ एकटा पायामे सटि कऽ आँखि बन्न कऽ लेलक।

कखन आरती समाप्त भेल आ लोक चलि गेल जयन्तीकेँ पतो नहि चललै। आँखि खुजलै तऽ एकटा साधुकें अपना दिस घुरैत देखलक। कोनो स्वचालित यन्त्र जकाँ आगाँ बढ़ल आ हुनकर चरण स्पर्श कएलक। ओकर गरा अवरुद्ध भऽ गेल रहैक। किछु बाजब ओकरा बसक बात नहि छलैक।

'तोहर मनकामना पूरा हेतहुँ............उठ! धैर्य सँ काम ले !'

जयन्ती उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओ साधुक आँखि दिस देखलक। एकटा विचित्र ज्वाला धधकि रहल छलै, ओहि साधुक आँखिमे। साधु ओकरा अपना पाछाँ अएबाक हेतु कहलक आ यन्त्रवत् हुनकर पाछु-पाछु जाय लागल। हुनक पाछु चलि मन्दिरक प्राङ्गण पार करैत ओ एकटा कोठरीमे प्रवेश कएलक। भितर घुसिते, द्वार अपने धड़ सँ बन्द भऽ गेल। ओ बन्न द्वारकेँ देखैत थकमका कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

'चलि आ !' पलटि कऽ देखलक तँ भीतरक दोसर प्रवेश द्वार पर ठाढ़ साधु ओकरा कहि रहल छल। झिझकैत मोन सँ ओ दोसर द्वार पार कएलक तऽ ओहो धड़ाक दऽ अपने बन्न भऽ गेल। ओ डेरा कऽ, बन्न द्वार केँ देखय लागल।

साधुक पुनः आदेशात्मक स्वर ओकरा कान सँ टकरएलै, 'चलि आ !' देखलक ओ आब भितर तेसर द्वार पर ठाढ़ छल। किछु क्षण ठाढ़ रहल।

भक्तिपूर्ण विश्वास सँ पुनः ओ आगा बढ़ल। धड़ाक दऽ तेसरो द्वार बन्न भऽ गेल। आब साधु चारिम द्वार पर ठाढ़ ओकर प्रतीक्षा कऽ रहल छल। जयन्तीक डर सँ हृदय धड़कय लगलै, गर सुखि गेलै। पैर काँपय लगलै। ओ सिनेह सँ भरि गेल की साधुक भेषमे कतेको राक्षस घुमैत अछि, मुदा की करत..... बेसी सँ बेसी ओतबे करत ने, जकर जिज्ञासा सँ एतय धरि आएल छी। से अपनाकेँ मजगुत कऽ द्वार पार कऽ गेल। देखलक आगाँ एकटा आओर द्वार छल, जतय साधु ठाढ़ छल। केबाड़ लग सँ धूप जड़बाक सुगन्ध ओकर तनमनमे व्याप्त होबय लागल। एकटा छोटका दीप सेहो जरैत देखि रहल छल। मदहोश वातावरणमे ओकर तनमन शिथिल होइत बुझेलै ओतय ओकर बुद्धि सजग होइत जा रहल छल। ओकरा विश्वास होइत जा रहल छल की एहि पाँचम द्वार केँ पार कएलाक बाद बाँकी सभद्वार ओकरा लेल सभदिनक लेल बन्द भऽ जाएत।

आ तखन साधुक फेर ओहने आदेशात्मक स्वर सुनाए देलक। जयन्ती हुनकर बात जेना नई सुनने हो। ओकर प्रज्ञा ओतय सँ भगवाक आदेश दैत हो एहन अनुभूति होइते घुमल आ जाही बाटें आएल छल ओम्हरे भागय लागल।

ओ भगैत जा रहल छल अज्ञान सँ ज्ञान दिस ! शून्य दिस चेतना दिस ! जागरण दिस ! शायद ओकरा एकटा जानकारी भेट गेल छलै। नहि ई ठीक नहि अछि।

अचेतन मनमे सेहो किछु जन्मजात संस्कार एहन होइत अछि, जकर सीमाकेँ उल्लंघन स्वप्नमे सेहो सम्भव नहि अछि । शायद ओकरा जानकारी भऽ गेल छलै की स्वप्न अपन अनुभवक आधारभूत घटना पर केन्द्रित रहैत अछि । स्वप्न सँ अज्ञानताक नाश नहि होइत अछि, ज्ञान नहि भेटैत छैक।

भौजी

सार्वजनिक पुस्तकालयक बोर्डपर नजरि पड़िते राधाक हृदयक गति एना भऽ गेलन्हि, जेना कोनो मशीनक ईन्जिन चलैत होइ।

ओ डेरायले नजरिसँ भौजीकेँ देखलन्हि। राधाकेँ डर रहन्हि, कहीं हृदयक धक-धकी भौजी नहि सुनि लैथ।

राधा पुरा एक महिनाकेँ बाद आइ पुस्तकालय आयल छली। आईएस्सी परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त भेलाक कारण मास दिन पुस्तकालय नहि आबि सकल छली। काल्हि परीक्षा समाप्त भऽ चुकल छल। भौजीकेँ आदेश रहन्हि जाधरि परीक्षा समाप्त नहि हैत ताधरि पढाइक अतिरिक्त किछु नहि। राधा सेहो पढाइकेँ प्रति पुरे समर्पित रहयकेँ प्रयत्न कएली। मुदा मन तैयो बेर-बेर पुस्कालयकेँ लग-पास मडराइत रहैत छलन्हि।

राधा देखलन्हि, भौजीकेँ चालिमे थोड़ेक गति आएल अछि। मुदा ओ जानि बुझि कऽ ओही गतिमे चलैत रहली, जाहिसँ भौजीसँ थोड़ेक पाछु रही आ मौका भेटिते एक नजरि हुनका देखली, जकरा लेल ओ मास दिनसँ प्रतिक्षा करैत रहल छली। हुनका विश्वास छलन्हि, ओ आइयो ओही गाछ तर नयन बिछौने हुनकर प्रतिक्षामे ठाढ़ हैत। ताहि विश्वासँ मनक सितार भन्न भनना रहल छल।

मुदा गाछपर नजरि पड़िते हृदयक रोमाञ्च करपूरक गोटी जेकाँ उड़ि गेल आ मनमे कतेको आशंका आ विचार हिलोरि मारय लगलन्हि। ओ ओतय नहि छल। किए ? भऽ सकैत अछि एक महिनासँ राधाकेँ नहि अएलासँ हुनका प्रति निराश भऽ गेल होइक। इहो भऽ सकैत अछि की कहीं बिमार भऽ गेल होइ।

६ महिना पहिने भौजी सँ एहि पुस्तकालयकेँ सदस्यता लेने छली आ तहियेसँ राधा सेहो भौजीसं पुस्तकालयमे आवय लागल छली। एक दिन ओ युवक अहि गाछक निचा ठाढ़ देखाइ देने छल। आ ताहिकेँ बाद तऽ दिनचर्या बनि गेल छलै। आकर्षक व्यक्तित्वक धनी ओ पहिले नजरिमे राधाकेँ प्रभावित कएने छल।

मौन प्रेमक प्रस्ताव राधाकेँ हृदयमे बैस गेल छल ओ युवक।

राधा आ भौजीकेँ संगे-संगे देखि ओ थोड़े संकुचित भऽ चोर दृष्टिसँ क्रमशः राधा आ भौजीकेँ देखैत रहैत छल जे कखनो राधाक नजरि पड़ि जाइत तऽ ओ युवक अपन दृष्टि दोसर दिश घुमालैत छल। एक महिनासँ ओहि युवककेँ देखबाक कौतुहलता आ ओकरा भेटाबाक विश्वास, मुदा सुनसान ठाढ़ ओहि गाछकेँ देखि असहय पीड़ा भेल राधाकेँ। आइ ओकरा ओतय नहि होएब राधाकेँ लेल कोनो आघात सँ कम नहि छल। हृदयक टीस आँखिमे नोर बनि छलछलाय लागल रहैक मुदा ओहि नोरकेँ पिब कहुना अपना पर काबु कएलन्हि आ अपन बेदनाकेँ उजागर नहि होबय देलथि। सहज होबएकेँ कोशिस करैत भौजीकेँ पाछु-पाछु पुस्तकालयमे प्रवेश कऽ गेली।

भौजी पुस्तक फिर्ता कऽ अलमारीमेसँ दोसर पुस्तक खोजय लगालथि। राधा सेहो पुस्तक खोजबाक अभिनय करय लगली, मुदा हुनक मनोभाव त.....।

'राधा, राजकमल गोविन्द झा रामानन्द रेणुकेँ सम्पूर्ण किताब हम पढि चुकलहुँ आब डा. धीरेन्द्रकेँ पढबाक इच्छा अछि' भौजी डा. धीरेन्द्रकेँ कविता संग्रह 'हैंगरमे टांगल कोट' केँ अपन हातमे उलटबैत कहली तऽ राधा चुप भऽ एक मौन स्वीकृति दऽ देली।

'अहाँ डा. धीरेन्द्रकेँ पढि रहल छी ?' अनायासे एक अपरिचित युवककेँ स्वर सुनि राधा आ भौजी एक्कहि संग पाछा घूमि देखलथि तऽ राधाकेँ आश्चर्य आ रोमाञ्च एक्कहि सँग झकझोरि देलकन्हि आ अपलक ओ देखिते रहि गेली।

हाथमे पुस्तक लेने उएहे युवक ठाढ़ छल। 'इ लऽ लिअ, डा. धीरेन्द्रकेँ उपन्यास छन्हि, 'भोरुकवा' विद्वान सभक कहब छैक एकरा जतेक बेर पढू ततेक नव बात भेटत' ओ बाजल।

आगा भौजी ठाढ़ रहथि तएँ भौजीए ओ पुस्तक हुनका हाथ सँ लेलन्हि। राधा अपन प्रसन्नता नुकेबामे जेना असमर्थ भऽ रहल छली, अपनाकेँ सामान्य करबाक हेतु भौजीकेँ हाथसँ 'भोरुकवा' किताबकेँ झपटि लेली

आ बहुत तेजीसँ पन्ना उल्टाबैत अपन मनोभाव कें रोकबाक प्रयास करय लगली। तखने हुनक नजरि एक मोडल कागतपर पड़लन्हि जे पुस्तकक कें भितरमे छल ओ नजरि उठा कऽ युवक दिश देखली, मुदा युवक तऽ पुस्तकालयसँ बाहर जाइत छल।

भौजी पुस्तक राधाकें हाथसँ लऽ ओकरा अपना नामसँ जारी करबा लेली।

घर घुरैत काल राधा अपन भितरमे एक प्रकारक घबराहट अनुभव करैत रहली। हुनका विश्वास छलन्हि, पुस्तक भित्तर राखल ओ मोडल कागतमे हुनका लेल कोनो संदेश छिपल छल। हुनका भय रहन्हि यदि तेजतर्रार भौजी ओकरा देख लेती तऽ की हैत ?

ओना राधा पर आंच आएबाक कोनो संभावना नहि छल। हुनका विश्वास छलन्हि की ओइ पर हुनका लेल कोनो सम्बोधन नहि हैत कारण ओ युवकक कें राधाक नामो नहि बुझल छन्हि। यदि भौजी ओइ कागजकें देखबो करती तऽ सन्देहकें तऽ कोनो प्रश्ने नहि अछि।

राधाक मोन तऽ इएह चाहि रहल छल, की भौजीकें हाथसँ पुस्तक ली, मुदा हुनका इहो सोचि भय भऽ रहल छल की यदि भौजीकें सन्देह भऽ गेलैन्हि की ? ओ धीरेसँ भौजी दिस देखली, जे पुस्तकक कें दहिना हाथमे धएने राधाकें सोचसँ बेखबर आगा बढि रहल छली।

घर पहुँचला पर राधा आओर बेसी व्यग्र भऽ गेल छली। सोचि रहल छली जे कोनो तरहे पुस्तक हाथ लागि जाय तऽ पता चलत हुनक सोच सही छैक वा मात्र भ्रम भऽ गेल अछि।

भौजी कें प्रकृति कनी गम्भीर छन्हि आ ओ अपन प्रत्येक क्रियाकलापकें सीमा तय कऽ कऽ रखने छथि, जेकरा ओ नहि स्वंय उल्लंघन करैत छथि आ नहि केकरो द्वारा कएलगेल सहन करैत छथि। आवश्यकता सँ बेसी हँसी मजाक हुनका कनिको पसिन नहि छन्हि। ओना इ नहि छैक जे हुनकामे इ परिवर्तन भैऐकें मरलाक बाद एलन्हि अछि। ओ पहिनहि सँ एहने छथि।

विवाहक २ महिनाकें बाद भैयाक मोन खराब भेल रहन्हि। भैयाकें दिन-दिन देह गलल जाए लगलन्हि। धरान लऽ जाए पड़लन्हि, ओतय डाक्टर कहलन्हि, 'ब्लड क्यान्सर भऽ गेल छैक।'

जाहिया तक भैया जिवित रहलाह भौजी सदैव इएह प्रयास कएलन्हि, की हुनकर जीवनमे कोनो प्रकारक अभाव नहि रहैक। भैयाकें रेखदेख ओ स्वंय करथि। साँझखन भैयाकें घुमाबय लजाथि। पहिने-पहिने तऽ भैया पैदले चलथि, मुदा किछुए दिनक बाद आशक्त भऽ गेलापर भौजी हुनका व्हील चेयर पर लऽ जायकें शुरु कऽ देलन्हि। भौजी भैयाकें सन्तुष्टीकें लेल हरेक समय मुस्कुराइत रहैत छली मधुर आ स्नेहिल शब्दकें वर्षा कऽ हुनकर पीड़ाकें हरि लेबाक लेल प्रयास करथि। राधा अपन माय बाबुकें संगे स्तब्ध भऽ ओ सशक्त महिलाकें तकैत रहि जाइथि जे दुःखक अथाह समुद्रकें सामने पाबि कऽ सेहो भैयाक हेतु मुस्कुराइत आगा बढि रहल छली। मुदा भैयाक शरीरसँ प्राण निकलिते भौजी पस्त भऽ गेली।

दुःखक असीम पीड़ा सँ छटपटाइत भौजीकें सम्हारयमे सभ असमर्थ भऽ रहल छल। कनैत-कनैत अन्तत: भौजी बेहोस भऽ गेल छली।

भैयाक मरलाक बाद भौजीकें बाबू भऽ गेल रहथिन बाबुजी, ससुर नहि। ओ अपन कमजोर कन्हा पर भौजीकें जिम्मेवारी उठा लेलन्हि। बड़का भैया आ भौजी जे काठमाण्डूमे रहैछथि, ओ बाबुजीकें आगा प्रस्ताव राखने रहथिन की ओ, भौजीकें अपनासंग लऽ जाऽ चाहैत छथि मुदा बाबुजी साफ-साफ मना कऽ देने रहथि। हुनका लेल राधा आ पुतौहुमे कोनो अन्तर नहि छल।

भौजीक वेदना कम करबाक उद्देश्यसँ बाबुजी भौजीकें पुस्तकसँ मित्रता करबाक सल्लाह देने रहथिन्ह।

'बेटी पुस्तकसँ बढिया आओर कोनो मित्र नहि भऽ सकैत अछि। ओइमे हरेक समस्याकें निकास सेहो भेटि सकैत अछि। पुस्तकसँ जतय हमरा संकटसँ जुझयकें प्रेरणा मिलैत अछि, ओतहि ओहिमे हरेक समस्याकें समाधान सेहो भेटैत अछि। मन उदास अछि तऽ व्यङ्ग रस पढि ली, किछुवे देरमे हँसयकें लेल विवस भऽ जायब। यदि पुस्तक सँ प्रेम भऽ जाय तऽ जियब असान भऽ जाएत।'

बाबुजीक उपदेश भौजीकेँ पुस्तक प्रेमी बना देलकन्हि। भौजी सार्वजनिक पुस्तकालयकेँ सदस्यता लऽ लेली हुनकेँ संगे रहि कऽ राधामे सेहो पढ़यकेँ शौख जागि गेलन्हि आ ओ सेहो पुस्तकालय जाय लगली।

भौजी कहियो कोनो पुस्तक पढ़य सँ अकच्छाइत नहि छली बरु, जे पुस्तक पढ़य शुरु करैत छली ओकर एके बैसारमे पढ़ि जाइत छली। बाबुजी तऽ किताबी कीड़ा छलथि। अइ दुआरे भौजी बाबुजीसँ ओइ पुस्तकपर विशेष रुपसँ परिचर्चा करैत छली। कहियो ओ लेखककेँ दूरदर्शिता पर अचम्भित भऽ कऽ ओकर लेखन शैलीकेँ सराहना करैत तऽ कहियो लेखककेँ विचारसँ कुंठित भऽ ओकर तीव्र आलोचना करथि।

घरमे भौजीकेँ बेसीसँ बेसी ध्यान राखल जाइक। भौजी स्वयं कहियो अपन साउस, ससुर वा राधाकेँ भावनाकेँ अपमान नहि कएने छली। घरक पुरा जिम्मेवारी उठा रखने छली। कहियो माँ भौजीकेँ कर्तव्यनिष्ठासँ गौरवान्वित होइथि तऽ कहियो हुनकर उज्जर आँचरकेँ देखि चुपचाप नोर बहालैत छली।

राधाकेँ एतेक साहस नहि छलन्हि की ओ भौजीसँ मजाक कऽ ली अन्यथा ओ अवश्य ओहि पुस्तककेँ छिन लितथि ताकि कोनो तरहे ओइ कागतकेँ पुस्तकमेसँ निकालि एकान्तमे पढ़ि आश्वस्त भऽ सकती। एखन ओना किछु करब सम्भव नहि छल।

राधा बरन्डामे चलि अयली। माँ आ बाबुजी बड़का भइयाकेँ ८ वर्षीय पुत्रकेँ लेबय काठमाण्डू गेल छलथि। भौजीकेँ बच्चासँ बहुत लगाव रहैत छलन्हि। ताहि दुआरे ओ सदैव छुट्टी शुरु होइते माँ बाबुजीसँ आग्रह करैत की ओ काठमाण्डू जाथि आ बड़का भइयाकेँ बच्चाकेँ लऽ कऽ आबथि अहि सँ बेसी किछु नहि। भौजीकेँ इच्छा रखबाक हेतु माँ बाबुजी काठमाण्डू गेल रहथि।

'राधा', अचानक भौजीकेँ अवाज सुनि कऽ राधा चौक पड़ली। अहि पुस्तककेँ हम पढ़ि लेने छी अहाँ, चाही तऽ पढ़ि सकैत छी' भौजी बरन्डामे राखल टेबुलपर पुस्तक रखथि कहलथि, आ तेजीसँ भितर घुमि गेलथि।

'भोरुकवा' केँ पुनः अपन समिप पाबि राधाकेँ हृदयक धड़कन केँ गती बढ़ैत चलि गेल। ओ झपटि कऽ पुस्तककेँ उठा लेली आ तेजीसँ पन्नाकेँ उलटावय शुरु कऽ देली, किताबक बिचमे मोड़ल राखल कागज ओहिना नजरि आएल।

राधा ओकरा खोलि पढ़य लगली। हुनकर अनुमान सही छल। ओ प्रेम पत्रे छल आ सम्बोधन सेहो मोहक आ आश्चर्यजनक छल।

'सुनु' ।

हम काल्हि साँझ ६ बजे रंगभूमि मैदानमे अहाँकेँ प्रतिक्षा करब। आशा अछि अहाँ अवश्य आएब।

राजन।

राधा क्षणभरिकेँ लेल ओइ पत्रकेँ अपन छातीसँ लगा लेली। फेर ओइपत्रकेँ निचा लिखल नामकेँ चुप्पेसँ चुमलाक बाद मनकेँ कठोर करैत पत्रकेँ टुकरा-टुकरा करैत सड़क पर फेक देली।

ओहि राति भावना आ विचारक बीच उड़ान भरैत रहली राधा, आँखिसँ निन्न पुरा हेरा गेल रहन्हि।

दोसर दिन साँझ ६ बजे, रंगभूमि मैदान जायब उचित हैत की नहि, जाएब तऽ की कहबै, ओ की कहता। कखनो माँ, बाबुजी आ भौजीकेँ की कहबै एहने सोचमे ओ क्षणभरि केँ लेल सेहो नहि सुति सकली।

यदि गेलहुँ तऽ भऽ सकैत अछि राजन हुनका एक अवारा लड़की सम्झय लागय जे एकबेर बजबिते भागिते चलि अबैत अछि आ यदि नहि गेलहुँ तऽ सम्झय नहि लगथि जे राधाकेँ हुनका प्रति कोनो लगावे नहि छन्हि आ ओ अपना लेल कोनो....।

राजन बिना किछु कहने राधाकेँ हृदयमे अपन स्थान बना लेने छल।

बितल कए महिनासँ राधा अपन अन्तर मनमे राजनकेँ लेल एक निश्छल स्नेहकेँ अनुभूति कऽ रहल छली। राजन अपन प्रतिक्षा सँ ई सिद्ध कऽ देने छल, की राधा हुनका लेल बहुत महत्व रखैत होइ आ ओहीक परिणाम छल हुनक प्रति सम्वेदनशील रहयवाली राधाकेँ हृदय राजनकेँ पक्षमे निर्णय लेलक।

राजनसँ भेटबाक निर्णय लेलाक बाद राधाकेँ किछु शान्ति भेटलन्हि, मुदा रंगभूमि मैदान तक जायकेँ लेल भौजीकेँ आदेश आवश्यक छल। पता नहि भौजी मानती वा नहि, फेर कही खिसिया कऽ मना नहि कऽ दैथि।

माँ काठमाण्डू गेल छली नहि तऽ राधा माँ सँ कोनो ने कोनो तरहे जायकें आदेश मांगि लितथि, मुदा की अनुशासन प्रिय आ अपन जिवन शैलीकें शालिनताक भितर बान्हि कऽ राखयवाली भौजी अहि तरहे हुनका कोनो युवक सँ भेटवाक आदेश देती ?

दुपहरियामे खायकें टेबुलपर भौजीकें संगे बैसैत राधा ई निर्णय लेली की भौजीकें निसंकोच अपन मनक बात बतादेती आ यदि भौजी तमसा जेती तऽ तत्काल अपन गल्तीकें लेल क्षमा सेहो मांगि लेती। भौजीकें बतौने विना जायब संभव नहि छल।

अत: ओ भौजीसँ आदेश लेवयकें लेल उचित शब्द खोजिए कऽ रहल छली की अनायसे भौजी पुछि बैसली 'राधा, अहाँसँ किछु पुछय चाहैत छी ?'

'जी भौजी'

'अहाँ ओ पुस्तक भितर लिखल पत्रकें पढ़लियै अछि ?'

जी, राधा ई जान्हि कऽ चौंक गेली की भौजी सेहो पत्रकें पढि लेने छली।

जी हँ, ओ डराइते उत्तर देली।

'अहाँकें नजरिमे राजन केहन छथि ?'

जी, राधा पुन: चौंक गेली आ थरथराइते स्वरमे मात्र एतबे कहि सकली 'ठीके छैक।'

फेर तऽ अहाँकें नजरिमे कोनो खरावी छैक राधा ?

नइ-नइ ठिक नहि बहुत निक छैक, कहि राधाकें मुँहसँ ई शब्द सुनि भौजीकें चेहरा... आ राधा सेहो.. पहिने कहियो भौजी आ राधा एहन विषय पर चर्चा नहि कएने छली, इएह कारण छलैक जे दुनुकें चेहरापर संकोच आ लज्जाकें एक्के तरहक भाव छल आ राधाकें हालत तऽ एहन छलन्हि जे ओ माथ झुका कऽ बैसयकें लेल विवश छली। भौजीकें चेहराकें ध्यानसँ देख कऽ, हुनकर मनोभावकें सही अन्दाज लगाबयमे असमर्थ भऽ रल छली।

'किछु दिन अहाँ पुस्तकलय नहि अएलहुँ, तखन ओ हमरा सँ गप्पो कएने रहथि। हुनकर गप्पसँ ओ भद्र आ बुद्धिमान छथि से बुझाएल।

जी, राधा चुपचाप सुनैत रहली।

राधा, आइ अहाँ रंगभूमि चलि जाउ।'

जी.., राधाकें विश्वास नहि भऽ रहल छल, जे भौजी एतेक सहजतापूर्वक जाए देती।

हँ, राधा, हम अपना हिसाबे हुनका परखि लेने छी मुदा अहाँक राय सेहो बहुत आवश्यक अछि। अहि विषय पर बाबुजीसँ अहींकें बात करय परत। ओना अहाँ हुनको सेहे कहबन्हि जे जल्दीबाजी मे निर्णय नहि लैथि। खुब सोचि बिचारि कऽ निर्णय लैथि। अपना घरक लोकसँ सेहो गप्प कऽ लैथ एना नइ होइ जे.....।

'जी..' राधा माथ झुकौने भौजीकें बात सुनि रहल छली।

हम जनैत छी राधा की अहुँकें ई सभ बड़ उटपटांग लगैत हैत। हँ की नहि ? हम स्वाभिमानी, कर्तव्यनिष्ट आ शालिन तऽ छी, मुदा रुढीबादी नहि छी। हमरा लगैत अछि प्रत्येक महिलाकें अपन जिवन पर पूरा अधिकार होइत छैक। रुढीवादी परम्पराकें चादरि ओढि कुहरैत पुरा जिवन जिवाक की औचित्य ? तएँ अहाँ हुनका परखु आ यदि अहाँकें ओ बढियाँ लगथि तऽ विना संकोच विना हिचाकिचाहट अहि विषयपर माँ आ बाबुजीसँ बात करब। सभ बात अहिकें करबाक अछि कहि कऽ भौजी अपना रुम दिस चलि गेली।

राधाकें मोन खुशी सँ नाचय लागल । भौजी हुनका पसिनक बात कहि हुनकर मनोबलकें आओर बढा देने रहथि। आब भौजीकें आदेशानुसार हुनका परखयकें मात्र छलन्हि।

साँझ खन राधा निर्धारित समय सँ किछु पहिने तैयार भऽ रंगभूमि पहुँच गेली मुदा ओहु सँ पहिने राजन रंगभूमि मे बेचैनी पूर्वक इम्हर ओम्हर घूमि रहल छल, देख कऽ राधा एकटा गाछक पाछा नुका गेली आ हुनका देखय लगली। कढ़ाहिदार कुर्ता आ पाइजामा पहिरने आन दिनसँ बेसी आकर्षक लागि रहल छल। हुनकर नजरि प्रतिक्षासँ व्यग्र चारुभर ताकि रहल छल। कायबेर घुमिते-घुमिते ओ रुकि गेला। झुकि कऽ

जमिनसँ एकटा दूभि उपर उखारि लैथि आ ओकरा धीरेसँ कनि दाँतमे दबालथि आ घुमा कऽ हाथमे नचावय लगथि आ फेर वएह प्रतिक्षा..... ।

इ उपक्रमकेँ कतेको बेर चलैत देखलाक बाद अपन भावनाकेँ संयम रखबाक प्रयास करैत राधा धीरेसँ राजनकेँ सोझा आबि ठाढ भऽ गेली। लाजे मूडि गोतने पएरक अंगूठासँ जमिन खोदय लगली। ओ चाहियो कऽ अपन माथ उठा कऽ हुनका दिस नहि देखि पाबि रहल छली। मनमे एकटा उदवेग, समाजक लोक लाज, इहो पहिलबेर.... । अहाँ..... अहाँ एतय कोना ? आश्चर्यसँ भरल हुनक ई प्रश्न सुनि कऽ राधा चकित होइत अपन मुँह उठेलन्हि तऽ राजनकेँ चेहरा पर आश्चर्यक भाव देख ओ स्तब्ध रही गेली। राजन, 'ओ नहि अएली ? अहाँक भौजी ......।

राधा नहिमे मुँह हिला देली।

'किए ?'

ओ हमरे पठा देलन्हि। ताकि हम हुनका अपन राय दऽ सकियन्हि।

ओह.....किछु झुँझुलाहट भऽ रहल मुदा शान्त स्वरमे।

की ५/६ भेटघाटक बाद ओ स्वंय कोनो राय नहि बना सकली ? देखु राधाजी अहाँकेँ अएने हमरा कनियो खराब नहि लागल अछि, मुदा पहिलबेर हुनका बजेबाक कारण महत्वपूर्ण बात छल। आइ हुनका सँ एहन बात कहितियन्हि, जाहि सँ हुनका बहुत खुशी होइतन्हि से ओहि खुशी देखय सँ हमरो बञ्चित होवय परि रहल अछि।

'की ओ बात हमरा नहि बताओल जा सकैत अछि ? राधा जल्दीए हुनकर अटपटाङ व्यवहारकेँ कारण जानि लेवय चाहैत छली।

'किया नहि अवश्य बताओल जा सकैत अछि। बात.... बात इ अछि की हमर माय बाबु हमर विवाहक हेतु मानि गेलथि। ओना तऽ ओ विधवा विवाहक विरुद्ध कहियो नहि छलथि, मुदा अपने घरमे एकटा विधवा पुतहुकेँ रुपमे स्वीकार करावयमे संकोच भऽ रहल छलन्हि, चुकीं हम मनावयमे सफल भऽ गेलहुँ।'

राजन आओर बहुत किछु कहय चाहि रहल छला, मुदा राधा स्तब्ध ठाढ छली। मानु हुनकर शरीरकेँ सम्पूर्ण शक्ति विलिन भऽ गेल होइ आ ओ सुखल पात जकाँ हावामे उधिया रहल होइथि। मस्तिष्क अपन काज करब बन्द कऽ देने होइ, कानमे यतेक हल्ला भऽ रहल छलन्हि की राजन द्वारा ओहि सँ आगा कहल गेल शब्द मे सँ एकहु शब्द कानधरि नहि पहुँच पाएल छल।

राजन हुनका सँ नहि भौजी सँ....।

ओ मात्र भौजीकेँ प्रतिक्षा करैत छला इ जानि राधाकेँ अस्तित्व तहस नहस होवयकेँ लेल उद्यत भऽ रहल छल।

भौजी दुपहरीयामे जे कहने छली ओ राधाकेँ लेल नहि अपना आओर राजनकेँ लेल। भौजी बहुत विश्वासक संग राधाकेँ इ जिम्मेवारी सोपने छली की ओ माँ बाबु जी सँ अहि विषयपर बात करबाक हेतु।

राधाक लेल भौजीकेँ यैह विश्वासक मान राखब अति आवश्यक भऽ गेल छलन्हि। अहि विचारकेँ अबिते राधा अपना पर काबु पएबाक प्रयत्न करय लगली आ ओहि परिस्थिति सँ उवरबाक।

भौजीकेँ सुनसान जिवनमे सतरंगी रंग भरबाक लेल उद्यत ओहि महान युवककेँ आगा कानय सँ हुनकर महानताकेँ अपमान सेहो भऽ जायत जे राधा सोचने छली , ओ युवक कहियो नहि सोचने छल। अहिदुआरे राधाकेँ अपन श्रद्धेय पुरुष प्रति हृदयमे उत्पन्न सिनेह भावनाकेँ बहुत निष्ठुरता सँ दबा देवय परलन्हि।

राधा अपन सपना टुटय सँ बेसी प्रसन्न छली जे हुनक अपन प्रिय भौजीक लेल त्याग करयकेँ अवसर भेटल अछि। ओ कोनो किम्मत पर अहि अवसरकेँ गमावय नहि चाहैत छली। भौजी चाहने छली की ओ राजनकेँ परखि कऽ निर्णय ....।

राजनकें परखयकें प्रश्ने नहि उठैत छल, हुनकर दृष्टीमे हुनक जे योग्यता बुझाइत छलन्हि ओकरा शब्दमे कहव राधाक लेल मुश्किल छल। अपनाकें सम्हारि राधा हुनका सँ विदा लऽ आगा रहल रिक्सावालाकें इसारा कएलन्हि। तखने राजन एकटा प्रश्न पुछलन्हि 'राधा जी अहाँ कहियो केकरो सँ प्रेम कएने छी !'

'प्रेम!.. नहि.......'

बहुत सफाइ सँ झुट बजैत राधा रिक्सामे वैसि रहली। आ राजनकें प्रस्तावकें स्वागत करैत शुभकामना दैत रिक्सावाला सँ रिक्सा बढावयकें इसारा कएली। रिक्सा चलि परल।

चिड़ै

'यदि नलिनी, अहिं सन होशियार रहितै, अहाँ कतेक सुख दैत छी, आ एकटा ओ छथि, जे हमर दूटा बच्चाकेँ माय भऽ कऽ मात्र रहैत छथि। मनोजक स्वरमे विवशताक अभास नई छल। मात्र एकटा इच्छा छलन्हि, 'यदि नलिनी सेहो उषा जकाँ सुन्दरि, होशियार आ सुख देबय वाली रहितए तऽ सम्भवत: उषाकेँ आँइखो उठा कऽ नहि तकतैथि।

उषा दिस एकटक देखैत मनोज पुछलन्हि 'की, नलिनीकेँ विषयमे सोचि रहल छी !'

'नई, हम किए सोचु हुनका विषयमे ! हम तँ हुनका देखनो नहि छियन्हि', उषा मुस्कैत मनोजक गर्दैनमे अपन बाँहि लेपटा देलन्हि।

मनोज सोचय लगलथि जे, पढ़ल लिखल रुपवती उषाकेँ कार्यालयमे डेग धरिते सभक आँखि हुनकेपर नाँचि उठैत हैत, कतेक मजामे रहैत हैत हिनकर हाकिम। जखन मोन करैत हेतन्हि लग बजा अपन आँखिक पियास मेटा लैत हेताह। ओना उषा ओहन नहि छथि, ओ मात्र हमरा चाहैत छथि।

ओहि दिन मनोज बहुत प्रशन्न रहथि। कए दिनक बाद उषाक टेलिफोन आएल रहैक आ हुनका अपन घर बजौने छल।

उषा अपन घरकेँ खूब सजौने छली। मनोजक पसिनक सिंगार कएने छली, पसिनक खाना सेहो बनौने छली।

मनोजकेँ घर पहुँचलापर उषा गप्पक क्रममे पुछलन्हि, 'एना कहियाधरि चलत !'

'की !' मनोज सहजहिं जिज्ञासा कएलन्हि।

'की, एहने सम्बन्ध रहत हमरा सभक !'

'तएँ की गृहस्थीकेँ झंझटिमे पड़य चाहैत छी ! धुर बताहि तहन एहन उल्लासमय क्षण नहि रहत आ ने एहन हल्लुक वातावरण' मनोज हरेक शब्दपर जोड़ दैत बजलथि।

प्रतिक्रियामे उषा किछु नहि बजली।

'तमसा गेलियै ! हम तऽ सम्झा रहल छलहुँ। ठीके छै, कोनो ने कोनो बहन्ने नलिनीकेँ डाइवोर्स दऽ देबै, ...आब उठू।'

कए दिन सँ मनोज सँ भेट नहि होएबाक कारण उषा मने-मोन टूटय लागल छली। नहि कार्यालयमे मन लगन्हि आ ने घरमे। ओहि दिन बहुत व्याकुल भेलापर आलमारीसँ एल्बम निकालि कऽ पन्ना उन्टाबय लगली। उन्टबैत-उन्टबैत एकटा फोटोपर नजरि स्थिर भऽ गेलन्हि।

अही सोफापर दूनु बैसल रहथि आ आटोमेटिक क्यामरा एडजस्ट कऽ जल्दि सँ उषाकेँ माथ अपन कन्हापर धएने रहथि मनोज आ ओम्हर 'क्लिक'।

'कतेक स्वभाविक छैक ई चित्र !' ओहि दिन अनायासे मनोजक मुँह सँ निकलि गेल रहन्हि, 'यू लुक वन्डरफूल.... लाइक ए ब्राइड'

'तँ बना लिअ ने।'

जँ सम्भव होइतै.... आ मनोज चुप भऽ गेला।

'किए चुप भऽ गेलियै ! नलिनी सँ डेराइत छियैक।' उषा जानि-बुझि कऽ बात उठौने रहथि।

'नलिनी सँ तँ नहि मुदा डर तँ अछिए। लोक की कहत !'

'लोक ! ओ तऽ एखनो कहैत हैत' उषा कटाक्ष कएली।

तिर निशानापर लागल रहैक। मनोज तिलमिला कऽ रहि गेलथि। किछु काल तक खिड़की सँ बाहर देखैत रहलथि आ किछु कालक बाद बजला, 'अहाँ हमर गर्ल फ्रेण्ड नहि, अहाँ तऽ प्राण छी।'

मनोजकेँ स्वभाव बड़ विचित्र छलन्हि। सदिखन ओ उषाकेँ ओझराहटिमे धऽ दैत छलाह। ओहि दिन मुसलाधार पानि पड़ैत रहैक। एकाएक मनोज उषाक घर पहुँच गेलाह आ कहलन्हि, 'चलू समान किनै छी।'

'एतेक पानिमे !'

'हँ, दोकानमे भीड़ कम हेतै।' आ हँसय लगलाह। कहियो कोनो पावनि दिन चौकपर भीड़ होइतै तँ ओइ भीड़मे मनोज उषाकेँ लऽ कऽ हेरा जाय चाहथि। जाहि सँ हुनक गतिविधि सँ लोक अनजान रहैक आ कहियो अबेर रातिधरि खाली सड़कपर घुमैत रहबाक आनन्द लेबय चाहथि। कतेक विरोधाभास छल।

कोनो-कोनो दिन तऽ मनोज आबि कऽ घण्टो सोफापर सुतल चुपचाप अपनेमे हेराएल रहैत छलाह। तखन उषा सोचथि 'शायद बिजनेसकेँ कोनो चक्कर हेतैक वा हिनकर ओझराहटि नलिनी नहि बुझैत हेतीह।

चौंक कऽ उषा घड़ी दिस तकली। एखन देर छन्हि हुनका आबय मे, हम नहा लैत छी। तखने डोरबेल बाजि उठल।

एहि समयमे केँ आएल सोचिते द्वार खोलि कऽ देखलन्हि तऽ मनोज ठाढ़ छलाह।

'अहाँ कार्यालय सँ चलि एलियै।' मनोज अबिते उषा सँ प्रश्न कएलन्हि।

'गेबे नहि केलियै।'

'किए !'

'अहाँ जे आबय बला छलहुँ।'

'से अहाँकेँ पहिनहि सँ पता छल',मनोज पुछलन्हि।

हँ अहाँकेँ पसिनक खाना बनौने छी। आई कोनो बहन्ना नहि चलत, आइ एतै खाय पड़त-कहि बाथरुममे चलि गेली।

लाल रंगक पारदर्शी साड़ीमे ओ बहुत सुन्दर लागि रहल छली। मनोज पत्रिकाक पन्ना उनटा रहल छलाह। सेन्टक सुगन्ध सँ उषाक समिपताकेँ आभास होइते मनोज मुड़ी उठा कऽ देखलन्हि आ लपकि कऽ हुनका अपन बाँहिमे कसि लेलन्हि।

ओम्हर नलिनीकेँ फुर्सत कहाँ छलन्हि ! ओ मनोजक व्यस्ततापर अपन तामस देखाबय लगैत छली। महिनो नीक जकाँ गप्प नहि करथि, मनोजक ई उपेक्षा हरेक कार्यमे देखाइत छल। अपन आदत अनुसार घर अबिते स्कूलकेँ बच्चा जकाँ घड़ी, पेन, चश्मा इम्हर ओम्हर राखि दैत छलथि। मुदा दोसर दिन सभ व्यवस्थित रहैत छल। यदि नलिनी तमसा जाइत तऽ कोनो समान तकैत-तकैत मनोजक धैर्य टूटि जाइत छल।

नलिनी नुका कऽ सभ चिज देखैत रहैत छली, आबि व्यवस्थित कऽ दैत छली आ आँखिए आँखिमे सल्लाह भऽ जाइत छल।

'की सोचि रहल छी !' उषाक प्रश्नपर मुस्कैत मनोज हुनका दिस देखैत बजला, 'अहिंक विषयमे, कतेक काज करैत छी अहाँ ! एकटा नोकरनी राखि लिअ ने।'

आइ काल्हिक पढ़ल लिखल लड़की नोकरी सेहो करैत अछि। घरकेँ काम आ उपर सँ घर बला, साउस, ननदिकेँ उलहन सेहो सहैत रहैत अछि।

'तएँ अहाँ विवाह नहि कएलहुँ !' मनोज पुछलन्हि।

'अहाँ सोचय केँ अवसर कहाँ देलहुँ' ई कहि मनोजकेँ अपना दिस खिंच लेलन्हि।

नलिनीक यादकेँ मनोज बिसरय चाहैत रहथि। तएँ हुनका अपना सँ अलग कऽ बजलथि, 'भूख लागल अछि, चलू खाइ छी।'

उषा नाना प्रकारकेँ व्यञ्जन बनौने छली। आनि कऽ आगामे पड़ोसि देली। मनोज अपने धुनिमे खाइत रहलथि। उषा हुनक हरेक सुख सुविधामे जूटल रहलथि ताकी एतय आबि कऽ ओ कोनो प्रकारक कमी नहि महसुस करथि।

खाना खाइत मनोज पुछलन्हि, 'सिनेमा देखय चलब !'

'पिक्चर ! आइ, !' उषा सोचमे पड़ि गेली, महिनो बाद एतय अएला हैं आ अपन समय सिनेमामे बरबाद करब। ओ हरेक क्षणकेँ संजोगि कऽ राखय चाहैत छली। एतेक प्रतीक्षाकेँ बाद आइ अवसर भेटल अछि।

ओकरो सिनेमा घरमे बचकाना प्रेम प्रसंगकें देखय मे बिता दी ? नहि एना नहि हैत सोचैत बजली, 'चारि बाजि गेलै इन्टरभल भऽ गेल हेतै । '

'ठीक छै दोसर शो देखब ।' कहि ओछाओनपर पड़ि रहलाह मनोज । उषा टेप रेकर्डरमे गजलकें कैसेट लगा देलन्हि । संगीतक मधुरता वातावरणकें मनमोहक बनाबय लागल । टेप रेकर्डर मनोजे देने रहन्हि ।

उषा टयूबलाइट अफ कऽ नाइटलैम्प बारलन्हि । पुरना जमानाबला लालटेन कें आकारबला ओ नाइटलैम्प सेहो मनोजे देने रहन्हि । आब तऽ हरेक पुरान चिज फैशन बनि गेल छैक । ओ केश भाड़ि कऽ जुट्टी गुहय लगली । मनोजकें एकटक अपना दिस देखैत ओ पुछली, 'की देख रहल छी ?'

'अहिंक सुन्दर केश, किए बन्हैत छियै एकरा ? खोलि दियौ ? खुजले नीक लगैत अछि। हरेक सुन्दर चिजकें स्वतन्त्र रखला सँ ओकर सुन्दरता आओर निखरैत छैक । केशमे एकटा क्लिप लगा दियौ, बस्स ।'

जुट्टी खोलि उषा केशमे क्लिप लगा लेली । हलका मेकअप कऽ कऽ साडी बदलय लगली । बहुत रास साडी मनोज किन देने छलन्हि, मनोजकें तऽ बहन्ना चाही । बाट चलैत कोनो महिलापर नजरि पड़िते पुछि बैसथि, 'चाही ओहन साडी ?'

तँ की हम ओकर साडी देखैत छलियै ? ओ तुनकि कऽ कहैत छली ।

'आओर की ? दोसर महिलाक रुपपर अहाँक नजरि थोड़बे टीकत । की पता ओ अहाँ सँ सुन्दरि .... ।'

'मनोज डोण्ट वी सिली ?' उषा प्रेम सँ...... ।

किए प्रेम करैत छी हुनका । हरेक साडीकें पाछु एहने कोनो मधुर प्रसंग होइत छलैक । ओ सोचमे डुबि गेली कोन साडी पहिरु ? रातिमे सिल्क बढ़ियाँ लगैत अछि, अपने सँ कहैत आसमानी रंगक साडी, गलामे नेकलेस, कानमे हिराकें टप्स आ हातमे सोनक चुड़ी पहिर ओ मनोजक आगाँमे ठाढ भेली तँ रुपसीकें देखि मनोज क्षणभरि स्तब्ध रहि गेलथि ।

'अरे ! गहनाक प्रदर्शनी छै की ? एखन तँ सिनेमा देखय जाइत छी । दिनमे जँ ई पहिरने रहितहुँ तऽ कतेको महिला एहने गहना बनएबाक हेतु......।'

'प्लीज मनोज, कहियो काल तऽ बाहर निकलै छी । अपने देल समानकें एकबेर नहि देखब हमरापर केहन लगैत अछि ? ' एहने प्रेमालापक संग दूनु घरसँ बाहर भऽ गेलाह ।

सिनेमा । प्रेमालाप, हीरोकें पराक्रम मुदा दूनु अपनेमे लीन । फिल्म समाप्त भेलै । दूनु बाहर एलथि तऽ रातिकें एगारह बजैत छल ।

ठण्ढा-ठण्ढा हवा बहि रहल छल आ ताहुमे इजोरिया राति एकाधेटा सवारी सड़कपर चलैत छल । दूनु एक दोसरमे लीन मौसमक आनन्द लैत पैदले घर दिस बिदा भेलथि । विजुलीकें खम्भा पाछु छुटैत गेल । गप्पक जेना कोनो अन्त नहि छल, मुदा उषाकें घर चलि आएल गलीकें मोड़पर मनोज गुडनाइट कहैत उषा सँ बिदा लेलन्हि ।

गलीमे प्रवेश करिते संयोग उषाकें तीन चारिटा गुण्डा घेर लेलकन्हि । स्वयमकें छोड़बैत उषा मनोज-मनोज चिचिआए लगली । मुदा मनोज तँ.........।

खाली आँखि सँ उषा उज्जर वस्त्रमे घुमैत नर्सकें देखैत रहली । डाक्टर एखने जाँचि कऽ गेल छल । नर्स कहलन्हि, 'बेहोशीकें हालतमे कोनो पड़ोसी अहाँके एतँ पहुँचौने छल । चौबीस घण्टापर होश आएल अछि ।'

नर्स दवाइ पिआ कऽ चलि गेली । तखने मुस्कैत मनोज उषाकें समिप आबि बैस रहलाह । उषा निर्विकार भाव सँ खिड़कीपर बैसल चिड़ैकें देखैत रहली जे बीच-बीचमे उड़ि जाइत छल आ पुनः ओहिपर आबि कऽ बैस जाइत छल ।

'केहन हाल अछि उषा ?' उषाक हाथ अपना हाथमे रखैत मनोज नहुँऐ सँ पुछलन्हि ।

'बस जीब रहल छी ।' आ दोसर दिस ताकय लगली ।

'पुलिसमे रिपोर्ट कएलियै ? बेसी चोट तँ नहि आएल ?'

'नहि रिर्पोट नहि कएलियै' उषा रुष्ट होइत बजली ।

उषा डियर, इम्हर देखू , गहना लुटागेल सैह दुख अछि ने। जाए दियौ गहना फेर बनि जाएत।

'बन्द करु एहन बकवास। आब हमरा गहनाकेँ मोह नहि अछि। ओ जेना आएल ओहिना चलि गेल' कहैत हिचुकि-हिचुकि कऽ कानय लगली।

'की देहमे बहुत दर्द अछि, उषा बताउ ने, अहाँकेँ कतय चोट लागल अछि।'

'चोट लागल अछि हमरा हृदयमे' कहि आओर कानय लगली।

'प्लीज ठीक सँ बताउ ने।'

'अहाँ तँ एना चलि गेलहुँ जेना हम अहाँकेँ कियो नई छी' ओ बजली।

मनोज चुप रहला।

कहूँ ने, नलिनीकेँ एना छोड़ि कऽ भागि जेतियै ! हम यदि नलिनी रहितहुँ तखन !

.. तखन हम अपन प्राण दऽ कऽ सेहो हुनकर रक्षा करितियै।

तखन हमरा छोड़ि किएक भागि गेलहुँ।

उषा अहाँ नहि बुझबै ई बात। बदनामीकेँ डर सभ व्यक्तिकेँ होइत छैक। बिजनेस मैन छी। समाचारपत्रमे नाम छपि जाएत तँ फेर .... ओ बजैत-बजैत रुकि गेला।

'कहूँ न फेर की !'

'अहाँ... नलिनी...हमर मतलब...हमर कनियाँ तऽ नहि ने छी ... ।

अहाँ तऽ... अहाँ छी .... ।

प्रियंका

गामसँ छुट्टी बितौलाक बाद काठमाण्डू जा रहल छलहुँ। बसमे चढ़िते एक युवतीकेँ देखलियै। ततक्षण मन रोमांचित भऽ उठल। मुदा, अपनाकेँ सम्हारैत सिटपर बैस गेलहुँ।

युवती हमरे पाछुमे बैसल छली। बेर–बेर हमर मोन ओहि युवती दिस आकृष्ट होइत छल, हुनका सँ बात करबाक हेतु। तथापि हम अपन मोनकेँ नियन्त्रित कऽ ढल्केबर, पथलैया, हेटौडा, नारायणगढ़ मुगलिंग पार करैत कतेको स्थल गनैत काठमाण्डू पहुँचलहुँ।

काठमाण्डू बस पड़ावमे पहुँचैत–पहुँचैत प्रायः सभ यात्री उतरि गेल छल। मात्र ओ युवती आ हम बाँचि गेल छलहुँ।

हम अपन बैग सम्हारि उतरि गेलहुँ। हमरे पाछा–पाछा ओ युवती सेहो उतरि गेली। हमर हृदय जोर-जोर सँ धड़कय लागल की आब ओ अपन घर चलि जएती। हम हुनकासँ गप्प करबाक लेल ब्याकुल छलहुँ।

बस पड़ावमे उतैरते पानि टिप टिपाए लागल। हम बैगमे सँ छत्ता निकालि लेलहुँ। समिपमे ओ युवती चुपचाप ठाढ़ छली। कखनो ओ बाट दिस तकैत तऽ कखनो घड़ी दिस। किछु देरक बाद हम हिम्मति कऽ हुनका सँ पुछलियन्हि, 'अहाँकेँ कतय जायकेँ अछि ?'

बिनू बजने ओ हमरा दिस तकली आ फेर चेहरा झुका लेली।

हम हिचकिचाइत हुनका सँ पुनः पुछलियन्हि, 'अहाँ कतय जेबै ?'

ओ हमरा दिस देख कऽ कहली, 'कतौ नहि।'

हमरा चटकन जकाँ लागल आ हम मूक रहि गेलहुँ।

किछु देरक बाद पानि सेहो जोड़ सँ पड़य लागल छल, हम छत्ता निकालि डेरा दिस बिदा भऽ गेलहुँ।

तखने पाछु सँ आवाज आएल 'सुनु तँ।'

हम पलटि कऽ देखलहुँ ओ स्वर ओहि युवतीकेँ छल। हम हिम्मति कऽ हुनका सँ कहलियन्हि 'कहूँ !'

'अहाँ कतय जेबै ? ' किछु संकुचाइत लड़खड़ाएल स्वरमे पुछली।

'कुपण्डोल, ओना अहाँकेँ कतय जएबाक अछि?' हम पुछलियैक।

'जी हमरा...कतौ नहि।'

हम तमसाइते बजलहुँ 'बहुत भारी बात अछि। एखने अहाँ बजौने छलहुँ आ पुछि रहल छी तऽ बताबय नहि चाहैत छी।'

ठिक छै......... ।

ई कहि हम पुनः जायकेँ लेल बिदा भेलहुँ । किछु डेग चलल छलहुँ की हमरा कानधरि ओ युवतीकेँ सिसकय केँ अबाज आएल।

हम पलटि कऽ देखलहुँ। ओ ओढ़नीमे मुँह नुकाँ कानय लगली।

हम फेर रुकि गेलहुँ। आब हमरामे गप्प करबाक हिम्मति तऽ आबिये गेल छल। अतः हम समिपमे जा कऽ पुछलियन्हि, 'अहाँ कानि किए रहल छी !'

हमरा पुछलाक बाद ओ आओर जोरसँ कानय लगली। हम घबरा गेलहुँ की यदि कियो ई सभ देखत तऽ पिटाइ अवश्य हेत। अतः हुनकासँ कहिलयन्हि, 'कृपया अहाँ कानब बन्द करु आ बताउ जे अहाँकेँ कतय जएबाक अछि हम एक नोकरीहारा सभ्य व्यक्ति छी हमरा पर विश्वास करु।'

अहिपर ओ बजली, 'हमरा कोनो घर नहि अछि हमरा लेल ई शहर अनजान अछि तएँ.. ।'

हम आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ एक अति सुन्दरि, जवान असगरे युवती आखिर एहि पहाड़क शहर काठमाण्डूमे की कऽ रहल अछि ? अनेक प्रश्न मानसपटलपर घुमल। हम कहलियन्हि, 'ओना अहाँ जाए कतय चाहैत छी !'

एतय समिप कोनो होटलमे जा कऽ असगरे कोना बिताओल जा सकैत छैक ?

'आइ अहींकें घरमे रहि सकैत छी... ? यदि अहाँ कही तऽ ?' ई बात सहजहि कहि सिसकय लगली।

हुनकर गप्प सुनि कऽ मनमे गुदगुदी सेहो भेल आ डर सेहो लागि रहल छल, हम हुनकर बैग उठा विदा भेलहुँ। टैक्सीमे बैसि कुपण्डोल अयलहुँ। पुरा बाट हम चुप रहलहुँ।

घरमे एलाक बाद ओ चारु दिस देखय लगली, हम हुनका बैसय कहि स्वयं फ्रेस होबय बाथरुममे चलि गेलहुँ।

किछु देरक बाद घूमि कऽ अयलहुँ तऽ ओ अनचिन्हार युवती पुरा घरकें ठिकठाक कऽ देने छली, हम मुस्किया कऽ हुनका दिस तकलहुँ एहि पर ओहो मुस्कुरा देली।

'किछु खाएब ?' हम पुछलयन्हि।

ओ चुप्प रहली तऽ हम कहलियन्हि, 'आब चुप्प रहलासँ काज नहि चलत।' एकर बाद हम स्टोभपर चाह चढ़ा देलियै आ गाम सँ माय बटखर्चाकें लेल बगिया देने छल, तेकरा दूटा प्लेटमे धऽ हुनको देलियन्हि आ हमहुँ लेलहुँ।

ओ चुप–चाप खाय लगली। एकरा बाद हमरा गप्प करबाक उत्सुकता बढ़ल तऽ पुछलियन्हि, 'आब अहाँ सत्य गप्प कहुँ अहाँ कें छी ?'

'हमर नाम प्रियंका अछि आ हम धनुषा जिल्लाकें रहयवाली छी। हमरा घरमे माय बाबुजीक अतिरिक्त दूटा छोट भाय आ एक बहिन अछि हम जीवनमे किछु करय चाहैत छी, किछ बनय चाहैत छी, परंच हमर गाममे ई सम्भव नहि अछि। बाबुजी हमर विवाह गामक लगमे परवाहा गाम छैक ओतहि करा रहल छलाह। तएँ हम भागि एलहुँ अछि।'

'हम एस.एल.सी. पास कएने छी। हम नाम करय चाहैत छी, जीवनमे संघर्ष करय चाहैत छी। तएँ हेतु एहि राजधानीमे एलहुँ अछि ... आब तऽ किछु कएलाक बादे घुरि कऽ जाएब।'

बसमे एकदम शान्त सौम्य बैसल ओ युवतीक वाकपटुताकें देख हम आश्यर्चमे छलहुँ।

हम कहलियन्हि, 'ई अहाँ ठिक नहि कएलहुँ घरक लोक कतेक चिन्तित हैत।'

'होमय दियौ, यदि विवाह भऽ जाइत तऽ हम कतेक चिन्तित रहितहुँ ?'

'विवाहसँ केहन चिन्ता ? अहाँकें अपन घर परिवार रहैत ....'

'जी नहि, हम असगरे स्वतन्त्र रुपसँ किछु करय चाहैत छी।'

'की ?'

'अहाँ चिन्तित नहि होउ, हम भोरे चलि जाएब।'

'कतय ?'

'कतौ... नोकरी ताकय।'

नहि अहाँ असगरे नहि जाएब हम अहाँकें संगे चलब। आ केटलीमे सँ चाह छानि दुनु गोटे लऽ लेलहुँ आ भात चढ़ाऽ देलियैक। चाह पिलाक बाद राति भऽ गेल छल तएँ बजारसँ तरकारी लाबय लेल हम विदा भेलहुँ।

भोजनक बाद हम हुनका घरमे छोड़ि अपने बरण्डा पर ओछायन कऽ सूति रहलहुँ।

ओछायन पर सुति कऽ सोंचय लगलहुँ 'मन पसंद कनियाँ सेहो विवाह करय लेल नहि भेट रहल छल से भगवान प्रियंकाकें हमरा लेल पठा देलथि अछि। सुडौल, पढ़ल लिखल, सुन्दरि कनियाँ होइ तऽ आओर की चाही हम मनेमन योजनामे उलझि गेलहुँ आ लागल जेना हम हुनकासँ प्रेम करय लागल होइ।

परात भने प्रियंका तैयार भऽ कऽ जाए लगली तऽ हम कहलियन्हि, 'चलु हम अपन एक परिचितसँ भेंट करबै छी सम्भवतः नोकरी भेट जाएत।'

हमर योजना छल की हम हुनका एतहि रोकि ली आ हुनका विवाह करबाक लेल मना ली। हम ओहि दिन प्रियंकाकें अपन परिचित मानबहादुरसँ भेट करौलियन्हि। ओ हिनका देख बड़ खुशी भेल आ प्रियंका सेहो मानबहादुरक बैभवकें देख अकचका गेली।

हमर निवेदनपर मानबहादुर अपन कार्यालयमे नोकरी दऽ देलक। आब हमसभ भोरमे संग निकलैत छलहुँ आ ओ राति हमरे घरमे बितबैत छली। हमरा दुनु गोटेमे एखनो तक दूरी यथावत छल।

किछु दिन बितलाक बाद हम हुनकासँ घुलिमिल गेलहुँ तऽ हिम्मत कऽ हुनका सम्मुख विवाहक प्रस्ताव रखलियन्हि। ई सुनि ओ अकचका गेली आ किछु नहि बजली।

साँझखन हम मानबहादुरकेँ कार्यालयमे गेलहुँ तऽ ओ बजली, 'कुपण्डोल एतसँ दूर पडैत छैक तएँ हमरा मानबहादुरजी एतहि एकटा घर उपलब्ध करा देलन्हि अछि। यदि एकरा अन्यथा नहि मानी तऽ आइसँ हम एतहि रहब।'

हमर हृदयक शीशा प्रियंकाक कठोर शब्द रुपी पाथर सँ चकनाचुर भऽ गेल। हम बुझि गेल छलहुँ की मान बहादुरकेँ वैभव आ प्रियंकाक सुन्दरतावीच एक सम्झौता भऽ गेल अछि।

हम घर एलहुँ बहुत दुखित छलहुँ ओहि राति खेबो नहि कएलहुँ आ भरि राति सोचैत रहलहुँ जे आब कहियो नहि जाएब हुनका लग, करीब एक हप्ता तक हम गेबो नहि कएलहुँ।

आठम दिन मोन नहि मानलक तऽ हम प्रियंकासँ भेटबाक लेल हुनकर कार्यालय गेल छलहुँ।

प्रियंका तऽ पुरा बदलि गेल छली। जीन्स आ भेष्टमे ओ एकदम आधुनिक लागि रहल छली। हुनक चेहराक ताजगी आ आँखिमे सफलताक चमक स्पष्ट देखाइ दैत छल।

ओ कहली, 'काल्हि ओ एकटा फिल्म निर्माता सँ भेट करय जएती।'

'किए !' हम अकचका कऽ पुछलियन्हि।

'ओ मानबहादुरजीक परिचित फिल्म निर्माता छथि। ओ हमरा भेटबाक लेल काल्हि समय देने छथि। आब देखब हम किछुए दिनमे सुपरस्टार अभिनेत्री बनि जाएब।'

हम हुनका बुझयबाक प्रयन्त करैत कहलियन्हि, 'नहि जाउ बादमे बहुत पछताएब' परन्तु नहि मानलथि। हुनका पर तऽ सिनेमाक भूत सवार छलन्हि।

हम ओतसँ चलि अयलहुँ। समय बितैत गेलैक, हमहुँ अपन काममे व्यस्त भऽ गेलहुँ।

अचानक करिब २/३ वर्षक बाद प्रियंका हमरा राजविराजमे भेटली। हम हुनकर मेकअप आ ड्रेस देखि दंग रहि गेलहुँ। हम अधिकार सँ पुछलियन्हि, 'की छै हालचाल ? की अहाँ जे चाहैत छलहुँ से भेट गेल .... !'

अहि पर ओ नितराइत बजली, 'भेटियो गेल आ सम्भवत: नहियो..'

'से कोना ? हम : पुछलियन्हि।

हमरा लग ओ सब तऽ अछि, जे नहि होएबाक चाही। तखन ओ नहि अछि जे होएबाक चाही।

'हम बुझलहुँ नहि !' हम पुछलियन्हि।

'अहाँक बात शुरुयेमे मानि लेने रहितहुँ तऽ आइ... आत्म ग्लानि भरल स्वरमे कहैत रहथि की तखने समीप एक मारुती आबि रुकल। ओइमे सँ एक युवक उतरि प्रियंकाकेँ समीप आबि कऽ बाजल, 'हाय लभली बहुत प्रतीक्षा करेलहुँ आइ काल्हि तऽ अहाँ बड़ अनमोल चिज भऽ गेल छी ... तएँ हाते हात बिका रहल छी।'

प्रियंका एक नजरि हमरा दिस देखैत ओकरासंग मारुतीमे बैसि गेली आ हम देखैत रहि गेलहुँ .. ओहि चिजकेँ.. ओहि लभलीकेँ.... ।

देखने पहिनहुँ रहियैक, मुदा पहिलेक देखल आ आजुक देखलमे फर्क भऽ आएल छल।

पता नहि, ठनका कतय खसतैक।

वरखीक भोज

माधुरी भोरे सँ भानस घरमे व्यस्त छली। आइ हुनकर पिताकेँ बरखी अछि। वर्षमे एक बेर आवयवला इ दिनकेँ ओ कहियो समान्य दिन जकाँ नहि वितावय चाहैत छथि। हरेक दिन दौड बरहामे वित जाइत अछि, कम सँ कम वर्षमे एक दिन तऽ ओ अपन दिवंगत पिताकेँ समर्पित करयकेँ तय कएने छली, अहिवेर गरीब सभकेँ भोजन करायब।

पहिने सोचली पैकेट बना कऽ बाँटि दी, फेर निश्चित कएलन्हि की ओ स्वयं किछु बना कऽ खुवेती। कम सँ कम २०/२५ व्यक्तिकेँ तऽ खुवेबे करती। छोला आ प्लाउ बनालेव असान छल। अहि दुवारे ओ वना रहल छली। भोजन वनावय काल हुनका अपन पिताकेँ कतेको बात स्मरण आवि रहल छल। पिता जिवनक छोट-छोट बात सँ लऽ कऽ बडका-बडका बातधरिकेँ मर्म बुझौने छलाह। पिताक देहान्तक बाद लागल छलन्हि की ओ अचानक बडका भगेल छथि। पिताकेँ जिवैत धरि ओ हरेक समय अपनाकेँ बच्चा बुझैत छली।

घरक माहोल आइ अन्य दिन सँ किछु अलग छल। दिनेश सेहो बुझि रहल छलाह आइ बरखी अछि आ माधुरी नैहर नहि गेली तऽ की अहि बेर गरीबकेँ खुवावय मन्दिर अवश्य जयती। मुदा ओ अपन डिउटी सँ बान्हल छलाह। ओ अफिस जयता। हुनक बेटा सच्चु बहुत उत्साहित छल ओकरा मम्मीकेँ संग मन्दिर जायकेँ छल। ओ नहा धो कऽ तैयार छल, माधुरी खुवावयकेँ लेल पेपर प्लेटसभ किन कऽ राखि लेने छली।

सच्चु बाजल , 'मम्मी की हम पेपर प्लेटसभ गाडीमे राखि आउ ?'

माधुरी कहलन्हि, 'तोरा पेपर प्लेटस बड भाडी लगैत छौक, भोजन लऽ जायकालमे लजइहेँ मुदा विसरीहेँ नहि।'

फेर किछु सोचैत बजली 'अच्छा जो कही छुटि नहि जाय धऽ आ।'

सच्चु पेपर प्लेटसभ लऽ कऽ दौडैत निचा चलि गेल, कारमे रखवाक लेल। दिनेश भानस घरमे हुलकी मारलथि। माधुरी मसला भुजैत खोकि रहल छली। हुनक ध्यान खिचवाक लेल वा कनिक खुश करवाक लेल दिनेश गला साफ करैत बजलाह, 'अहाँ ! कतेक बढिया सेन्ट आवि रहल अछि, मुदा इ तऽ हमरा सभक लेल नहि अछि।' माधुरी विना हुनका देखने कहलन्हि, 'अहाँकेँ बुझल नहि अछि ?'

बुझल अछि बाबा। तैयो पुछि रहल छी खुवावयकेँ की आवश्यकता अछि ? जे अतेक परेशान होइत छी। अहाँकेँ भाय सभ बरखीकेँ क्रियाकर्म केबे कएने हेथिन। अहाँकेँ विश्वास अछि, गरीबकेँ खुएला सँ अहाँकेँ पिता जीकेँ आत्मा तृप्त हैत ? दिनेश कहलन्हि।

माधुरी कहलन्हि, 'इ बात हम तऽ नहि बुझैत छी बहुत बात एहन होइत छैक जेकरा हम सभ नहि चाहितो निमाहैत छी। आखिर अहिमे लगवे की करैत छैक ? खैर छोडू, अहाँकेँ अफिस जायकेँ अछि अवेर भऽ जायत।'

दिनेश चाहियो कऽ किछु मदत नहि कऽ सकल छलाह। ओ कहलन्हि, 'सुनु हम जा रहल छी अहाँ बौवा केँ लऽ कऽ चलि जायब।' ओ अहिकेँ बाद अफिस निकलि गेलाह। सच्चु तखन धरि पेपर प्लेटसभ राखि कऽ आवि चुकल छल। ओ ओतही इम्हर ओम्हर घुमि रहल छल, की मम्मीकेँ भोजन तैयार भऽ जाय आ दुनु गोटे मिल कऽ भिखारी सभकेँ खुवावयकेँ लेल विदा होइ। देर होइत देख ओ टिभी खोलि कऽ बैसि रहल।

माधुरी भोजन तैयार कऽ लेली। ओ अपना केँ अहि धारणा सँ ग्रस्त होवय सँ बचा पावि रहल छली जे आत्माकेँ कोनो अस्तित्व होइत अछि। एकर कोनो दोसर चरो नहि छल। यदि दिवंगत प्रियजनकेँ स्मरण करवाक अछि तऽ आत्माकेँ अस्तित्व मानि कऽ हुनका हरेक समय एक सामीप्य आ सम्वाद बनावि राखल जा सकैत अछि, अहि दुवारे 'हँ' आ 'नहि' केँ बिच डोलैत एहन धारणा अतेक भितर धरि घुसा लेने छथि। ईश्वरकेँ अस्तित्वकेँ जकाँ प्रत्यक्ष अस्तित्वकेँ बिना पुरा जिवनकेँ अपना कब्जामे रखैत अछि। सभ किछुकेँ बारेमे हम तऽ नहि बुझैत छी, बस एकटा बनल बनायल लिक पर चलैत छी। यदि अहिमे नाफा नहि अछि तऽ नोक्सान सेहो नहि अछि।

माधुरी अहिना सोचैत छथि, बल्की ओ तऽ इहो सोचि कऽ बहुत सन्तुष्ट भऽ जाइत छली की दिवंगत लोकक नामे पर किया नहि किछु गरीबकेँ भोजन तऽ भेट जाइत छैक !

भुखमरीकेँ रेगिस्तानक पार करैत किछु लोककेँ मृत्यु काल्हि आ परसुकेँ लेल टलि जाइत अछि ! किछु लोक खायकेँ इच्छा तऽ पुरा करैत हैत ! लोक इ सभ करब छोड़ि देत तऽ सहीमे संसार किछु अओर दुःखी आ बेवस भऽ जायत। मनमे किछु सोचि रहल छली की अहि सँ दिवंगत पिताकेँ आत्माक तृप्ती मिलेय वा नहि मिलेय, किछु भूख आ लाचार लोककेँ क्षुधा तृप्त भऽ जायत। इहे उत्साह भोरे सँ हुनका सक्रिय रखने छल।

भोजन तैयार कऽ किछु देर कुर्सीपर सुस्तायकेँ लेल बसि गेली। फेर परेसान भऽ कऽ ओ बजली, 'सच्चु..' आ सच्चु टिभी बन्द कऽ लेलक पैरमे बिना चप्पल लगौने थरफराइते आएल आ, 'हँ मम्मी कह नैं।'

माधुरी कहलन्हि, 'अबेर भऽ रहल अछि चल जल्दी सँ समान सभ गाड़ीमे रखैत छी।' भोजन कारमे रखबाक लेल माधुरी कार स्टार्ट कऽ देली आ चलि देली मन्दिर दिस। बगलमे सच्चु बैसल छल। ओ अपन पसिनक म्युजिक लगा लेलक।

मन्दिर सँ पहिने भिखारीकेँ लाइन सुरु भऽ जाइत अछि। माधुरीकेँ एक दुटा भिखारी पर नजर पैरते सड़ककेँ कातमे गाड़ी पार्क कऽ देली। सड़ककेँ दून् कात छयादार गाछ ठाढ छल किछु गोल्ड मोहरकेँ आ किछु दोसर। गोल्ड मोहर तऽ आकाशमे अपन लाल फूल सँ तानल छल। तेज रौदक किरण कखनो बादल सँ झपा जाइत छल तऽ कखनो कसि कऽ सड़क दिस अबैत छल। किछुए डेग पर मन्दिर छल जेकर गुम्बज देखाइ दऽ रहल छल। भिखमंगा सभ सड़ककेँ बगलमे बैसल छल। मौसमकेँ बेहाल भेलाक कारण सेहो लोक अपन-अपन काजमे लागल छल। अफिस जायवला लोकसभ अपन-अपन अफिसमे छल। सड़क सँ जेकर दोस्ती छल ओ सड़क पर गर्मीक दिनमे सेहो जा रहल छल, मुदा भिखमंगाकेँ कार्यस्थल तऽ अतहि छल। ओ गाछक छाहमे शान्त भऽ बैसल छल। कोनो मतलब नहि कोनो चिन्ता नहि शायद संसारक सभ सँ निश्चिन्त वर्ग इहे छल। जे खसल अछि ओ कि खसत ! हिनका सभकेँ केकर डर ! नहि भगवानकेँ आ नहि समाजकेँ आब जखन भिखमंगेमे जिवाक अछि तऽ दुख कोन बातक।

माधुरी बैसल भिखमंगाकेँ संख्या अनुमान लगौली भोजन कम नहि हैत।

सच्चु लपकि कऽ गाड़ीकेँ डिक्की खोललक। माधुरी पेपर प्लेटमे भोजन लगा कऽ एकटा भिखारीकेँ देलन्हि। ओ अस्थिरे सँ लेलक। फेर ओ दोसर प्लेट लगा कऽ दोसर भिखारीकेँ बजौलन्हि जे ओकर बगलमे छल। ओ भिखारी प्लेट लेबय सँ अस्विकार कऽ देलक। माधुरी हातमे प्लेट लेने भिखारीकेँ आश्चर्य सँ चुपचाप देखैत रहली। आब ओ की करैथि ! तखने ओ देखलन्हि एकटा महिला अपन तीनटा बच्चाक संग हुनका दिस आबि रहल छल।

माधुरीकेँ हृदयमे आशा जागल की ओ अवश्य भोजन लेत। ओकर सभ सँ छोट बच्चा ओकर कोरामे छल। ओकर कपड़ा बता रहल छल, ओ भिखारन्हि तऽ नहि अछि मुदा मजबुर अवश्य अछि।

लगैत छल केशमे काए दिन सँ कंगही नहि केने अछि। केश उजरल पुजरल छल। कपड़ा मलि भऽ गेल छल। लगमे पहुँचते ओ महिला बच्चाकेँ कोरामे सँ उतारि लेलक आ भोजन लेवाक लेल दून् हात आगा पसारि देलक। माधुरी प्लेट ओकरा दऽ देली। ओकरा भोजन देलाक बाद भोजन लेवाक लेल ओकर दून् बच्चा छोटका-छोटका अपन हात उपर उठा लेलक। माधुरीकेँ आगा हावामे उठल चारि टा गुलथुल हात उपर दिस उठल दूटा मासुम हात चारि टा खाली आँखि।

माधुरी दून् बच्चाकेँ हातमे प्लेट दऽ देली। ओ महिलाकेँ कोरा बला बच्चा मायकेँ प्लेटेपर नजरि टिकौने छल। ओ अपन तीन् बच्चाकेँ संग एक दिस चलि गेल आ जमिन पर बैसि खाय लागल। माधुरीकेँ किछु दुर पर एकटा कुष्ट रोगी देखाइ देलक। ओ व्हीलचेयर पर बैसल छल। एकटा पातर छितर कारी लड़की ओकरा लग ठाढ छल। माधुरी एकटा प्लेटमे भोजन निकालि आ ओकरा दिस बढली। ओ कुष्ट रोगीलग पहुँच भोजन आगा बढौलन्हि तऽ ओ पट्टी बान्हल आंगुर सँ नमस्कार करैत भोजन लेबय सँ मना कऽ देलक।

माधुरीक लेल इ अप्रत्याशित छल। जखन ओ प्लेट लड़की दिस बढ़ौलन्हि तऽ ओ सेहो चेहराकें देखा कऽ नहि मुद्रामे माथ डोला देलक।

माधुरी खुलल डिक्की लग घुमि एली। ओ प्लेटकें डिक्कीमे राखि लेली। किछु भिखारी हुनके दिस ताकि रहल छल। माधुरी हातक इसारा सँ हुनका बजौलन्हि। मुदा ओसभ एना ताकि रहल छल जेना किछु बुझिए नहि रहल अछि। आब भिखमंगाकें सेहो अपन घर जायकें समय आबि गेल छल।

सड़क आब पाकय लागल छल। एकटा आइसक्रीमवला अपन गाड़ी ससारैत आएल।

व्हीलचेयरवला कुष्ट रोगी ओकरा रोकलक आ एकटा चाँकोबार किनलक। आब ओ अपन गाड़ीपर बैसल चाँकोबारकें आनन्द लऽ रहल छल। ओकरा सँगे ठाढ़ लड़की सेहो आइसक्रीमक कप किनलक आ जिह निकालि-निकालि कऽ चाटय लागल। आइसक्रीमवला देखलक यतह तऽ भोज चलि रहल अछि ओ कुदि कऽ माधुरीक आगा ठाड भऽ गेल। माधुरीकें निक लगलन्हि चलु कम्तिमे कियो तऽ भेटल खायवला कतेक मेहनत कएने छली ओ भोरे सँ। शुद्ध घीमे प्लाउ बनौने छली आ स्वादिष्ट छोला। ओ प्रेम सँ खाय लागल। माधुरी सोचय लगली जे हात प्रत्येक दिन सिक्काकें लेल पसारैत अछि ओकरा दिक्कत नहि छैक मेहनत करयवला हात थारी तक नहि पहुँच रहल अछि शायद।

रौद तेज होवय लागल छल। सड़क सँ कयटा साइकिल पर सवार लोक जा रहल छल। सभ इ दृश्य देखैत निकलि जाइत छल। एकटा अखवार बेचयवला दुर सँ देखलक बुझयमे देर नहि लगलै गरीबकें भोजन देल जाऽ रहल अछि। एहन बात होइते रहैत छैक नयाँ नहि छैक। ओ साइकिलकें अस्थिर कएलक एक मिनेट धरि खाइत लोक सभकें देखैत रहल। ओकर आँखिमे संकोच भेल आ फेर मेटा गेल। दुविधा हटि गेल अन्तमे खेवाकलेल माधुरी दिस बढि गेल। माधुरीकें गला सँ जखन तक बात निचा उतरैत ओ अखबार बेचयवला हात पसारि देने छल। अखबार बेचयवला प्लेट लऽ कऽ गाछक छाँहमे चलि गेल। सड़ककें दिस पिठ कऽ कऽ खाय लागल।

सड़ककें बगलमे कयटा गाड़ी लागल छल। जाहिमे ड्राइवर सभ बैसल छल। सभ अपना डिउटी पर छल। अखबार बेचयवलाकें खाइत देख एकटा ड्राइवर उतरि कऽ आएल आ निसंकोच डिक्कीकें लग ठाढ भऽ गेल। माधुरी झट सँ भोजन निकालि कऽ ओकरा दिस बढा देली। फेर तऽ ३/४ टा ड्राइवर आउर उतरल ठक-ठक कऽ अपना पाछु गाड़ीकें गेट बन्द कएलक आ भोजनकें लेल माधुरी लग चलि आएल।

सभ स्वाद लऽ कऽ खाय लागल आ किछु दुर पर ठाढ एक दू टा भिखमंगा अस्थिरे सँ पहुँचल जेना कोनो मजबुरीमे ओकरा खाय परल होइक। ओकर चेहरा पर आलस आ अनिच्छा छल। भितरे भितर खौझाइत माधुरी ओकरो सभकें प्लेट पकरा देली, भोजन करिब-करिब समाप्त भऽ गेल छल। कनिक बचल छल दू चारि गोटे आओर खा सकैत छल। सच्चु डिक्की बन्द कएलक। माधुरी राहतकें साँस लेली आ सच्चु सँ कहली, 'चल , कोनो तरहे आजुक भोज समाप्त भेल आ बचल भोजनकें कतहु फेक देब।' भऽ गेल हुनक सौख पुरा। खुवादेली भुखलकें। ओ खौझा उठली।

माधुरी कार स्टार्ट केली, कनी दुर गेलाक बाद एकटा बृद्ध पुरुष हात देखा कऽ गाड़ी रोकौलक आ लिफ्ट मंगलक, 'बेटी हमरा नयाँ बानेश्वर छोडि दिय।' माधुरी ओहि बृद्ध पुरुषकें निचा सँ उपरधरि देखली। चेहरा सँ ओ सभ्य बुझाइत छला। शरीर पर पुरनका सफारी सुट छल, पैरमे पुरान चमराक चप्पल। स्वरमे शालीनता, उमेर ६० साल सँ उपरकें हैत। शरीरक कदकाठी बता रहल छल ओ शरीर सुख सुविधामे पलि कऽ बढल अछि। इ कोनो अपराधी तऽ नहि अछि। अपराधिक नाम अविते माधुरी अपन पुत्रकें पजिया लेली। नहि जानि अपराधी कोन-कोन भेषमे घुमैत रहैत अछि। गाड़ीमे मात्र महिला आ बच्चाकें देख लिफ्ट मंगलक अछि। कि पता गाड़ीमे बैसलाक बाद कनपट्टीपर रिभालवर नहि तानि दे?

ओ कहली, 'अंकल हम अहाँकें पैसा दऽ दैत छी, अहाँ बस सँ चलि जाउ।'

माधुरी एकटा ५० रुपैयाकें नोट ओकरा दिस बढा देली। ओ बाजल, 'छोडि दिय बेटी हम पैदले चलि जायब।' मुदा ओकर हात नोटक दिस बढि चुकल छल। ओ नोट लऽ लेलक।

माधुरी किछु असमञ्जसमे पुछली, 'अंकल भोजन करव !' अचानक अहि अप्रसांगिक प्रश्न सँ ओ चौंक गेल ओकरा लागल जेना कोनो गलत बात सुनि लेने हो। किछु देरक बाद वृद्ध पुन: बाजल, 'किया !'

'भोजन करव की !' माधुरी अपन प्रश्न दोहरयली। वृद्धक आँखि इम्हर ओम्हर हॉवामे ताकय लागल। मामला बुझयकेँ कोशिस करय लागल। ठोर पर फिफरी परल छल ओ अविश्वास सँ पुछलक, 'कतय !'

'हमरा गाड़ीमे अछि खा लिय।' माधुरी कहलन्हि।

माधुरी देखलन्हि ओ वृद्धकेँ खुशीकेँ सीमा नहि छल। ओ गाड़ीमे सँ उतारि कऽ हुनका हातमे देली। वृद्ध चुपचाप प्लेट हातमे धऽ लेलक। ओ भोजन लऽ कऽ सड़ककेँ बगलमे चलि गेल।

माधुरीकेँ यज्ञकेँ पूर्णाहुति भऽ गेल छल। इ व्यक्ति केँ भऽ सकैत छल ! इ किनको पिता हेता जे सेवा निवृत्त तऽ भऽ गेल छथि, मुदा स्वर्गवासी नहि भेल छथि।

बाबाजी

जे बाबाजी आइ निर्जिव पडल छथि, किछु वर्ष पूर्व ओ हुनकर पीठ पर घोडाक सवारी करैत छली। सुतल समयमे हुनकर नाकमे कागतक कुन्नी राखि अपना पाछु दौरबथि छली। हुनकर तमाकुल नुका कऽ पैसा मगैथि।

हुनकर मजाकसँ ओ कहियो तंग नहि भेलथि। रुबी ओहिना हुनका सतावयकेँ लेल योजना बनबैत छली आ बाबाजी स्वयंकेँ बचावयकेँ, मुदा आइ लगैत अछि ओ सहीमे हुनका सँ तंग आबि गेल छथि। तखन ने ओ स्वयंके शान्त कऽ लेने छथि। एना ओ सोचैत छथि मुदा सत्य तऽ ई अछि जे पापा बाबाजीकेँ ओछायन जमीन पर बिछबैलन्हि अछि। हुनकर पेशाव करयकेँ आदत सँ सभ गोटे तंग आबि गेल छथि। बाबाजी सुतले-सुतले ओछायन भिजा दैत छथि। कहियो काल गप्पे करैत, हुनका पत्ते नहि चलैत छल केखन हुनका पेशाव भऽ गेलन्हि। सभ दुखी भऽ गेल छल पलंगक तरमे उडिस जन्म लऽ लेने छल आ गन्धसँ उल्टी करयकेँ मोन होइत छल।

आइ हुनका जतेक दुख भऽ रहल अछि ओतेक तामस तखन अबैत छल जखन बाबाजीक रुमसँ आवयवला गन्धकेँ, हुनक संगी सभ परिहास करैत छल।

'बाबाजीक कारण हम घरमे संगीसभकेँ किनहुँ नहि लबैत छलहुँ, लाज होइत छल।'

हुनकर करीब करीब सभ दाँत टुटि गेल छल। दतमैन करब सम्भवत: ओ बहुत पहिनहि छोडि देने छलथि। मुदा पुछलाक बाद कहथि, 'कऽ लेने छी।' सभसँ नुका कऽ बिडी सेहो पिबैथ । बिडीक टुकरा अक्सर हुनकर तकिया लगसँ भेटैत छल।

ई देखैत माँ बाबाजीकेँ लेल रौमी कुकुर जकाँ एकटा एल्मुनियमक बर्तनमे भोजन परसि दैत छली। ओ भूखल रहैत छलथि आ अपन चारु आंगुर केँ प्रयोग कऽ भोजन कऽ लैथि छलाह।

दाईकेँ समयमे बाबाजी आ दाई पहिने भोजन करैत छल तखन बच्चा, पापा आ फेर माँ। मुदा आब एना नहि होइत अछि, बाबाजी पहिने सँ अन्तिममे आबि गेल छथि।

बाबाजी सँ रुबी मात्र नहि सभ बच्चा प्रेम करैत छल, मुदा बाबाजी सँ हुनकर दुरी दिनप्रति दिन बढैत जा रहल छल।

माँ रुबीकेँ बाबाजीकेँ रुममे जाय सँ मना कऽ देने छल। मुदा तैयो ओ नुका कऽ हुनका सँ बात करैत छली आ खिस्सा सुनैत छली। जहिना ओ अन्तिम अवस्थामे पहुँचलथि माथक केश उरि गेल छलन्हि। पाछु सँ पिठ निकलि गेल रहन्हि, सौंसे शरीरक चमरा घोकचि गेल छल, अबैत जाइत समयमे ओ भुकि कऽ ठेहुन पर हाथ राखि चलैत छलाह, कपडाक कलर मैल रंग पकरि लेने छल। बगलमे पसिनाक निशान बनि गेल छल। काय-काय महिना हुनका नहेला भऽ जाइत छल। ठण्ढामे ओ नहैतथि कोना ? माँ हुनका गरम पानि नहि कऽ दैत छली।

हमरासभकेँ तऽ खुब जबरजस्ती कऽ कऽ नहबैत छली, मुदा बाबाजीक लेल ओकरो समय नहि बचैत छल। बाबाकेँ मुँह सँ यदि दु वाक्य निकलि जाइत छल तऽ ओ घण्टो खोकैत रहथि। माँ बच्चा सभकेँ हुनका आगा बैसयकेँ लेल मना कऽ देने छल। कहैत छल- संक्रमण भऽ जेतौक।

माँ सही छल ओ बच्चा सँ प्रेम करैत छल, संक्रमण सँ बचावय चाहैत छल मुदा ओ बिमारीकेँ कि करथि जे हुनक दिमागमे जन्म लेने छल। रुबीकेँ दिमागमे एकटा संक्रमण धीरे-धीरे फैल रहल छल। माँ, पापा आ बाबाजीक सम्बन्धक। सम्बन्धक सत्य सही, घिनौना, जहरिला, दिवारकेँ जकाँ कचोइट रहल छल भितरे भितर।

बाबाजीकेँ भोर ओछ्यान सँ शुरु होइत छल आ ओछ्यानेपर समाप्त। माँ हुनका बाहर रौदमे चलबाक लेल कहैत छल ओकर वाक्य अहि प्रकार होइत छल, 'चलु रौदमे घरघुसना जकाँ घरेमे रहब भ्फारु तक नहि लगओने छी, हमरा तऽ घिन लगैत अछि।'

एक दिन रुवी बाबाजीक हात पकरि कऽ रौदमे लगेल छली। ओहि दिन एना लागल जेना बाबाजी रौद पहिल बेर देखने होइथि। ओ अपन आँखि बन्द कऽ लेलथि मुँहपर कनी मुस्कान चलि एलन्हि मनभरि कऽ अपन हात पैरकेँ ससारय लगलथि कोरियाबय लगलथि।

माँ भोजनकेँ समयमे बाबाजीक लेल हुनकेँ जेहन बर्तनमे भोजन लबैथ ओहि समय, रुवी माँ के मुँह तकैत रहथि छली। शायद बाबाजी सेहो ओहिना आश्चर्यमे परल हेता। एकरबाद माँ बाबाजीकेँ खेलाहा बर्तनकेँ सर्फक पानिमे उबालि-उबालि कऽ धोथि।

माँ मात्र नहि पापा सेहो दलबदलु भऽ गेल छलाह। ओ कहियो बाबाजीकेँ आवश्यकता बुभ्फयकेँ कोशिस नहि कएलथि। यदि पापा बाबाजीकेँ देखतथि तऽ हुनका बुभ्फइतन्हि की अभाव हुनका छल।

हुनका प्रेमक आवश्यकता छल, परिवारकेँ खुश देखि हुनका निक लगन्हि। पापा कहियो देर सँ अबैत तऽ बाबाजी पुछि-पुछि कऽ सभकेँ हाल बेहाल कऽ दैत छलथि। अक्सर पापा सँ बात करबाक बहाना तकैत छलाह। जानि बुभ्फि कऽ पत्रिकाकेँ नुका दैथि ताकी पापा हुनका सँ आबि कऽ पुछय आओर हुनका ओ पत्रिकाकेँ बहुत रास घटना मुहजबानी सुनाबथि। मुदा पापा छलथि जे, बहाना सेहो नहि बनबैत छलथि। बाबाजीकेँ बहुत मन करैत छल की ओ टिभी देखथि। टिभीमे कार्टुन देखब हुनका बेश पसिन छल जखन कोनो करकुटुम्ब अबैत छलाह तऽ माँ पापा हुनका टिभी बला रुममे लऽ कऽ अबथि आ सभ बच्चा आ बाबाजी मिल कऽ कार्टुन देखथि आ ठहक्का मारि हँसथि। ओहि समय हुनका कियौ नहि रोकैत छल। हँ, माँ अवश्य भितरे भितर खौउभ्फाइत हेती मुदा दोसरकेँ आगा जे सज्जनताकेँ ओढना ओढने रहैत छली।

रुवी अहि बातकेँ कहियो नहि बुभ्फली जे माँ बाबाजीकेँ प्रति एतेक घृणा किया करैत छथि। माँ पापाकेँ सेहो अपने जकाँ बना लेने छल। तामसमे पापा माँके जकाँ बजैत छलाह। कहियो-कहियो रुवीकेँ मन करैत छल, सुनिल आ सुशिल सेहो माँ आ पापाके संग यैह करे जे ओ बाबाजीकेँ संग करैत छथि।

आब हमसभ कनिक बड़का भऽ गेल छी मुदा जखन छोट छलहुँ हमरासभकेँ लाबय आ लऽ जायकेँ जिम्मेवारी बाबाजीकेँ छल। स्कुल सँ अबैत काल हमरासभक हातमे बैग आ बाबाजीकेँ हातमे तरकारीक भ्फोरा रहैत छल। कहियो-कहियो ओ हिसाब सँ बचल पैसा सँ हमरा तीनु भाय बहिनकेँ आइसक्रीम आ चिजबल खुअबथि। ओना एकर परिणाम हुनका पर भारी परैत छल घर जा माँकेँ डाट असगरे खाथि। माँ केँ लाख मना कएलाक बादो ओ हमरा सभकेँ किया इ सभ खुबबैथि छथि अहि पर हमरो बहुत तामस होइत छल आ अहु सँ बेसी तामस माँ पर होइत छल। जखन रुवी एकर प्रतिरोध करैत छली तऽ माँ कहैत छल, 'ई बाबाजी तोरा बिगारि देतौ अपना तऽ उमेर बित गेलन्हि आब बच्चाकेँ......।'

ई सभ बात सम्भवत: बाबाजी बुभ्फथि छलाह भितर सँ ओ बहुत दु:खीत होइत छलथि मुदा बाहरी रुपमे किछु प्रकट नहि होबय दैत छलाह। सम्भवत: अहि कारण माँकेँ आगा ठारहो नहि होइत छलाह, जेना कोनो घिनौना काम कएने होइथ।

एक दिन माँ हमरासभक लेल स्कुल बस लगा लेलन्हि। बच्चाकेँ लेल ओ छटपटाइत रहैत छलाह हम रुवी नुका कऽ देखैत छलहुँ।

बच्चाकेँ मुँह देखि बाबाजी अपन सभ दु:ख बिसरि जाइत छलाह एहनमे माँ हुनका सन्देहक दृष्टी सँ देखैत छल। यदि बच्चाकेँ हातमे बाबाजीकेँ देल कोनो खायकेँ समान देखि लैत छल तऽ भ्फट दने डस्टबिनमे राखि दैत छल।

जखनधरि रुवीकेँ निन्द अबैत छल। बाबाजीकेँ ध्यान घेरने रहैत छल मन करैत छल हुनकेँ संग बैसल रहु जखन रुवीकेँ मन कापि जाइत कहियो लगैत बाबाजी अहि संसारमे.........। फेर हुनका खिरकी बाटे रुवी देखय लगैथ आ ओ समान्य होइतथि तऽ अपन मुँहमे चटकन मारि हँसी चलि अबैत छल।

एना कोना सोचि सकैत छी अपन आदरणीय बाबाजीकें विषयमे। मुदा ओहि दिन आदरणीय बाबाजीकें भोमिट बाथरुम तक पहुँचैत-पहुँचैत नहि रुकि सकल आ ओतहि...........।

तखन माँ जे घरमे हरकम्फ मचौलन्हि पूरे टोलवैयाकें पता चलिगेल बाबाजीकें मन अकुवायल अछि। ओहि दिन रुबी खुब कानल छली।

बाबाजी अपन रुमकें पानि सँ धो रहल छलाह। माँ ओहिदिन गन्धक कारण भोजन नहि बनौलन्हि, पापाकें एलाक बाद सभगोटे होटलमे खेलौंह मुदा बाबाजी हरेक दिन जकाँ हुनका संग नहि छल।

रातिमे आवयमे देर भऽ गेल आ अबिते सभ जाहि हालतमे छल ओहि हालतमे सुति रहलौंह भोरमे उठलौंह तऽ कानयकें अवाज आबि रहल छल। एक क्षणकें लेल लागल टिभी चलि रहल अछि, रुबी तकिया कानमे लगा कऽ सुति रहल। मुदा सुति नहि पाएल कारण कानयकें अवाज बराबर आबि रहल छल। किछु देरक बाद लागल माँ सेहो कानयकें शुरमे सहभागि अछि ओकर हँसी आबि गेल माँ आ कानब, बहुत दुरक बात अछि मुदा नहि ई तऽ माऐ अछि जे कानि रहल अछि ओ किया कानि रहल अछि ? ई प्रश्न रुबीकें काटय लागल ओ भट सँ उठली बरण्डा पर रामनगरवाली अन्टी, मधुबनीवाली अन्टी आ मुन्नाक पापा सभ ठाढ छलथि। ओहिमे माँ सेहो बैसल छल केश चारुदिस छिरयायल छल अगरबत्तीकें धुवा उडि रहल छल ओतहि एकटा उजर कपड़ामे ओढयाल शरीर परल छल।

ओ एक रतीक लेल सकपका गेल इ तऽ हमर आदरणीय बाबाजी छथि। शान्त मोहक मुस्कान लऽ एना लागि रहल छल जेना ओ कहि परता रुबी चल कार्टुन देखय। रुबी बाबाजी सँ नजरि हटा इम्हर ओम्हर ताकय लागली ओ लोक सेहो घरमे आएल छल जे पहिने बाबाजी सँ घृणा करैत छल। रुबी धीरे सँ बजली, 'बेकारमे सभ गोटे अपन नोर बर्बाद कऽ रहल अछि ....।'

माँ अपन नोरकें पोछि रहल छल हरेक आवय जायवला व्यक्ति सँ लपटि कऽ कनैत हमरा माथ सँ बाबुजीक हात चलिगेल कोना रहब हम, कहि रहल छल। रुबी अपन मायकें बातकें अनसुना कऽ देली, जनैत छली ई सभ नाटक अछि। किछु देरक बाद बाबाकें अन्तिम संस्कार भेल। भोजभात सेहो भेल। भोजभातमें पापा चारुगामकें नौतलथि कामक्रिया बढिया जकाँ सम्पन्न भेल। काज सम्पन्न भेलाक बाद माँ बाबाजीकें रुम गरम पानिमे सर्फ धऽ रगरि-रगरि धोलक आ बाजि रहल छल, आइ जा कऽ पूरे गन्दा बाहर निकलल अछि।

बंश

हमर दृष्टि तीव्र गती सँ पत्रिकामे प्रकाशित परिणाममे अपन रोल नम्बर ताकि रहल छल।

अपन रोल नम्बर पर नजरि पड़िते हमर मोनमे ओहने खुशी भेल जेना कोनो सातदिनक भुखाएलकेँ आगामे छप्पन प्रकारक व्यंजन पड़ोसि क' कियो धऽ देने होइ। समिपमे बाबुओ जी आ माँ ठाढ़ रहथि।

हुनको आँखिमे खुशीकेँ सागर हिलोर मारैत कियो देख सकैत छल। मेडिकल प्रवेश परीक्षा पास क' गेल छलहुँ, एहि क्षणकेँ प्रतिक्षो एक-एक पल एक-एक वर्ष जकाँ बितौने छलहुँ हम।

सम्भवत: हमरोसँ बेसी एहि क्षणकेँ प्रतिक्षा माँ केँ छल। तएँ अनायासे ओकरो मुँहसँ निकलि पड़ल 'हमर बेटी कोनो बेटासँ कम अछि? हाकिम बनि हमर खनदानकेँ नाम रोशन करत।'

आखिर ई हमर सपना सकार कइए क' देखौलक!

ओकर एहि कथनमे खुशी छलैक रहल छल आ की खुशीसँ बेसी पीड़ा। हमर माँ केँ मनोभावकेँ बुझि बाबुजी प्रेम सँ ओकर बाहि थपथपा देलन्हि।

हमरा मेडिकलमे चयनकेँ खुशीमे बाबुजी सभकेँ मुँह मिठ करएबाक लेल मिठाइ लाबय बजार चलि गेलाह। माँ भानस घरमे चलि गेल। शायद ओ कोनो निक जलपान बना हमरासभकेँ खुआ अपन खुशी व्यक्त करय चाहैत छल। हम अतितक पुस्तककेँ पन्ना उलटाबय लगलहुँ।

जहिएसँ हम होशगर अर्थात बुझय बला भेलहुँ। अपन मायकेँ दाइद्वारा प्रताडित होइत देखने छलहुँ। पहिने तऽ हमरा बुझबामे नहि आबय। आखिर हमर माँ हुनकर की बिगाड़ने छल, कोन कमी वा अपराधक कारण सदिखन दाइ आ पिसीकेँ व्यंग्य बाणक मारि भेलैत अछि माँ?

धीरे-धीरे हम बड़का होइत गेलहुँ आ पारिवारिक तथा समाजिक परिस्थितिकेँ बुझय लगलहुँ। दाइक आक्रोशक कारण हमरा बुझयमे आबय लागल।

हम तीन बहिन छी। हमरा कोनो भाइ नहि अछि। दाइकेँ दृष्टिमे माँकेँ कोनो बेटा नहि होएब सबसँ बड़का अपराध छैक। तेसर बेटी यानी हमर जन्म भेलाक बाद तऽ घरमे हंगामे ठाड़ भऽ गेल छल। दाइकेँ पुरा उम्मीद छलन्हि की अहिबेर लड़कें हेतै, मुदा से भेल नहि। फेर लड़कीए होएबाक खबर सुनि ओ हमर मुँह देखब तऽ दूर, माँ केँ छठिहार दिनक विध तक नहि करओलन्हि। बाबुजी अस्पतालसँ किछु दिनक बाद हमरा आ माँकेँ घर अनने रहथि।

माँ केँ दुख जखन कखनो बाबुजी बाँटय चाहथि, हिम्मत नइ हारबाक बात कहथि हँसय हँसाबय केँ बात करथि, ओ दाइ केँ पसिन नहि पड़ैक आ मुँह बिचुका कऽ दाइ बाजल करथि, 'ई जोरुकेँ गुलाम अछि।'

माँ एखन तनमनक पीड़ा सँ उबरलो नहि रहथि की दाइ अपन बेटा यानी हमर बाबुजी पर दोसर विवाहक दबावक बात शुरु कऽ देलन्हि। दाइयक कहब छल, 'आखिर बेटा बिना वंश कोना चलतै!'

जखन बाबुजी दाइकेँ बातकेँ अनसुना कऽ दैथि तऽ ओ हमर माँ पर तामस उतारथि '३/३ बेटीकेँ जन्म देलक, एकटा बेटा जन्माओल नहि भेलन्हि।' तऽ कहियो कहथि, 'ई नहि होइ छन्हि की हमर बेटाकेँ पिण्ड छोड़ि दैथि जाहि सँ हम दोसर पुतहुँ लऽ आउ, पता नहि केहन सँ पाला पड़ल अछि।

दोसर पुतौहुँ बेटा जन्माबयकेँ सर्टिफिकेट अपन संग लऽ कऽ औती? अहि सभ गप्प सँ माँ भितरे-भितर टुटय लागल, मुदा बाबुजीकेँ दृढ़ताक कारणे दाइकेँ एक्को नहि चललन्हि, एहि मादे।

माँ बाबुजी केँ कतेकोबेर बतिआइत आ दुखी होइत सुनने आ देखने छी।

एखन तक हम बहुत सम्झदार भऽ गेल छलहुँ, पढ़ाइमे हमर रुचिकेँ देख बाबूजी हमरा विज्ञान विषयसँ इन्टर करेलाक बाद मेडिकलकेँ प्रवेश परीक्षामे बैसौलथि, जखन की हमर दुनु बहिनकेँ दाइक हस्तक्षेपक कारण माध्यमिक केँ बाद घरेमे बैसय पड़ल छल।

दाइकेँ माँ सँ कोनो सहानुभूति नहि छलैक, विवाह कएलाक बाद सासुर अयलापर माँ केँ नाम दाइ बौअसिन रखने छल। मुदा हमरा जन्म भेलाक बाद तऽ हुनकर नजरिमे अलच्छी बाहेक किछु नहि रहि गेल छल। ओ अपन आक्रोश कोनो ने कोनो बहन्ना लगा कऽ उताड़ैत रहैत छली।

आ माँ अपन व्यथा छातीमे दबा नोर पीबैत रहैत छल।

माँ पर होइत अत्याचारकेँ देख हम मनेमन एक संकल्प लेलहुँ आ ओकरा पुरा करबाक लेल जि जान सँ पढाइमे जुटि गेलहुँ। हमर मेहनत आ लगन सफल भेल आ आइ हमरा मेडिकलमे चयन भऽ गेल।

हमरा चयनमे माँ केँ बड़का हाथ छलैक, जेकरा हम शब्दमे व्यक्त नहि कऽ सकैत छी।

बाबुजी हाथमे कए प्रकारक मिठाइ लऽ कऽ एला आ खुशीसँ झुमैत कहलन्हि, 'आइ हम अपन संगी साथी करकुटुम्बसभकेँ मिठाई खुएबै। मीनाकेँ जन्मपर तऽ घरमे मिठाइकेँ एकटा टुकड़ियो तक नहि आएल।'

डाक्टरीमे हमरा चयन भऽ गेल ई सुनि दाइ सेहो अचंभित छली। हुनकर दृष्टिमे तऽ लड़कीकेँ अधिक पढय सँ की लाभ ? आखिर लड़कीकेँ तऽ चुल्हे फुकयकेँ छैक। जे होइक , हम धरान मेडिकल कलेजमे पढय चलि गेलहुँ।

छुट्टीमे जखन हम आबी तऽ दाइसँ विशेष रुपसँ भेटैत छलहुँ। धीरे-धीरे हम अनुभव केलहुँ जे लड़कीकेँ प्रति दाइकेँ धारणामे परिवर्तन आबि रहल छलैक।

हमरा एकर किछु-किछु अनुमान तऽ छल, मुदा तइयो हम एकर कारण माँ सँ जानय चाहैत छलहुँ। ओ कहलक कि, हमर पिसीकेँ लड़काकेँ लालसामे एककेँ बाद एक करैत ५ टा लड़की भेलन्हि। छठममे लड़का भेलन्हि। एतेक ने लाड प्यार ओकरा देल गेल जे ओ बिगरि गेल। बड़का भेलापर ओ अपराधी प्रवृतिकेँ निकलल। ओकर आदत आ व्यवहार सँ मायबाबुकेँ ओकरा बेटा कहयमे लाज होबय लागल छैक।

पाँच बरखकेँ बाद जखन हम एमबिबिएस केँ डिग्री लऽ कऽ घर एलहुँ तऽ मायबाबुकेँ सँग-सँग दाइकेँ आँखिमे सेहो खुशी देख हम पुलकित भऽ उठलहुँ।

एखन हमर संघर्ष जारीए अछि। आगा आओर पढिलिख कऽ सर्जन बनय चाहैत छी। दूनु दिदीकेँ विवाह भऽ गेल अछि। आब बाबुजी हमर विवाह कऽ अपन उत्तरदायित्वसँ मुक्त होबय चाहैत छथि, मुदा हमरा सर्जन बनबाक इच्छाकेँ देखैत हमर माँ मात्र नहि दाइ सेहो हमरा आगा पढाबयकेँ लेल बाबुजीकेँ मनौने छल।

आइ कठिन परिश्रमक बाद हम एक कुशल सर्जन बनि गेल छी। दाइकेँ अल्सरक अपरेशन हम स्वयं अपने हाथसँ कएलहुँ अछि।

आब हमर दाइ बेटाकेँ वकालत नहि करैत अछि। आब तऽ ओ कहल करैया बेटा हो वा बेटी कूलकेँ मर्यादा हेतु शिक्षा आ संस्कार आवश्यक अछि। एकर अर्थ हम बढिया जकाँ बुझैत छी, मुदा जखन दाइ बजैत अछि तऽ खुशीकेँ ठेकान नहि रहैत अछि।

बनैत-विगरैत

रुम सँ बाहर निकलि ओ ठण्ढाकेँ अवस्था बुझलन्हि । बाहर कड़ा धुनि अछि आ पच्चिस तीस फिटक बाद किछु देख पायब मुश्किल अछि। हावा बहुत ठण्ढा आ हाड़ तोड़ि देबयबला अछि। ओहिना हुनका लगलन्हि समयकेँ गति बहुत छोट भऽ गेल अछि। रुमक एक-एक समान पर रुकि गेल अछि समय । ई रुकल समयकेँ अनुभव हुनका भितर तक जेना तोड़ि कऽ राखि देने हुए ।

मन बहुत उदिग्न आ अशान्त भऽ गेल। लगलन्हि पुरे शरीर हिमखण्ड जकाँ रहि गेल हुऐ ।

अहि कड़ा धुनिमे क्षण मात्रक लेल बाहर निकलब खतरा सँ खाली नहि अछि। वृद्ध शरीरक लेल तऽ अओर बेसी। तइयो ओ अपन निर्णय पर दृढ छथि । जयबाक अछि तऽ जयबाक अछि। आब एतय क्षण मात्र सेहो रुकि पावि हुनका लेल सम्भव नहि अछि। गाड़ीक समय रहैत तऽ काल्हि रातिए निकलि गेल रहितथि । पुरे राति ओ अलग चिन्ता सँ बितौलन्हि आ भोर होइते घर जायकेँ घोषणा कऽ देलन्हि ।

'रुकबै नहि बाबुजी !' नागेश्वर पुछलन्हि ।

'नहि ।' महेन्द्र बाबु संक्षिप्त उत्तर दैत अपन ओवर कोट पहिरय लगलाह ।

'किछु दिन आओर रुकि जइतहुँ तऽ बढीया होइतै ।' ई बुझैत की बाबुजीकेँ निर्णयकेँ बदलि पावि हुनका बशक बात नहि अछि , ओ अन्तिम प्रयास कएलन्हि ।

महेन्द्र बाबु चुपचाप अपन समान बैगमे भरय लगला। नागेश्वर बहुत देरधरि यन्त्रवत ठाढ रहलथि। अहि जाढ़मे हुनका रुम सँ बाहर निकलब आ बसक यात्रा कऽ घर पहुँचब खतरा सँ खाली नहि लागि रहल छल। हिरा ओना हुनका जाय सँ रोकि सकैत छल मुदा ओ हुनका सँ चिढायल छली। कोनो उपाय नहि देखलाक बाद नागेश्वर पराजित जकाँ हिरा लग पहुँचलथि, 'बाबुजी गाम जायकेँ तैयारी कऽ रहल छथि । '

हिरा कोनो जवाब नहि देली। ओतय सँ उठि किचन दिस बढि गेली। नागेश्वर भितरे भितर जरि गेलथि । बाबुजी रुम भितर उपस्थित छलथि आ एहन अवस्थामे किछु बाजब हुनका लेल सम्भव नहि छल।

स्वयंकेँ समान्य करैत ओ पुन: कहलन्हि, 'बाबुजी घर जा रहल छथि !'

'तऽ हम की करु' हिरा कड़ा स्वरमे जवाब देली ।

'अहाँ चाही तऽ बाबुजी रुकि सकैत छथि' नागेश्वर कहलन्हि ।

'हमरा चाहला सँ कोन एहन काम होइत अछि अहि घरमे !' हिराक स्वरमे वैह कड़ापन उपस्थित छल ।

नागेश्वर चुप भऽ गेलथि । बात आओर बढे ओ नहि चाहैत छलाह ।

काल्हि रातिक घटना हुनका आँखिमे नाँची उठल। ओहन कोनो बात नहि छल जकरा तुल देल जा सकैत छल। मुदा संयम आ संयोग ककरो हाथमे नहि होइत अछि। ठीक एहने हुनका संग भेल। हुनक आकांक्षा पर आब पानि फेरल गेल। बाबुजी रातिएमे एतय नहि रहबाक निर्णय कऽ लेलन्हि आ आब जायकेँ तैयारीमे छथि । हिरा कहती तऽ बाबुजी निश्चित रुप सँ रुकि सकैत छथि। मुदा ओ नहि कहती। ओ पुरापुर तमसायल छथि आ अहि सन्दर्भमे कोनो बात नहि करय चाहैत छथि ।

ओ पुन: बाबुजीकेँ रुम तक घुमि एलाह। आब बाबुजी पुरापुर जायकेँ तैयारीमे छलाह। बैग हुनकर कुरसीक बगलमे निचा राखल छल आ ओ आँखि मुनि किछु सोचि रहल छलाह। नागेश्वरकेँ एलाक बाद हुनक निन्न भंग भेलन्हि, 'कनियाँकेँ बजाउ।'

साँप काटि लेने छल जेना नागेश्वरकेँ। पुरा शरीरमे एकटा जोड़ सँ घुर घुरायल आ यंत्रवत चलैत ओ किचनमे हिराक लग पहुँचलथि, 'बजा रहल छथि, बाबुजी'

'कथि लेल ।'

'हमरा नहि बुझल अछि। जा कऽ बुझि लिअ ।'

हिरा ओतय सँ हिललथि तक नहि । नागेश्वर तमसाइते अपन रुममे चलि गेला ।

आठ दिनमे महेन्द्र बाबु अहि स्थिति सँ परिचित भऽ गेल रहथि।

हरेक समय घरमे पसरल चुप्पी हुनका भितर तक तोडि रहल छल।

पुरा जिवन ओ बिना सम्झौताकेँ जिलथि। अभावक दिन सेहो कहियो उदासी सँ नहि कटलथि। मुदा आब पुरा सुविधा भेलाक बादो ओ प्रसन्न नहि रहथि। नागेश्वर हिराक बीच पसरल चुप्पी हुनका नीक नहि लगैत छल। ओ जतेक नागेश्वरकेँ जनैत छलाह ओहि सँ बेसी हिराकेँ।

हिरा कहियो एहन काज नहि कएलन्हि जाहि सँ परिवारमे विभाजन हुए। हिराक कारणे गामक जमिन जालक बाँटबखरा एखनधरि नहि भऽ सकल अछि। नहि तऽ नागेश्वर परोक्ष रुप सँ कएबेर अहिकेँ लेल प्रयास कऽ चुकल छथि।

नागेश्वर अपन महत्वाकांक्षाक पूर्तिक लेल एतेक हद तक निचा खसि सकैत छल , ओ कहियो सोचने नहि रहथि। नागेश्वर पर हुनका ओतबे भरोसा छल, जतेक सुरेश्वर पर।

सुरेश्वर गामक नजदिक एकटा छोटका बजारमे हार्डवेयरकेँ दोकान खोलि पुरापुर अपन व्यवसायमे रमल छथि आ खेती सेहो कऽ लैत छथि। अपन निजी जिवनमे पुरा परिवारक संग प्रसन्न छथि। हुनक व्यवसायकेँ शुरु करबाक लेल ओ हुनका २५ हजार रुपैया देने रहथि। पढय लिखयमे लापरवाह रहयबला सुरेश्वर अपन व्यवसायमे एतेक सफल हैत, हुनका विश्वास नहि छल। मुदा अहि मामिलामे ओ सफल खेलाडी निकलला आ आइ लाखोकेँ पुजी सँ खेल रहल छथि।

एकर ठीक विपरित नागेश्वर तेज भेलाक बादो अपन महात्वाकांक्षामे नियन्त्रण नहि कएलाक कारण अपना बले पियुनक नोकरी नहि खोजि सकलथि। ओ अपन सोर्सक बलपर एकटा निजी क्याम्पसमे नोकरी दियैलन्हि तऽ डाक्टर बनयकेँ चक्करमे नागेश्वर लातमारि देने छलथि। हुनकर जिद्दक आगा कोनो बात नहि देखलाक बाद एक लाखक पूँजी उपलब्ध करौलन्हि। तऽ अखन आबि कऽ व्यापारमे किछ प्रगति कऽ सकलथि। अहिकेँ बादो ओ प्रसन्न नहि रहैत छथि तऽ ओ की कऽ सकैत छथि ?

नागेश्वरकेँ बेर-बेर टेलिफोन कएलाक बादे ओ एतय आबयकें मन बनौने रहथि।

सुरेश्वर सेहो कहने रहथि, एक स्थान पर रहला सँ लोककेँ मोन उबिया जाइत छैक। घुमि फिर आउ। बहुत मुश्किल सँ मोन बनेलाक बाद ओ विराटनगर आएल रहथि।

'व्यवसाय कोना चलि रहल अछि ?' एलाक बाद नागेश्वर सँ पुछलन्हि।

'ठिके अछि।' नागेश्वर अनमने मन सँ कहलन्हि, 'शहरमे छोटका पुँजी सँ काम करब बहुत कठिन होइत अछि। अहि ठाम तऽ जतेक लगाउ ओतेक पाउ बला बात अछि।'

'ई तऽ हरेक स्थान पर अछि। मुदा अपन सीमा सेहो देखय परैत छैक।' महेन्द्र बाबु कहलन्हि, 'व्यवसायमे बहुत धैर्यक आवश्यकता होइत छैक। फेर जोखिम सेहो कम नहि होइत अछि। सुरेश्वरकेँ देखियौ, अहाँ सँ छोट भेलाक बादो व्यवसायमे कतेक आगा अछि।'

'सुरेश्वर आ हमरामे बहुत अन्तर अछि बाबु जी, सुरेश्वरक नाम सुनिते जरि गेल रहथि नागेश्वर, 'संसार बहुत तेजी सँ बढि रहल अछि। गामक बच्चा एखन क्रिकेट खेल तक पहुँचल अछि तऽ शहरक बच्चा कम्प्यूटर पर नेट सर्फिङ्ग कऽ रहल अछि। जतेक ओतय परिवारकेँ खुवाबय मे खर्च होइत अछि ओहि सँ बेसी एकटा बच्चाकेँ पढाबयमे। '

'हँ ई तऽ अछि।' बात समाप्त करबाक उद्देश्य सँ महेन्द्र बाबु कहलन्हि, 'अपन-अपन सोच अछि मुदा एहन नहि अछि की गामक ..। '

महेन्द्र बाबु नागेश्वरक लेल शुरु सँ सम्वेदनशिल रहल छथि। हुनक भावनाकेँ सम्मान सेहो करैत छथि। मास्टरीकेँ साधारण नोकरीकेँ बावजुद हुनका शहरमे पढौलन्हि–लिखौलन्हि। प्रयास तऽ सुरेश्वरक लेल सेहो बहुत कएलन्हि मुदा ओ एसएलसी सँ आगा नहि बढि सकला। नागेश्वरकेँ डाक्टर बनेबाक इच्छा ओहे मनमे पैदा कएने छलथि आ अपन अपूर्ण सपनाकेँ मूर्तरुप देबयकेँ प्रयास कएने रहथि।

आइएससी कएलाक बाद काठमाण्डूक एक कोचिङ्ग संस्थानमे डाक्टरक कम्पिटीशनक तैयारीकेँ भारी खर्चा सेहो उठौने रहथि। शायद एतेक बड़का खर्चक बोझा उठा पावि हुनकर बसक बात नहि होइत यदि गाममे जीवन यापनक सुदृढ आधार नहि रहैत तऽ। घरक खर्च खेती सँ चलि जाइत छल। तलबकेँ जे रुपैया अबैत छल आवश्यक्ता अनुसार नागेश्वरमे झौकैत रहलथि। प्रारम्भिक परीक्षामे ओ चुना सेहो गेल रहथि मुदा मुख्य परीक्षामे सफल नहि भऽ सकलथि।

नागेश्वरक विषयमे ई बात जोर सँ फैलय लागल की ओ डाक्टर बनयबला छथि। अहि बीच हुनकर विवाहक प्रस्ताव सेहो आयल आ ओ हिरा सँ हिनका विवाह कऽ देला। समस्या तखन उत्पन्न भेल जखन विवाहक पाँच वर्षक बाद सेहो अपना लेल छोटको नोकरी नहि ताकि सकलथि। आ दूगुणा बोझ भऽ गेलथि। इम्हर सुरेश्वरक लेल सेहो प्रस्ताव आयल आ ओ हुनकर सेहो विवाह कऽ देलथि। सुरेश्वरक व्यवसायक लेल पूँजी बहुत दिक्कत कऽ कऽ जोड़लन्हि। मुदा हुनकर व्यवसाय सँ हुनका बहुत राहत भेटल।

नागेश्वर सेहो जखन अपन व्यवसाय शुरु करवाक इच्छा प्रकट कएलन्हि तऽ ओ बहुत प्रसन्न भेलथि। अहि विषयमे ओ सुरेश्वर सँ सेहो सहायता लेलन्हि आ हुनका लेल पूँजीक प्रबन्ध कएलन्हि। अहि प्रकारे टुटैत-टुटैत स्वयंकेँ जोड़ि लेलन्हि।

सेवा निवृतिक तीन महिनाक बाद कनियाँकेँ हर्ट एटेक भेलन्हि आ ओ एक झटका सँ चलि गेलीह। इलाज करावयकेँ समय सेहो नहि भेटल।

कनियाँकेँ गेलाक बाद हुनका पत्ता लगलन्हि की अकेलापन कतेक खतरनाक आ दुखदायी होइत अछि। उपर सँ सेवा निवृति भेलाक बाद पेंशन एवं अन्य रुपैया लेवयमे सयटा लफड़ा।

जखन तीन महिनाक दौड़धुपक बाद हुनका बुते नहि भेलन्हि तऽ ओ थाकि हारि कऽ ई जिम्मा सुरेश्वरकेँ दऽ देलथि। इम्हर नागेश्वर बेरबेर फोन करथि, 'पैसा देलक की नहि बाबुजी।'

महेन्द्र बाबु परेशान भऽ जाइत छलाह, 'की कहियौ, की भेल ! एखन तक तऽ किछ नहि भेल अछि। सुरेश्वर लागल छथि उम्मीद अछि बहुत शीघ्र समस्या समाधान भऽ जायत।'

सुरेश्वरक नाम अबिते नागेश्वर आशंकित भऽ उठैत छलथि। अवश्य कोनो चाल अछि। ओ घर आबय चाहैत छलाह मुदा व्यवसाय जेना हुनक पंख कुतरि देने छल। पैसा भेटलाक बाद महेन्द्र बाबु कहलन्हि- सुरेश्वरक सुझबुझ सँ सभ काम असानी सँ निपटि गेल छल।

नागेश्वरकेँ चिन्ता बढि गेलन्हि। ओ हिराकेँ कहलन्हि, 'बाबुजी सँ कहु की व्यवसाय बढावयकेँ लेल कम सँ कम ३ लाखकेँ आवश्यक्ता अछि। हुनका एतय एला आठ दिन भऽ गेल, एखनधरि कोनो बात नहि भऽ सकल अछि। आखिर हमसभ तऽ हुनका अहि दुआरे बजौने छी।'

'अही किए नहि कहैत छियैक !' हिरा भड़कि उठली, 'हम पहिनहि कहने छलहुँ की हुनका सँ किछ नहि कहब। अहुँकेँ रोकने छलहुँ। ओ स्वयं दैत छथि तऽ कोनो बात नहि। मुदा अहि प्रकार कहि कऽ लेब पुरा-पुरा धोखा अछि।'

' ई अहाँ कहि रहल छी ! ' नागेश्वर झनकि उठला। धोखा ई अछि।

'आओर नहि तऽ की ! हिरा तनि गेली, 'एकरा की कहबै !' सुरेश्वर सँ बेसी ओ अहाँकेँ मानैत छथि।

'पता चलत जखन पुरा रुपैया सुरेश्वरक जिम्मा चलि जायत फेर हमरा सँ किछ नहि कहब। '

'हमरा किछ नहि कहबाक अछि। इ हुनकर इच्छा, मुदा एतेक अवश्य अछि, हुनकर मनमे खोट वा दूर्भावना नहि अछि।'

'मतलब अहाँ नहि कहब !' इहे ने !

' ई पहिनहि कहि देने छी।'

'ठीक छैक, नहि कहियौ।' तमसाइत ओ अपन रुममे चलि गेलथि।

महेन्द्र बाबुक आँखिकेँ आगा अन्हार भऽ गेल। हृदयमे आगि लागि गेल।

....तँ इहे उद्देश्य सँ हमरा बजाओल गेल छल ? एतेक दौड़ करयकेँ आवश्यक्ता कीए ? सीधे कहि दैतथि। दूनुक बीच ओ स्वयं रुपैया बाँटि दितथि। हुनकर ई इच्छा सेहो छल। ई ठीक अछि कि हुनकर काम पेंशन सँ चलि जाएत।

मुदा बिमारी तिमारी भेल तऽ केँ देखत हमरा ? सम्पत्ति लोककेँ नियत बदलि दैत अछि। की भरोसा सुरेश्वर सेहो मुँह घुमा लिए। कहत एकटा हमरे तऽ अहाँ खजाना नहि दऽ देने छी। हुनको देने छी तऽ हुनको जिम्मेवारी बनैत अछि देखभाल करबाक। नहि-नहि, सुरेश्वर एना नहि कऽ सकैत अछि। किए नहि कऽ सकैत अछि ? नागेश्वर सँ सेहो कहाँ एहन उम्मीद छल ..... ।

हुनकर पुरा शरीर चिन्ता सँ थरथराय लागल। जेकरा लेल एतेक किछु कएलहुँ पैसाकेँ लेल एतेक दूर तक सोचि सकैत अछि, हुनका विश्वास नहि छल। विश्वास तऽ एखनो नहि होइत अछि। यदि अपन कान सँ सभ किछु नहि सुनि लेने रहितथि। दूनुक बातचितक शब्द अबेर राति धरि हुनकर मस्तिष्कमे बजैत रहल।

भोर जलपानक बाद ओ भरायल अवाजमे हिरा सँ कहलन्हि, 'नागेश्वर सँ कहथिन गाम आबि कऽ जमिन जाल बाँट बखरा कऽ लेतैक। पाकल आमक की भरोसा ? कखन टपकि जाइ। बादमे दूनुक बीच कोनो विवाद हुए, हम नहि चाहैत छी। हमरे जिवनमे सभ किछु निपटि जाए तऽ बढीया ....'

हिरा किछु कहि पौती ओहि सँ पहिनहि बैग उठा कऽ चलि देला। बाहर कड़ा धुनि पसरल छल.....।

ढोल

घरमे अफरा तफरी मचल छल। बहुतरास अटकल सभ लागि रहल छल। मेकअप करावय गेल डली एखनधरि ब्यूटीपार्लर सँ नहि घुरल अछि। सभ चिन्तासँ डलीकेँ केखनो ई ब्यूटीपार्लरमे तऽ कखनो ओ ब्यूटीपार्लरमे खोजि रहल छल।

प्रकाश काका बहुत ठण्ढमे सेहो माथक पसिना पोछैत अपन कनियाँकेँ डाँटि रहल छलाह कि ओ बेटीकेँ ब्यूटीपार्लर किया पठौने छली। बरियाती दलान पर पहुँच गेल आ कनियाँकेँ एखन धरि कोनो अत्ता पत्ता नहि छल।

बरियाती उत्साहमे बैंडक धुन पर नाँचि रहल छल, मुदा छत पर ठाढ बरियाती देख रहल महिला आ ओ बरियातीकेँ स्वागतकेँ लेल बाहर ठाढ सरियातीकेँ मनमे नहि कोनो उत्साह रहि गेल छल। रहि-रहि कऽ सभकेँ एक्केटा प्रश्न डसि रहल छल, 'यदि डली कतौ नहि भेटत तऽ की हेतैक ? बरक बाबुकेँ कोन मुहसँ कहल जाय कन्या भागि गेल, अपने बरियाती फिर्ता लँ जाउ।'

स्वागतकेँ बाद बरके बरियाती सहित समियानामे लाओल गेल। सरबतक क्रम चलल, तहिना बरियातीकेँ जलपान कराओल गेल। अन्नापानक समय बित रहल छल। ब्यूटीपार्लर मे नहि भेटलाक बाद ओकर संगीसभक घरमे ताकय लागल छल। मुदा संगी सभ तऽ स्वयं विवाह समारोहमे उपस्थिति छली। ओकरा सभसँ क्रमश : पुछल गेल की, ओ अनुमान लगा सकैत अछि की डली अइ समय कतय भेटत मुदा सभ अनभिज्ञता प्रकट केलक।

किछु कुटुम्बसभ आशंका व्यक्त केली कि कतौ पार्लर सँ घुरैत काल बाटमे दूर्घटना तऽ नहि भऽ गेल कारण जइ कारसँ डली पार्लर गेल छल ओकर ड्राइवरकेँ सेहो कतौ पत्ता नहि छल। लगक अस्पताल आ नरसिंह होममे सेहो ताकल गेल।

सभकेँ विश्वास भऽ गेल कि डली भागि गेल। डली मेकअप करावय ब्यूटीपार्लर गेल ओही समय हमर माथ ठनकल छल। डलीकेँ ब्यूटीपार्लर जायकेँ आवश्यकता किए छल ? ब्यूटीशियनकेँ घरमे बजाओल जा सकैत छलैक, मुदा काका काकी स्वयं आइ अपन बेटीके नहि रोकलथि तऽ हमरा सभके की पडल छल जे टोकितहुँ।

घडीकेँ सुइ घुमि रहल छल मुदा विवाहक प्रक्रिया शुरु नहि भेल छल। बर पक्षक लोककेँ डलीकेँ भागि जायकेँ जानकारी नहि छल, मुदा सरियातीके मुँह देखि ओ सभ इ अनुमान अवश्य लगौने छल, किछु घटना अवश्य भेल अछि।

घडीकेँ सुइ जखन १२ अंक पार कऽ गेल तऽ बरक बाबु प्रकाश काका सँ पुछला, 'आब किए अबेर भऽ रहल अछि ? '

लज्जासँ माथ झुकौने काकाजी हुनकासँ भितर चलयकेँ लेल कहला। आ मुँहपर जिज्ञासाक भाव लेने ओ घरमे गेला। प्रकाश काका लाज सँ भरल स्वरमे हुनका वस्तुस्थितिकेँ जानकारी करौलन्हि आ क्षमा मंगला।

बरक बाबु इ समाचार सुनि सन्न रहि गेला। एकाएक किछु बाजि नहि सकला, फेर क्षुब्ध स्वरमे काकाजी आ हुनकर चरित्रहीन बेटीकेँ विषयमे अनाप-सनाप कहय लगला।

बेचारा काकाजी माथ झुकौने चुपचाप सुनैत रहला। सुनयकेँ अतिरिक्त आओर चारा सेहो की छल ? काकाजीकेँ लाजसँ माथ झुकल देखि सभकेँ संग हमरो डली पर बहुत तामस आबि रहल छल। ओकरा भागहेकेँ छलैक तऽ किछु दिन पहिने भागि जाति। ठीक विवाहक समय भागि कऽ ओ अपन घरक लोककेँ कतेक बेज्जति करौलक। प्रकाश काका पर की बित रहल छल। ई तऽ बस, ओहे जनैत छलाह।

तमसेलाक बाद बरक बाबु परेसान संग घरक बाहर एला आ समियानामे बैसल अपन पुत्रकेँ सभकिछु बतादेला। कनियाँकेँ भागि गेल जानकारी पबिते ओहो चौक गेला। ओ तऽ उत्साहसँ भरल बहुत कालसँ प्रतिक्षारत छलाह जे, केखन कनियाँकेँ देखब, मुदा डली हुनकर सब रंगीन सपना माटिमे मिला देलक।

रुपैया सँ बेसी चिन्ता बरकेँ बदनामीकेँ छल। विवाह बिना केने घुमलासँ लोक दुसत।

किछु देर तक बापबेटा आपसमे सल्लाह करैत रहला। फेर बरक बाबु धीरे स्वरमे प्रकाश काका सँ कहला, 'यदि अपनेकेँ कर कुटुम्बमे कियो विवाह योग्य सुन्दर कन्या एतय उपस्थिति अछि तऽ तेकरे सँ करबा दियौ कारण हम सभ फिर्ता लौटब नहि।'

काकाजी एक खोजपूर्ण दृष्टि घरमे बैसल लडकी पर देलथि। हुनकर घुमैत नजरि हमरा पर आबि टिक गेल। किछु देर तक ओ हमरा आँखिसँ तौलथि रहला की हमर नाम प्रस्तावित करी वा नहि। फेर ओ दोसर रुम मे चलबाक लेल कहला।

'प्रतिमा, कनी इम्हर आ तऽ!' काकाजी हमरा बजौला।

जखन हम हुनका लग पहुँचलहुँ तऽ कानब स्वरमे बजला, 'प्रतिमा, डली तऽ घरसँ भागि गेल.... यदि तो डलीक स्थान पर कनियाँ बनि जाय चाहैत छे तऽ घरक इज्जत बँचि जायत, लडका लाखोमे एक अछि, तो जीवनमे कहियो दुख नहि पेबे।'

काकाजीक प्रस्ताव सुनि हम कनिक देर लेल अकचका गेलहुँ। लडका सहीमे काबिल आ स्मार्ट छलाह, मुदा एना अचानक हम कल्पना नहि केने छलहुँ।

'जी.... हम की कहुँ..... अपने हमर मायबाबु सँ पुछि लिए नँ' हम डेराइते डेराइत कहलहुँ।

भैया आ भौजीसँ हम बादमे बात कऽ लेब तो कनी इम्हर आ तऽ कहि ओ निकटवला रुममे लऽ गेला जतय बर महोदय बैसल छलाह। हमर परिचय करबैत काका कहला, 'ई हमर भतिजी अछि। पढल लिखल अछि। एतय उपस्थित लडकीमे सबसँ सुन्दर अछि, अपने देख लिय।'

बर महाशय एकबेर कनखी नजरिसँ देखला आ सहज भाव सँ स्वीकृतिमे माथ हिला देलैथ।

हमर विवाह भऽ रहल अछि , ई सुनैत पुरा घरमे सनसनी पसरि गेल। लटकल चेहरा फेरसँ चहकय लागल।

जल्दीसँ हमरा श्रृंगार कायल गेल। विवाहक कपडा तऽ नहि उपलब्ध छल, डली ओ पहिरने चलि गेल छल। हमरा डलीबला एकटा लाल रङ्गक सुन्दरसन साडी पहिरा देल गेल। लजाओल सकुचायल सन हमरा विवाहक बेदी लग बरक संग बैसा देल गेल।

मंत्रोच्चारण होवय लागल। महिला सभ मंगलगीत गाबि बिसरि कानाफुसीमे व्यस्त छल। हमरा कन्यादान करवाक लेल काकाजी संगे बैसल रहथि। कारण बरक बाबुक आग्रह छल की बरियातीकेँ अहि बातक कोनो भनक नहि पडक चाही जे कनिया बदलि गेल अछि।

हमर बाबुजीद्वारा कन्यादान करय पर सम्भव छल, हुनका सभकेँ सन्देह भऽ जाइत दालिमे किछु काला अछि। फेर कन्यादान करयवलाकेँ उपासे रहबाक हमरा सभक परम्परा अछि।

किनको चेहरा पर कोनो उत्साह नजरि नहि आबि रहल छल। ई विवाह नहि, विवाहक मात्र औपचारिकता पूर्ति करब छल, घरक लाज झापयकेँ लेल।

लम्बा चौडा, स्मार्ट सेनाक कैप्टन सन बर हमरा अनायासे फ्रि मे भेटब केकरो सोहा नहि रहल छल। बहुत दौडधुप कएने छलथि, काका जी अहि बरके ताकयमे।

बहुत बड़का-बड़का घरसँ प्रस्ताव आबि रहल छल, आकर्षक लडकाकेँ लेल मुदा काकाजी सभसँ उच्च बोली लगा कऽ हिनका अपना बेटीकेँ लेल किनने रहथि। मुदा बिगडल बेटी सभ कायल धायल पर पानि फेर देने छल। दुखित मनसँ ओ कन्यादान कऽ रहल छलथि।

ईर्ष्या सँ काकीकेँ नैहरवला सभ दबल स्वरमे कहि रहल छलथि, प्रतिमाकेँ बाप स्वयं बिका जाइत तइयो, एहन सुन्दर आ काबिल जमाय नहि भेटतन्हि। बेटीकेँ कर्म देखु, हिङ्ग लागल आ नैं फिटकिरी आ झट कैप्टनकेँ कनिया भऽ गेलथि।

करकुटुम्बक बात तीर जँका हमरा करेजमे चुभि रहल छल। मुदा ओहि स्थितिमे हुनका सभ सँ कहि की सकैत छलहुँ ! फेर ओ गलत सेहो नहि कहैत छल। बाबुजीक छोटका सन नौकरीमे घिचताचि कऽ जेना

तेना हमरसभक गुजारा होइत छल। काकाजी तऽ समृद्ध व्यवसायी छलथि, अहि दुआरे डलीक लेल महंग वर खोजि लेने रहथि आ संयोगसँ ओ हमरा भेट गेल।

लावा छिरियावय काल प्रियतमकेँ घुघंटसँ एकतरफा देखलहुँ। ओ उदास छलथि, विवाह जेहन महत्वपूर्ण अवसर पर एहन घटना भऽ गेलापर हुनका उदास होएव स्वभाविकेँ छल।

'कोनो वात नहि, हम प्रेम आ सेवासँ हुनकर मन जीत लेव आ हुनका सँ एकदिन कहवा लेव विवाहक दिन डलीकेँ भागि जायव एक प्रकार सँ निके भेल। डली हुनका लेल एतेक निक आ समर्पिता कनियाँ साबित नहि भऽ पइती' हम मने मन निश्चिय कएलहुँ।

सिन्दुरदानक वाद हमरा सासुर जायकेँ तैयारी होवय लागल। विवाहक एक दिनक बाद दुरागमण केँ काका जी डलीए कें लऽ कऽ तय कएने रहथि। इम्हर दहेजमे देवयवला सभ समान पैक कऽ कऽ स्टोरमे राखि देल गेल। हमरा कर्ममे डलीकेँ वरकेँ तऽ दऽ देल गेल मुदा डलीकेँ मुल्यवान दहेज हमरा हुनकर मायबाबु किया देती ?

काकाजी तऽ शायद तइयो मनेमन इच्छा रखैत हेता कि समान हमरा देवयमे कोनो फरक नहि, मुदा कलह प्रिय काकी इ केना मानि सकैत छलथि ? मने-मने बरबराइत हतास भऽ ओ बेर-बेर हाथ मलथि।

वैभवकेँ घमण्डसँ केकरो किछ नहि बुझयवाली ओ रुपगर्विता ने कहियो अपना सासुरक लोककेँ इज्जत कएलन्हि ? काका समृद्ध व्यवसायी छथि तऽ अपन कनियाँक नहिरावला पर। कनियाँक आदेशकेँ टालव हुनक साहसमे नहि छल। काकी स्वयं समान स्टोरमे रखवौलन्हि आ फेर ताला लगौलन्हि। काकाजी एक दू बेर भनभना कऽ कहलन्हि सेहो की कनियाँ खाली विदा करव, की कहत लोक ? आखिर हम सभ कन्यादान कएलहुँ अछि, मुदा काकी एना कऽ काकाजी पर आँखि भौं तनलथि की ओतवेमे हुनक होस गुम्म भऽ गेल रहन्हि।

डलीकेँ विवाहमे पहिरयक लेल जे अपन कपडा अनने छलहुँ सैह हमरासंग गेल। कनियाँकेँ ओहिना बिना दहेजकेँ जाइत देख वरियाती सभ आश्चर्यमे छल। गरीब लोक सेहो अपना बेटीकेँ विवाहमे एना नहि करैत अछि। जाहि राजकेँ सहेजकेँ जाइत देख वरियाती सभ आश्चर्यमे छल। जाहि राजकेँ नुकावयकेँ लेल बरक बाबु काकाजीकेँ आग्रह कएने छलथि, आखिर खुलिए गेल। हम तऽ खैर काकीक ओछ व्यवहार सँ पुरापुर परिचित छलहुँ अहि दुआरे हमरा हुनकर व्यवहार अटपटा नहि लागल मुदा बर पक्षक लोक एहन ओछपनकेँ उम्मीद नहि कएने छल हैत।

हमर बाबुजी बरक बाबु सँ खुब हाथ जोडि कऽ निवेदन कएलन्हि की अहि प्रकारक अचानक विवाह भेलाक कारण ओ अहि समय बेटीकेँ दहेज देवयमे असमर्थ छथि, मुदा दोंगाक समयमे बेटीकेँ जे वनि सकत देव। हुनकर वात सुनि हमर ससुर मुँह विचका लेलथि।

रातिमे माँ अपन पुरा गहना उतारि कऽ हमरा पहिरा देने छल। नैहरकेँ इहे सनेश लऽ कऽ ओतयसँ विदा भेलहुँ। हमरा दहेजमे देल जायवला फुलसँ सजल कार काकी ग्यारेजमे वन्द करा देने छली।

विदा भेलाक वाद हम बहुत देर तक हिचकी लैत रहलहुँ, वर हमरा चुप करावय वा सांतवना देवयकेँ प्रयास नहि कएलन्हि। निर्विकार भावसँ ओ खिडकी सँ बाहर देखैत रहला। हमर मन होइत छल वर हमरा प्रेम सँ गला लगवथि, कहैत की नहि कानु प्रतिमा....., मुदा वर बाट भरि किछ नहि बजलथि। थाकि कऽ हम स्वयं चुप भऽ घुंघटमे गठरी बनल बैसल रहलहुँ। कानयसँ माथमे दर्द होवय लागल छल। प्यास सँ कण्ठ सुखि रहल छल। मुदा वर सँ पूर्व परिचय नहि भेलाक कारण पानि माँगयमे संकोच अनुभव भऽ रहल छल। जखन बाहर अन्हार भऽ गेल तखन घुंघट हटा लेलहुँ आ सीट पर सुति रहलहुँ।

भोर होइत-होइत भक्तपुर पहुँच गेलहुँ। कनियाँकेँ खाली हाथ अवैत देख सासुरक महिला सभ आश्चर्यमे छल। रुखापन सँ बहुत ठन्ढा स्वागत भेल। कतहुँ कोनो उत्साह, कोनो उमंग कोनो खुशी नहि, घरक रुममे हमरा बैसा देल गेल।

घरक सदस्य आ पाहुन अपन खाय पिय आ दैनिक क्रियाकलापमे व्यस्त छल। दिनभरि हमर सुधि लेबय कियो नहि आयल। बर सेहो नहि जानि कतय हरा गेल छलैथि। एकोबेर रुममे आबि कऽ नहि झंकलैथि शायद यात्रा सँ थाकल होवयकेँ कारण कतहुँ सुति रहल छलथि, हम अनुमान लगेलहुँ। हमरो थकान महसुस भऽ रहल छल। अत: हम रुममे बिछायल डनलप पर सुति रहलहुँ। बीचमे हुनकर नोकरनी २/३ बेर आबि कऽ जलपान आ भोजन दऽ गेल।

साँझखन पार्टी छल। बधाई देबय बलाकेँ लाइन लागल छल। रातिमे ११ बजे सासुरकेँ ३/४ टा महिला हमरा कारमे बैसा कऽ एकटा भव्य फाइवस्टार होटलमे लऽ गेल। बर हमरा संग नहि आयल रहथि। सजल धजल कक्षकेँ फुलसँ सजाओल पलंग पर हमरा बैसबैत हमर दियादनी कहली, 'प्रतिमा, अहाँ एतय किछ देर अराम करु। बर अबैत हेताह।'

हमरा होटलमे छोड़ि ओ सभ फिर्ता भऽ गेलैथ। रुम कनी-कनी सुगंन्धसँ गमकि रहल छल। पलंग पर कएल गेल फूलक सजावट अनुपम छल। खिड़की केवार पर दामी परदा झुलि रहल छल। नजदीक रहल टेबुल पर आकर्षक ढङ्ग सँ खाद्यपदार्थ सजल छल। पलंग पर ओछायल गद्दा बहुत मोलायम आ गुदगुद छल। सासुर लोकक रुख व्यवहारकेँ बिसरि हम पिया मिलनकेँ मधुर कल्पनामे हेरा गेल छलहुँ।

बैसल-बैसल बहुत अबेर भऽ गेल मुदा बर नहि एलाह, करीब १२ बजे गेट खुजल आ बर भितर प्रवेश कएलन्हि। हम जल्दीसँ घुंघट ओढलहुँ, हृदय जोरसँ धड़कय लागल। सिल्ककेँ कुर्तापाइजामा पहिरने ओ पलङ्गकेँ निकट आबि गेला। हम लाजसँ सिमटि गेलहुँ, किछ देर अहिना बित गेल। हम प्रतिक्षा करय लगलहुँ, मुदा ओ पलंग लग चुपचाप ठाड़ छलथि। हम आखि सँ देखलहुँ ओ हमरा आश्चर्य ढङ्ग सँ देख रहल छलथि।

'एना किया देख रहल छी' अनायासे हमर मुँह सँ निकलि गेल।

'सोचि रहल छी हमरा आगा कनियाँ सही उपस्थिति अछि वा सपना देख रहल छी।' ओ हमरा हात सँ छुलथि, 'हम तऽ डेरा रहल छलहुँ कतहुँ कनियाँ विवाह कएलाक बाद भागि गेल होइ!'

'कनियाँ विवाह कएलाकबाद किया भागत...' हुनका व्यङ्ग सँ गड़ल बातकेँ अनदेखा करैत हम अस्थिर सँ पुछलहुँ।

'संसारमे असम्भव किछ नहि छैक। कनियाँ यदि विवाह मण्डप सँ भागि सकैत अछि तऽ एतयसँ किया नहि, डलीकेँ बहिने तऽ अहाँ छी' ओ पलंग पर बैसल कड़ा स्वरमे कहलथि।

हुनकर व्यंङ्ग हमर हृदयक भितर तक चीर देने छल। जवावमे हम किछ नहि कहि सकलहुँ। हमर झुकल नजरि आओर झुकि गेल।

ओ तकियाकेँ सहारा लऽ बैस रहलथि आ रुमकेँ चारु दिस ताकय लगलथि। हम प्रतिक्षा करैत रहलहुँ केखन ओ हमर घुघंट उठा कऽ अपन समुधुर दाम्पत्य जीवनक प्रारम्भ करता। किछ देर चुपचाप बैसलाक बाद तिक्त स्वरमे कहलथि, 'ई पुरा तामझाम उतारु आ कोनो हलका फुलका नाइटी पहिरु।' हुनकर विचित्र आदेश सुनि कऽ हम किछ देर स्तब्ध रहि गेलहुँ की हम कतेक मेहनत सँ घण्टो तक श्रृंगार कएने छलहुँ ओ घुंघट उठावय तक केँ आवश्यकता नहि बुझलथि। दुख मन लऽ हुनकर आदेशकेँ पालन करवाक लेल हम पलंगसँ निचा उतरलहुँ तखन स्मरण आयल की नाइटी ओतय अछिए कहाँ जे हम पहिरु, सुटकेस घर पर छुटि गेल अछि।

हम कनी लजाइत अस्थिर स्वरमे बजलहुँ 'जी, नाइटी तऽ एतय नहि अछि, सुटकेस घर पर राखल अछि।'

ओ तमसा उठला, 'गजबकेँ लोक छी, नाइटी तऽ संग लऽ कऽ आवक चाही। आब की पहिरकऽ सुतब। अहि भारी कपड़ामे निन्न आबि जायत अहाँके?'

'निन्न...' हम मने मन बरबरेलहुँ की आइ राति सुतब हम सभ मुदा प्रकट कऽ कऽ किछ नहि बाजि माथ झुकौने ठाड़ रहलहुँ।

बैसु, हम घरसँ सुटकेस मंगबैत छी, कहि ओ उठला, घर फोन करय लगलथि । हम पलंग पर बैसि रहलहुँ ।

किछु देर टेबल पर सजल व्यंजन पर दृष्टि दैत ओ पुछलन्हि 'भोजन कएलहुँ अहाँ ?'

हम नहिमे माथ हिलेलहुँ ।

'खा लिअ' ओ आदेश देलन्हि ।

'अपने.....अपने नहि खायब ?' हम डेरायल स्वरमे बजलहुँ ।

हमरा भुख नहि अछि। साँझमे साथी सभ बहुत मिठाइ खुवा देलक, मन भरि गेल अछि।'

'हमरा स्मरण आएल आइ पार्टीमे हुनकर मित्र आ करकुटम्ब बेर-बेर हुनकर मुँह मिठ कऽ रहल छल। सतेँ हुनकर मन भरि गेल हैत। हमरा थोरेक भुख तऽ लागल छल मुदा असगरे खायमे संकोच भऽ रहल छल। 'जी हमरो इच्छा नहि अछि।' हम कनी दुखित स्वरमे कहलहुँ।

किछु देर तक हमरा दिस देखैत बजला, 'एना करु, जखन तक सुटकेस अबैत अछि ताधरि अहाँ अपन पुरा गहना उतारि लिअ आ मुँहसँ पुरे मेकअप सेहो साफ कऽ कऽ आउ।'

हम कानय सन मन बना पलंग सँ उतरि बाथरुम दिस चलि गेलहुँ। एखनो माथ पर घुंघट छल। बाथरुममे जा कऽ जखन हम अपने हातसँ अपन घुंघट उठेलहुँ तऽ हमर आँखि भरि आएल की हम केहन-केहन रंगीन सपना देखने छलहुँ अपन सोहाग रातिक लेल जखन की हमर लोक केहन विचित्र व्यवहार करैत छथि ।

'शायद आभिजात्य वर्गमे सोहाग राति अहिना मनाओल जाइत हैत' गहना उतारैत हम सोचि रहल छलहुँ।

हम रुमालसँ लिपिस्टिक माथक टिकली पोछलहुँ आ साबुनसँ मुँह धोलहुँ।

'प्रतिमा, लिअ आबि गेल अहाँक सुटकेस' ओ आवाज देलन्हि ।

बाथरुममे टाङ्गल तोलियासँ मुँह पोछैत समय, ऐना पर दृष्टि देलहुँ। गहना आ श्रृंगारहीन चेहरा बहुत विचित्र लागि रहल छल। बरक आगा जायमे कनी लाज लागि रहल छल। रुममे जाइत समय हम फेर सँ घुंघट ओढि लेलहुँ। हम घडी पर दृष्टि देलहुँ, २ बाजि रहल छल। सुटकेससँ नाइटी निकालि हम बाथरुम दिस बढि गेलहुँ। नाइटी पहिर लजाइत धीरे-धीरे चलैत पलंग लग पहुँचलहुँ।

'बैसु' अहि बेर ओ कनिक कोमल स्वरमे कहलन्हि।

हम लजाइत पलंग पर बैसि रहलहुँ।

'इम्हर बैसु।' ओ तकिया दिस बैसयकेँ संकेत देलन्हि ।

ओ स्वयं तकियाकेँ सहारा लऽ कऽ बैसल छलथि । हाथमे दारुक गिलास छल। लजाइत हुनकर बगलमे बैसि रहलहुँ। ओ हमरा अपन लग खिंच लेला। किछु देर तक ओ ध्यान पूर्वक हमर चेहरा दिस तकैत रहला। हम नजरि झुकौने हुनकर कुरतामे लागल सोनाक बटन दिस तकैत रहलहुँ। अचानक एक हातसँ ओ हमर मुँह पकरि उपर उठौलन्हि आ दोसर हातमे रहल दारुक गिलास हमरा मुँहसँ लगबैत कहलन्हि , 'लिअ पिबु।'

'जि, हम .... हम.... नहि पिबैत छी।'

'कनी पि लिअ। ठन्ढा बुहत छैक' ओ आग्रह कएलन्हि।

हम अस्वीकार कऽ हुनका तमसाबय नहि चाहैत छलहुँ।

अहि दुआरे दारुक एक घोट हलका सँ निचा उतारि लेलहुँ। मुँहसँ लऽ कऽ गला आ करेज धरि तिख लागल। नहि जानि लोक एतेक अप्रिय गंध आ तिख स्वाद बला दारुकेँ कोना पिब जाइत अछि। हम तऽ एक घोट सेहो बहुत कठिनाइ सँ घोटने छलहुँ हम सोचय लगलहुँ।

ओ पिवैत रहला आ बीचमे १-१ घोट हमरो पियाबैत रहला। गिलास खाली क' ओ टेबुल पर रखलथि आ फेर हात बढा क' नाइट लैंपक स्वीच आन कएलन्हि आ तेज प्रकाश देवयवला बत्ती मिभ्मा देलन्हि। हलका प्रकाश पुरा रुपमे फैल गेल।

हमरा बाहिमे समेट क' ओ हमर मुँह पर झुकि गेलथि। दारुक तेज गन्ध सँ हमर मन केनादन करय लागल, मुदा हम चाहियो क' सेहो नहि हटा सकलहुँ। डनलपक गद्दा जका हमर शरीर जतेक मोलायम छल बरक हात ओतवे कडा। पत्थर जकाँ हुनकर अनुभवी हातक स्पर्श रोमाञ्च देवयकेँ बदला कष्ट द' रहल छल। १/२ बेर हम अपन शरीर झापय चाहैत छलहुँ ओ सनकि क' बजला 'मिडिल क्लासक लडकी कतेक खतम होइत अछि।'

कोनो प्रणय निवेदन नहि, कोनो मान मनोवल नहि, कोनो प्रेमालाप नहि, ओ क्रुरता सँ हमर कौमार्यकेँ कुचलि देला।

'कि मिलिटरी बला एतेक क्रुर होइत अछि?' सिसकैत हम बहुत देर तक सोचैत रहलहुँ।

विवाहकेँ बाद बर एक हप्ता भक्तपुरमे रुकलथि आ ओ पुरे समय अपन मित्र सँ भेटघाट आ विवाहमे आयल अपन कर कुटुम्बके सँग मौज मस्ती करयमे लागल रहला। हमरा संग ओ कडा रुपमे हरेक समय प्रस्तुत होइत छलथि। डलीकेँ भागि जायसँ भेल बेइज्जत आ काकीक ओछ्यपनसँ उत्पन्न पुरा दुख हमरे पर उतारथि।

डली सहित ओ हमर पुरा खनदानकेँ उकटैथि छलथि। हम बुझिए नहि पावि रहल छलहुँ कि दोसरद्वारा कायल गेल गल्तीकेँ सजाय हमरा किया द' रहल अछि। हम त' समृद्ध परिवारक कैप्टन बर पावयकेँ सपनो नहि देखने छलहुँ। यदि डली ठिक समय भागि गेल आ संयोग सँ हमरा बर सँ बान्हि देल गेल। अहिमे हमर कि दोष छल? काकाजी अपन जमायसँ ब्याह क' हमरा खाली हात घर सँ धकेल देलैथि, इहो हुनकेँ निचता छल। हम त' निर्दोष छलहुँ।

यद्यपि हम डलीसँ बेसी सुन्दर आ तेज छलहुँ मुदा हमर सुन्दरता आ प्रथम श्रेणीमे पास करयवला डिग्रीकेँ हुनकर नजरिमे कोनो महत्व नहि छल। कारण हम अभागल जे छलहुँ। हमरा उच्च वर्गमे बैसयकेँ तरिका आ हाय हेल्लो करयकेँ अकिल नहि छल। अबेर रातिमे घर लौटैथ। २/३ पैक दारु चढबैत आ यंत्रचलित जकाँ सभ किछ करैथ, मानु कहि रहल होथि तो हमर अर्धाङ्गनी बनय योग्य नहि छल तखन गला पडि गेल छएँ तोरा निर्वाह करव मजवुर छी।

गरज निकाललाक बाद ओ दोसर दिस मुँह घुमा थोरे देरमे फोफ काटय लगैथ। हम अपन तकिया पर सुतल दुख मनसँ हुनका टुकुर-टुकुर देखैत रहैत छलहुँ। विवाहक बाद तकिया पर माथ राखि क' सुतव ई त' हमर कुमार मन कहियो नहि सोचने छल? प्रियतम केँ बाहिपर माथ राखि हुनकर छातीमे सटि मिठ निन्न सुतव सपना देखने छलहुँ। मुदा एतय कहाँ छल प्रियतमकेँ बाहि? नहि कहियो ओ प्रेमक पहल कएलन्हि आ नहि हमरा पहल कएलाक बाद कोनो उत्साह देखौलन्हि। एके रुममे एके पलंग पर सुतैत छलहुँ हम मुदा अलग-अलग ।

बर जखन कपडा बदलैथ त' हुनकर चौडा छाती आ हष्ट पुष्ट शरीर देख मन रोमाञ्चित भ' उठैत छल। मन होइत छल, हम दौड क' हुनकर छात्तीसँ लागि जाई आ घण्टो हुनकर कसल बाहिमे बन्हल रही, मुदा हमर प्रेम भरल प्रशंसात्मक नजरिकेँ जवावमे एकटा तिरस्कारवला दृष्टि हमरा पर राखि ओ क्रुरता सँ मुँह फेर लैथि। १/२ बेर हम स्वयं निर्लज्ज भ' क' कहलहुँ सेहो की हमरा असगर सुतव नहि निक लगैत अछि।

हम हुनकासंग लपेट क' सुतय चाहैत छी मुदा ओ क्रुरता सँ कहैत छलथि 'अहि प्रकार सुतव स्वास्थ्यक लेल हानिकारक होइत अछि।'

विवाहक एक हप्ता बाद बर अपन नोकरी पर चलि गेला, असगरे। ओहि समयमे ओ कम्बोडियामे नियुक्त छलथि।

नेपाली शान्ति सेनाक जवानकेँ संग हुनका पठाओल गेल छल। ओतय परिवारकेँ संग राखयकेँ प्रश्ने नहि छल। अहि दुआरे हम सासुरेमे रहलहुँ। जाइत काल ओ हमर ननदिकेँ निर्देशन दऽ कऽ गेल रहथि कि ओ उच्च व्यक्ति सभ लग उठय बैसय सिखावथि। निर्देशनसँ हुनकर आशय छल, आधुनिक लडकी जकाँ चालि ढालि राखी। अंग्रेजी माध्यमसँ पढि कऽ अंग्रेजीमे फेल भऽ रहल हमर ननदि हमरा अंग्रेजी सिखावय लगलथि। वर जकाँ हुनकर परिवारक लोक अहाँ सभ मिडिल क्लासक लोक कहि कऽ हरेक समय हमर तिरस्कार करैथि, मानु मध्यमवर्गीय होएब हमरा लेल बहुत अपराध छल। हमर परम्परागत मैथिल संस्कार हुनकर नजरिमे गंवरापन छल। ओना अंधविश्वासी ओ सभ स्वयं रहथि। जहियाधरि वर कम्बोडिया रहलथि, हमर मन हरेक समय कोनो अनिष्टक आशंका सँ डराओल रहैत छल की सासुरकेँ लोक पहिने सीधा मुँह नहि बजैत छथि, यदि युद्धमे वरके किछु भऽ जायत तऽ हमरा हाल बेहाल भऽ जायत। अतएव वरक उमेरक लेल व्रत उपवास करैत छलहुँ, मुदा ओ व्यक्ति सभक मुँहसँ आशिर्वादक दू टुक नहि फुटय।

कम्बोडिया गेलाक बाद वर हमरा नहि कोनो पत्र लिखलन्हि, आ नहि कहियो फोन पर बातचित कएलन्हि। हम स्वयं हुनका कतेको भावना सँ भरल पत्र लिखलहुँ। हुनका बिना मन नहि लगैत अछि राति-राति भरि निन्न नहि अबैत अछि। समय बितबे नहि करैत अछि, एहनेसन लिख मनकेँ व्यथा प्रकट करी। बिना कसुर भऽ कऽ सेहो अनजानमे भेल कोनो गल्तीकेँ लेल क्षमा मंगलहुँ मुदा ओ नहि घमलैथ। घम्बो कोना करितैथ ? हम हुनकर कनियाँ तऽ छलहुँ नहि, हम तऽ हुनकर गलामे फसायल ढोल मात्र छलहुँ, जेकरा मजबुरीमे जिवन भरि हुनका ढोवयकेँ छल।

४ वर्षक बाद हुनक बदली नेपालमे भऽ गेल। आब ओ मेजर बनि गेल छलथि। जतय हुनका बदली कायल गेल छल, ओतय सेहो परिवार राखयकेँ सुविधा नहि छल। हम कहियो नैहरमे तऽ कहियो सासुरमे रहि कऽ समय बिताबि रहल छलहुँ। विवाहक बाद वर एकोबेर जनकपुर नहि अयलथि। हरेक समय भैया हमरा लेबय आबथि आ छोडि जाथि। हम तरसति रहि गेलहुँ वर हमरा लेबयकेँ लेल कहियो नैहर आबथि। हम अपन संगीकेँ एक झलक देखासकी की 'देखु, कतेक स्मार्ट छथि हमर वर।'

वर हमरा सजाय दऽ रहल छल, ओ अपराधकेँ जे हम कएने नहि छलहुँ। प्रेमीक संग भागयकेँ अपराध डली कएने छलथि। मुदा सजाय हमरा।

धीरे-धीरे हम हुनका अपना बना लेब, प्रेम आ सेवासँ हुनकर मन जीत लेब ई सोचि हम बरसो तक नोर बहबैत रहलहुँ मुदा जतेक खुशी करय चाहैत छलहुँ ओ ओतेक दुर रहय केँ कोशिस करथि। वर बहुत स्मार्ट रहथि मुदा हमहुँ ओतेक खराब नहि छलहुँ की वर हमरा निर्वाह नहि कऽ सकैथि। अनन्य सुन्दरि तऽ हम नहि छलहुँ मुदा एतेक आकर्षण अवश्य छल जे हमरा पाबि कोनो पुरुष अपना पर गर्व कऽ सकैत छलथि।

३ सालक बाद वरक बदली हेटौडा भऽ गेल ओतय परिवारकेँ संग राखयके छुट छल। वर बेमन सँ हमरा संग लऽ गेलथि।

हेटौडा अएलाक बाद हम जिजानसँ वरकेँ ध्यान रखलहुँ मुदा हम चाहि कऽ सेहो नहि अपना बना सकलहुँ। यदि विवाहक बादमे हुनका संग रहयकेँ अवसर प्राप्त भेल रहैत तऽ शायद हम हुनका मनावयमे कामयाब भऽ सकैत छलहुँ। मुदा सात वर्षक दुरी हमरा बीच एहन खदिया खुनि देलक जे फेर सँ कतबो भरलासँ नहि भरल। हेटौडा प्रवासक क्रममे हुनकर एक मित्रक कनिया जानकारी देलन्हि की विवाहसँ पहिनहिसँ वरकेँ कानो कर्नलक लडकीसँ चक्कर चलैत अछि अहि दुआरे ओ हमर घास नहि डालैत छथि।

ओ लडकीकेँ लऽ कऽ हम कहियो वर सँ झगडा नहि कयलहुँ, झगडा कएलासँ होवहो बला नहि किछु छल। वर हमरा कनियाँक रुपमे कहियो स्वीकारबे नहि कएने छला तऽ फेर कोन नातासँ झगडितहुँ।

दुःख मनुष्यकेँ समयसँ पहिनहि बुढ बनादैत अछि इ तऽ हम सुन्ने छलहुँ मुदा दुःख मनुष्यकेँ सुन्दरता सेहो समाप्त कऽ दैत अछि, ऐनामे देखैत छी अपने बुझाइत अछि। मुखमुद्रा स्थायी रुपसँ कठोर भऽ गेल अछि। एना देखैत छी तऽ लगैत अछि केकरो दोसरकेँ देख रहल छी। पुरान फोटो देखैत छी तऽ विश्वासे नहि अबैत अछि इ हमर अछि। बरसोकेँ तनाव सहबाक कारण मुँह केहन सँ केहन भऽ गेल अछि। केहन होइत अछि

ओ व्यक्ति जे असगरे रहि कऽ सुखी अछि आ एकटा हम छी जे संगी भेलाक बादो असगरे जीवन यात्रा करैत छी।

अपन मनक दुःख केकरो कहि नहि सकैत छी। एक समृद्ध उच्च खनदानक पुतौह, एक स्मार्ट उच्च सेनाधिकारीक कनियाँ भऽ कऽ यदि हम केकरो सँ कही दुखी छी तऽ लोक हमरा बताहे कहत। वर कर्नल भऽ गेल छथि मुदा हुनकर उच्च पद हमरा रोमाञ्च वा गर्वक अनुभव नहि करैत अछि।

यदि कोनो खरिदार बहिदारक कनियाँ होइतहुँ तऽ ओ हमरा प्रेम आ इज्जत अवश्य करैत। अपन कनियाँ तऽ कहने आ बुझने रहथि। इ उच्च खानदान, ई उच्च पदस्थ स्मार्ट वर, इ विशाल घर, इ विदेशी कार सभ हमर कोन कामक? केकरा कहुँ, केना कहुँ हम कतेक प्यासल छी।

हमर गौरव एखनो अधुरा अछि। शरीर ढल्ला सँ मन नहि ढलैत अछि। विवाहिता आ २ बच्चाक माय भेलाक बादो हम एखनो तक कुमारि छी।

जेकर प्रियतम पत्नीक रुपमे स्वीकारे नहि कएने अछि ओ स्वयमकेँ सोहागिना कोना कहय? बुझयमे नहि अवैत अछि केकरा लेल चुड़ी पहिरु? केकरा लेल माथ पर टिकली सजाऊ? ओ कर्नल महाशयकेँ लेल, जे हमर जिवनभरि बेइज्जत करैत रहल। ओ गुलशन छी हम, जइमे नहि बहार आयल आ ओ नहि कहियो आयत।

शुन्यताक प्रवेश

बाबुजी पटिया पर बैसि पत्रिका पढ़ि रहल छला। माय बहुत बुढ़ नहि छल। करिब ५० सालक छल हैत। घरक गृहस्थी ढोइत–ढोइत जीवनक अनुभव शरीरक हरेक अंग पर देखाय देबय लागल छल। केश पाकि गेल छल । चेहरापर भुरी दुर सँ प्रतित होइत छल। एकटा कोनामे बैसि तरकारी कटैत माय बहुत दुःखी प्रतित भऽ रहल छली। हुनक खोकी बढ़िते जा रहल छल। दुबर-पातर छरहरा शरीर ओहि पर सँ एकटा अपाङ्ग टांग, बाबुजीकेँ रिटायर भेला ७/८ वर्ष भऽ चुकल छल। सरकारी नोकरी कएलाक कारण अराम करब हुनक दिनचर्या बनि चुकल छल। मायकेँ अनेक बेर अपमानित कऽ चुकल छलथि। मुदा माय पर जेना मानु रोइयो टेंढ नहि होइत छल। शायद बाबुजीकेँ भ्केलैत– भ्केलैत आदत जकाँ भऽ गेल छल। ओकरा दूटा बेटी छल दूनुकेँ विवाह भऽ गेल छल। इन्टरमे पढ़ैत बेटा माधव टियुसन पढ़ि जहिना घुमल मायकेँ खोकी ओकरा सँ रहल नहि गेलैक।

'चल माँ तोरा डाक्टर सँ देखा अबियौ।' स्वर ओकर कनि तेज छल। ओ बाबुजीकेँ सुना कऽ सहानभुति लेबय चाहि रहल छल।

'कतय जायकेँ बात भऽ रहल अछि ?'

'बाबुजी मायकेँ खोकी बितल दू महिना सँ बराबर बनल अछि। दबाइ दारु सेहो नहि कऽ रहल अछि।'

बाबुजी कनी तमसा कऽ बजला, 'दबाइ दारु सँ कें रोकने अछि। अपन ध्यान स्वयं नहि रखैत अछि, भोर उठि कऽ जखन देखु तखन ठण्ढा पानि सँ माथ धो कऽ नहा लैत अछि। इहो कोनो उमेर अछि। अहि प्रकारक मजाक करयकेँ। संसार कें तऽ ई देखावयमे आनन्द अबैत अछि केहन पति सँ एकर विवाह भऽ गेल जे ठिक सँ इलाजो नहि करबैत अछि। देखभाल तऽ दुरक बात। '

बातपर जोड़ दैत कहला, की हम जनैत नहि छी इ चालि ओकर बितल ३५ वर्ष सँ भ्केल रहल छी।

मायकेँ आखिमे नोर छलैक आएल।

माधव शब्द पर कनी जोड़ दैत बाजल, 'बाबुजी आब अहाँ कनी भाषण बन्द करु ने..... '

'अच्छा, आब बेटा एतेक बड़का भऽ गेल मायकेँ लेल बाजत, स्वयं नहि बाजल जाइत अछि तऽ बेटाकें मुहँ सँ कहबैत अछि।' ओ तमसा कऽ घर सँ बाहर निकलय लगला।

माधव अपन मायकेँ खसैत स्वास्थ्यकेँ देखि चिन्तित छल, घर सँ बाहर निकलि रहल बाबुजी सँ कहलक 'बाबुजी कनी पैसा दऽ दियौक ने।' ओकर स्वरमे नेहोरा छल।

'पैसा आरे पैसाकेँ कतहुँ गाछ अछि, जे फरैत छैक, रिटायरमेन्टकेँ बाद तऽ अहिना आधा भेटैत अछि तोँ माय बेटाकेँ जखन देखैत छियैक पैसेकेँ लेल कनैत रहैत छेँ।'

माधवकेँ सेहो तामस भऽ गेल 'आब बस करु बाबुजी हमरा पास किछु पैसा अछि, ओहि सँ मायकेँ इलाज करा अबैत छी।'

'पैसा तऽ हमही तोरा देने छियौ ओहे पैसा बचा कऽ रखने छेँ आ शेखी देखबैत छेँ।'

माधव किछु नहि बाजल साइकिल बरण्डामे लगा कऽ भितर चलि आएल आ बाबुजी सड़क दिस।

माय चुपचाप बैसल तरकारी काटि रहल छल।

माधव माय सँ बहुत नेहोरा कएलक चलि कऽ देखा आ।

मुदा ओ राजी नहि भेल।

'किछु नहि भेल अछि माधो। बस कनिक तऽ खोकी भऽ गेल अछि। दबाई तऽ पिबिए रहल छी। किछुवे दिनमे सभ ठिक भऽ जाएत। तोँ एना कर अहि पूर्जीमे लिखल दबाइ आनि कऽ ला अहि सँ अराम भऽ जाएत।'

मुदा दबाइ अनलाक बादो मायकेँ हालतमे कोनो सुधार नहि भेल। आब तऽ बोखार सेहो होवय लागल अछि। पहिने सँ बहुत कमजोर सेहो भऽ गेल अछि।

एक दिन भोर ओछ्यान पर सँ नहि उठल, ओना भोर होइते ओकर काम काज शुरु भऽ जाइत छल। घइल भरब, कपड़ा धोएब, बारीमे सँ तरकारी आनब आदि आदि। मुदा आई ओ बेसुध परल अछि। बाबुजीकें भोरक चाहक जोड़ लागल छन्हि। अंगनामे टहलि रहल छथि। भानस घरमे माय कहियो जायकें अवसरे नहि देने अछि। भानसघरकें प्रति तऽ ओ अनाड़ी छथि। 'मरता क्या नहि करता।' बेर-बेर हुलकी मारलाक बादो माय नहि उठल तऽ मन मारि कऽ घुमय लगला।

'पता नहि आइ की भगेलहुँ अछि तोहर मायकें, एखन तक भानसघर नहि खुजहुँ अछि चल कनि चाह बनबैत छी।'

बाबुजी अहुँ हद करैत छी। माय अहिना नहि सुतल हैत। अवश्य तबियत खराब भेल हेतैक ..... माधव दौड़ते माय लग पहुँचल।

मायकें माथपर हात रखलक तऽ बोखार सँ ओकर देह जरैत छल। खोकी पहिनहि जकाँ यथावत छल। बाबुजी सँ पैसाक लेल कहब व्यर्थ छल। ओ अपन अलमिरा मेसँ पैसा निकालि दौड़ कऽ परोसक एकटा डाक्टरकें देखौलक। डाक्टर देखलक आ एकटा कागज पर किछु लिख माधवकें पकरा देलक।

पहिने सभ टा टेस्ट करा लिय एकर बाद किछु कहल जा सकैत अछि। एक्सरे आ खुनक जाँच जनकपुर जा कऽ करावय परत।

अहिबीच बगलवाली मधुवनीवाली अन्टी घरकें सम्हारि लेलक। मधुवनीवाली अन्टी आ मायकें विवाह एक्के समयमे भेलाक कारण दुनुमे घनिष्टता बहुत छल। जखन मधुवनीवाली अन्टी विधवा भेली तऽ माऐ ओकरा सम्हारने छल।

माधव रिपोर्ट लऽ कऽ साँझमे डाक्टरकें लग गेल। रिपोर्ट देखलाक बाद डाक्टर किछु देर चिन्तित भऽ गेल। किछु देरक बाद संयमित स्वरमे बाजल, 'बेटा जे सोचने छलहुँ ओहु सँ भयंकर बात आगा आएल। हम तऽ बहुत सोचलहुँ मुदा टिबीकें आगा कल्पना नहि कऽ सकलहुँ, मुदा एक्सरे तऽ.....ओ ओतहि रुकि गेल माधवकें चेहरा पर सँ ओ नजर हटा लेलक। माथ झुका कऽ बाजल, 'अन्तिम अवस्थामे अछि ....' आ रुमक गम्भीर माहोलकें साथ ओ सेहो दैत एक्काकार भऽ गेल।

माधवकें उपर जेना ठन्का खसि परल हुए। कहियो दुर दुर तक नहि सोचने छल ओकर माय हरेक समय जीवन आ मृत्युक बीचमे लड़ाइ लड़ि रहल हैत।

डेरायल स्थिति सँ कनिक शान्त होइत ओ डाक्टर साहेब सँ पुछलक 'कोनो उम्मीद?'

'बस भगवाने किछु करता' डाक्टर बाजल।

एक महिना सँ बेसीकें समय ओकरा पास नहि छल। माधव दुखायल मन सँ डाक्टरक कक्ष सँ निकलल, घर पहुँचलाक बाद बाबुजीक अपने राग चलि रहल छल। माय पटिया पर सुति किछु बरबरा रहल छल, रुममे जा मायकें हात पकरि कऽ बैसि रहल।

'बेटा तों आबि गेलाए ? जो भोजन कऽ ले। बाबुजी तोरा लेल केखन सँ परेशान भऽ कऽ घुमि रहल छथुन। भुखले छथुन।'

कनीक रुकि फेर बाजल, 'हमही हुनका आदत बिगारि देने छी। बच्चा जकाँ व्यवहार करैत छथि। भूक तऽ हुनका बर्दास्ते नहि छन्हि।'

'अन्टी भोजन बना कऽ राखि गेल छौक।' माय बजैत जा रहल छल आ ओ सुनैत जा रहल छल। आइ ओ अपन माय सँ बहुत बात करय चाहि रहल छल, पता नहि काल्हि की भऽ जाइक ......।

किछु देरक बाद जखन ओ कनिक शान्त भेल तऽ बाबुजीक रुममे चलि आएल।

'कतह छलाएँ एतेक देर !' कनिक जोर सँ बजला 'बाज कतह छलाहें !'

'डाक्टर लग गेल छलहुँ', बहुत मुश्किल सँ स्वर निकाललक।

'की कहलकहुँ डाक्टर !'

'फेफड़ाक क्यान्सर' आ माथ झुका लेलक जेना कोनो बहुत रास अपराध कएने होउक। बाबुजी शायद नहि बुझला वा बुझियो कऽ अन्जान बनल छला। 'फेफराक क्यान्सर।'

फेर शायद अपने स्वरमे हुनकर तन्द्रा टुटल आ शब्दक गम्भीरताकेँ ज्ञान भेल।

'इलाज !' टुटल स्वरमे पुछलाह।

किछु नहि, अन्तिम समय अछि मात्र भगवाने बचा सकैत अछि।

शायद बिमारीक भयावताह बाबुजीकेँ मन मष्तिस्कमे धीरे–धीरे प्रवेश कऽ रहल छल। भारी मन सँ ओ लेफ्ट राइट करय लगला। जखने ओ टेन्सनमे अबैत छथि तऽ अहिना लेफ्ट राईट करय लगैत छथि। उठि कऽ मायकेँ छुवयके साहस हुनकामे नहि छल। लगेमे राखल एकटा कुर्सीपर पुरे राति बैसल रहला ओहि दिन परिवारमे कियौ नहि खएलक।

भोर जखन माधवकेँ आँखि खुजल तऽ माय सुतल छल मुदा बाबुजीकेँ कतहुँ अता पता नहि छल। उठलाक बाद माय सेहो सभ सँ पहिने बाबुजीक विषयमे पुछलक।

'माय बाबुजी अविते हेता, लगेमे गेल छथि' माधव झुठ बाजल।

माय किछु नहि बाजल।

बाबुजी कपड़ाक दोकानक बाहर बैसल छलाह। भोरे सँ दोकान खोलयकेँ प्रतिक्षामे छलथि। कालि्ह साँझे सँ हुनका भितर एकटा शुन्यता प्रवेश कऽ लेने छल। ओ मायकेँ लेल कहियो पुरा समय नहि देने छलाह अहिकेँ लेल हुनका आत्मग्लानी भऽ रहल छल। बहुत दिन सँ मायकेँ एकटा साड़ी किनबाक इच्छा छल सुन्दर सन कढ़ाइबला। माय अहि सँ आगा कहियो फरमाइस नहि कएने छल।

आ जहिना दोकान खुजल ओ साड़ी लऽ कऽ तेज चाल सँ घर दिस दौड़ला। मायकेँ जाइत साँसक संग चालि तेज करैत गेला, साड़ीकेँ जोड़ सँ पकड़ने छला। कही छुटि नहि जाय। आइ हुनका अनुभव भेल जीवनक आगा सभ बेमोल अछि। मात्र जीवन बहुमुल्य अछि।